

અદ્ભુતનવસ્મરણમ્

: સ્વચિંતા :

પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ

—: ગુર્જરભાષાનુવાદક :—

શેઠ શ્રી જયન્તીલાલ ભોગીલાલભાઈ
આવસાર.



શ્રી લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર, ગાંધીનગર, અમદાવાદ

અન્નુતનવસ્મરણમ્

: રચયિતા :

પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ

—: ગુર્જરભાષાનુવાદક :—

શેઠ શ્રી જયન્તીલાલ મોગીલાલભાઈ
ખાવસાર.



શ્રી લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર, ગાંધીમાર્ગ, અમદાવાદ

પ્રકાશક :

ધનરાજ ધાસીરામ કોઠાર :

શ્રી લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર ગાપામાગ અમદાવાદ.

દ્વિતીય આવૃત્તિ

કિંમત : ૫-૦૦

વીર સંવત ૨૫૦૩

ઈ.સ. ૧૯૭૭

મુદ્રક : જયંતીભાઈ ત્રિપાઠી, કલ્પતરુ મુદ્રણમ
મહારાષ્ટ્રીય વાડી, શાહપુર, અમદાવાદ.

—: भूमिका :—

इस 'अद्भुतनवस्मरण' की रचना पूज्य आचार्य म. श्री १००८ श्री घासीलालजी म. सा. कर्मजनित दुःख-दैन्य आदि से सन्तप्त मानवसमुदाय के दुःखविमुक्ति-निमित्त की है। इस समय भौतिवाद की अंधाधूंधी में मानव-मानस पीडित होकर नितांत संतप्त हो रहा है; अतः मानव मानस की दृढ़ता के लिये मानसिक आलम्बन का होना इस समय बहुत जरूरी है। यह आलम्बन तो सर्वोपरी प्रभुतीर्थङ्कर ही हैं, उन्हीं की आराधना से मनोबल की दृढ़ता प्राप्त कर मानवसमुदाय ऐहिक पारलौकिक सभी प्रकार की सिद्धियां प्राप्त कर सकता है।

इसलिये 'बहुजनहिताय' जो इस अद्भुतनवस्मरण की रचना पूज्यश्री ने की है, उसके स्वाध्याय से भव्य जन दृढ़ मनोबल प्राप्त कर ऐहिक, पारलौकिक सुख के भागी बने, यही हमारी आन्तरिक सद्भावना है।

—प्रकाशक

अथ--विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
नवस्मरणमाहात्म्य	१-२८
१-मङ्गलस्मरण	२८-३६
२-भानन्दस्मरण (वर्धमानभक्तामर)	३७-१०९
३-सुखस्मरण	११०-१२५
४-संपत्स्मरण	१२६-१७५
५-ऋद्धिस्मरण	१७६-२०३
६-सिद्धिस्मरण	२०३-२१८
७-जयस्मरण	२१९-२२४
८-विजयस्मरण	२२५-२३५
९-शान्तिस्मरण	२३६-२७३
भाषास्तुतियाँ	२७४-२८१

॥ श्रीः ॥ °

अद्भुतनवस्मरणस्तोत्र ।

*

वर्धमानं जिनं नत्वा,

नत्वा गौतमनायकम् ।

धासीलालेन मुनिना,

नवस्मरणमुच्यते ॥ १ ॥

मङ्गलाचरण—

(१) जैनशासनना प्रणेता, योवीसमा
तीर्थंकर श्रीवर्धमानजिनेश्वरने नमस्कार करी,
जिनशासननायक, प्रभुना पट्टशिष्य, गणधर
श्री गौतम स्वामीने नमस्कार करीने आचार्य
श्री धासीलालजी महाराज हुवे आपणुने
नवस्मरणनुं भाडात्म्य समजवे छे.

જિનેશ્વર શ્રી વર્ધમાન ભગવાન કો ઔર
ગણનાયક શ્રી ગૌતમસ્વામી કો નમસ્કાર
કરકે શ્રી ધાસીલાલ મુનિ “ નવસ્મરણ ”
કહતે હૈં ॥ ૧ ॥

નવ—નવ—મઙ્ગલ—જનકં,

નવ—નવ—સંમોદ—સન્દોહમ્ ।

નવનિધિ—વિધાનનિપુણં,

ક્રિયતે શુભદં નવસ્મરણમ્ ॥ ૨ ॥

(૨) આ નવસ્મરણ સ્તોત્ર અપૂર્વ,
અવનવા માંગલિકોનો જન્મદાતા છે. અવ-
નવા આનંદ મંગળનો દાતા છે. નવનિધાનના
પ્રાકટ્યમાં અદ્ભુત શક્તિ ધરાવે છે. એવા
શુભફલપ્રદ નવસ્મરણની હવે આપણે
આરાધના શરૂ કરીએ છીએ.

यह नवस्मरण, नवीन नवीन मङ्गलका
जनक है, नवीन नवीन आनन्दराशिका दाता
है, नवनिधियोंके उत्पादनकी अपूर्व शक्तिसे
युक्त है ऐसे अपूर्व प्रभावयुक्त, शुभदायक
इस “नवस्मरण स्तोत्र” की रचना करते
हैं ॥ २ ॥

नमो—भक्त—सुखं संपद, ऋद्धिः सिद्धिर्जयस्तथा ।
विजयश्चापि शान्तिश्च, नवस्मरणमीरितम् ॥ ३ ॥

(३) आ नवस्मरणानुं विवरण नीचे
दर्शाव्या मुख्य छेः—

(१) नवकार (नमस्कार) ३पी भंगण

स्मरण, (२) भक्ताभरूपी आनन्दस्मरण, (३) सुखस्मरण, (४) संपत्स्मरण, (५) सिद्धिस्मरण, (६) सिद्धिस्मरण, (७) जय-स्मरण, (८) विजयस्मरण, (९) शान्ति-स्मरण.

इस “नवस्मरण” में (१) नमस्काररूप मङ्गलस्मरण, (२) भक्ताभरूप आनन्दस्मरण, (३) सुखस्मरण, (४) संपत्स्मरण, (५) ऋद्धि-स्मरण, (६) सिद्धिस्मरण, (७) जयस्मरण, (८) विजयस्मरण और (९) शान्तिस्मरण, इस प्रकार नौ स्मरण हैं ॥ ३ ॥

नवस्मरणमाहात्म्य—

सर्वमैत्रीकरं स्तोत्रं, सर्वथा शान्तिकारकम् ।
सर्वदुःखहरं चैव, सर्वकल्याणकारकम् ४

(४) नवस्मरणणी आराधना सर्व श्रेष्ठ
साथे मैत्री करावनार छे, सर्व रीते शान्ति
उपजवनार छे. सर्व प्रकारनां दुःखो हरनार
छे, तेमज सर्व प्रकारे कल्याणकारक छे.

सभीके साथ मैत्री स्थापित करनेमें सहा-
यक, सभी प्रकारसे शान्ति देनेवाले, सभी
प्रकारके दुःखोंको हरनेवाले और सभीका
कल्याण करनेवाले ये नव स्मरण हैं ॥ ४ ॥

કાસઃ શ્વાસો જ્વરો દાહઃ, કુક્ષિશૂલં ભગન્દરમ્ ।
અર્શોઽજીર્ણ—દૃષ્ટિશૂલં, મૂર્ધશૂલમરોચકઃ ॥ ૫ ॥

અક્ષિશૂલં કર્ણશૂલં,
કષ્ઠરોગો જલોદરમ્ ।

કુષ્ઠં ચ વ્યાધયઃ સર્વે,
વિનશ્યન્તિ ન સંશયઃ ॥ ૬ ॥

(૫) નવસ્મરણની આરાધનાથી ઉંઘરસ,
દમ સહિત શ્વાસોશ્વાસના સર્વ રોગો, તાવ,
શરીરમાં ઉત્પન્ન થતો દાહ, પેટની આંકડી—
આંચકી-ચૂંક, ભગંદર, હરસ-મસા, અજીર્ણ,
દૃષ્ટિશૂળ, મસ્તકશૂળ, અરુચિ જેવા રોગો
તત્કાળ મટે છે તેમાં લેશમાત્ર સંશયને
સ્થાન નથી.

(६) नवस्मरणना प्रभावथी आंभनी
पीडा, काननी पीडा, कंठभाणासहित गणाना
सर्व रोगो, जणोदर, डाढ जेवा सर्व प्रकारना
रोगो नाश पाभे छे तेभां जरा पणु सन्देह
नथी.

इन नव स्मरणोंसे (१) खाँसी, (२) दमा,
(३) ज्वर, (४) दाह-ज्वर, (५) पेटका दर्द,
(६) बवासीर, (७) अजीर्ण, (८) दृष्टि-शूल,
(९) भगन्दर, (१०) मस्तकशूल, (११)
अरुचि, (१२) आंखका दर्द, (१३) कानका
दर्द, (१४) कण्ठमाल, (१५) जलोदर और
(१६) कुष्ठ आदि समस्त व्याधियां नष्ट हो
जाता है, इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं
है ॥ ५-६ ॥

एतत्प्रभावात् सिंहाद्या,
दस्यवो वैरिणस्तथा ।

दूरादेव पलायन्ते,
नवस्मरणधारिणाम् ॥ ७ ॥

ધોરાસુ સર્વબાધાસુ, વેદનાસુ તથૈવ ચ ।
एतस्य पठनादेव, सद्यो मुच्येत संकटात् ॥८॥

(૭) આ નવસ્મરણ ધારણ કરનારને
સિંહ આદિ વિકરાળ પ્રાણીઓ તરફથી, ચીર-
લુટારાઓ તરફથી, તેમજ શત્રુઓ તરફથી
આવતા ઉપસર્ગો [ત્રાસ] આ નવસ્મરણના
પ્રભાવથી સ્પર્શી શકતા નથી અને દૂરથી
ભાંગી જાય છે.

(૮) ચારે બાજુથી ઘેર આફતોનાં વાદળો

ਘੁਟਕਾਯਾਂ ਹੋਯ, ਅਸਥ ਵੇਦਨਾ ਭਿਪਤੀ ਹੋਯ,
 ਤੇਵੇ ਸਮਯੇ ਆ ਨਵ ਸਮਰਥਨੇ ਪਾਠ ਕਰਵਾਥੀ
 ਅੇ ਸਰ੍ਵ ਸਾਂਕਟੋਮਾਂਥੀ ਤੁਰਤ ਅ ਵਿਮੁਕਤ
 ਥਵਾਯ ਏ.

इनके प्रभावसे सिंह आदि भयङ्कर प्राणी,
 चोर-डाकू तथा शत्रुलोग दूरसे ही भाग जाते
 हैं, नवस्मरण धारियोंका ये अणुमात्र भी
 अपकार नहीं कर सकते। सभी प्रकारके भयं
 कर दुःस्वोंमें, सभी प्रकारकी वेदनाओंमें नव-
 स्मरण के पाठमात्रसे ही मनुष्य, उनसे
 तत्काल मुक्त होजाते हैं ॥ ७-८ ॥

पिशाचाद्युपसर्गाश्च,

ग्रहपीडाश्च दारुणाः ।

पाठश्रवणमात्रेण,

विनश्यन्ति नृणां ध्रुवम् ॥ ९ ॥

(६) जे डाई ने भूत, प्रेत, पिशाच आदि तरङ्गथी उपसर्ग [त्रास] थई रह्यो होय, डाईने त्रासदायक ग्रहपीडा नडती होय तो आ नव स्मरणेनो पाठ करवा मात्रथी अने सांखणवा मात्रथी ते मनुष्योनी आवेदी आपत्ति आसरी जे तेमां लेश मात्र शंका ने स्थान नथी.

भूत-पिशाच आदिका उपसर्ग और भय-ङ्कर ग्रहपीडा, इस नवस्मरण के पाठ के श्रवण मात्रसे अवश्यमेव नष्ट होजाती है ॥ ९ ॥

कायिकं वाचिकं पापं,

मानसं चापि दुष्कृतम् ।

દુષ્કૃતોત્થા વિપત્તિશ્ચ,

ક્ષયં યાન્તિ ન સંશયઃ ॥ ૧૦ ॥

(૧૦) તનથી તેમજ વચનથી ઉપાર્જન કરેલાં પાપકર્મો, તેમજ બે લગામપણે વિહરતા મૂકેલા મનના ઘોડાને કારણે મનથી ચિંતવેલ દુષ્કર્મો, તેમજ દુષ્કર્મોથી એકાએક આવી પડેલી આપત્તિ આ નવસ્મરણના પ્રભાવથી નાશ પામે છે તેમાં જરા પણ સંશય રાખવા જવો નથી.

માનસિક, વાચિક और कायिक पाप तथा पापजनित विपत्तियां, इसके पाठ करनेसे तथा श्रवण मात्रसे निस्संदेह नष्ट होजाती हैं ॥ १० ॥

યુદ્ધેષુ વિજયપ્રાપ્તિઃ,

કાનનં નન્દનં વનમ્ ।

દુઃસ્વપ્નશ્ચાપિ સુસ્વપ્નો,

ભવત્યસ્ય પ્રભાવતઃ ॥ ૧૧ ॥

(૧૧) આ નવસ્મરણના પ્રભાવથી રણ-ભૂમિમાં વિજયની વરમાળા પ્રાપ્ત થાય છે, નિર્જન જંગલ નંદનવન સમાન બને છે અને અશુભ સ્વાપ્નાંઓ શુકનવંતાં શુભ સ્વપ્નાંઓમાં પરિણમે છે. આ છે નવસ્મરણનો પ્રભાવ

इस नव स्मरणके प्रभावसे युद्धमें विजय प्राप्त होता है, भयङ्कर वन भी नन्दनवन हो-जाता है और दुःस्वप्न भी सुस्वप्न हो जाता है ॥ ११ ॥

राजद्वारे तथा युद्धे,
सभायां शत्रुसंकटे ।
उत्पाते च विवादे च,

विजयं लभते ध्रुवम् ॥ १२ ॥

(१२) याहे तो आप राजद्वारे हो, या समरभूमि पर हो, सभास्थाने हो या शत्रु-
ओंनी छावणीमां हो, समयं कर उत्पातमां हो
या वादविवादमां हो पण नवस्मरणना प्रभावे
करीने विजय योक्तस तमारो ज छे तेमां देश
मात्र शंकाने स्थान नथी.

राजद्वारमें, युद्धमें, सभामें शत्रुजनित
विपत्तियोंमें, ग्रहादिजनित उत्पातमें और
विवादमें, इस नव स्मरणके प्रभावसे मनुष्यों
को अवश्यमेव विजय प्राप्त होता है ॥१२॥

कान्तारे च महारण्ये,
प्रान्तरे दवसंकुले ।

स्थितश्च शत्रुभिश्चैव,
गृहीतस्तस्करैस्तथा ॥ १३ ॥

(१३) धारो डे डोर्ध धोर निर्जन जेवा
मडा अरण्य[वन]मां अटवाध गया हो, जे
देशोना सिमाडा उपर ईसाध गया हो, लयंकर
दावानणमां सपडाया हो, योर डाकुथी लूटाया
हो तेवे समये नवस्मरणना स्मरणमात्रथी
सर्व संकटोमांथी मुक्त थवाय छे.

दवाग्निसे प्रज्वलित वन, अटबी और
प्रान्तर [दूर तक शून्य मार्ग] में भी इसके

स्मरणमात्रसे रक्षा होती है, शत्रुओं और चोरोंके उपद्रवसे मनुष्य इसके स्मरणमात्रसे मुक्त होजाते हैं ॥ १३ ॥

वृश्चिकैर्भुजगैश्चैव,

सूकरैः क्रोष्टुभिस्तथा ।

सिंहव्याघ्रैः समाक्रान्तो,

वने वाऽरण्यहस्तिभिः ॥ १४ ॥

(१४) वींछी, साप, वकरेलो सुवर तथा शियाणना उपसर्गो आवी पडया होय तेवे समये, तथा डोई अरण्यमां सिंह वाध तथा जंगली हाथी तमारी पाछण साक्षात् काण [भोती]इये पडया होय तेवे समये नवस्मरणनुं स्मरणमात्र अे सर्व संकोटाभांथी छटवानुं साधन छे.

वन में वृश्चिक (विच्छू) सर्प, शूकर, शृगाल, सिंह, व्याघ्र और जंगली हार्थी जिनका पीछा कर रहे हैं ऐसे मनुष्य, इन हिंसक प्राणियोंके संकटसे इसके स्मरणमात्रसे मुक्त हो जाते हैं ॥ १४ ॥

आधूर्णितो महावातैः

स्थितः पोते महार्णवे ।

राजाऽऽज्ञप्तो वधस्थानं,

नीतः कारागृहेऽपि वा ॥ १५ ॥

(१५) धारो डे डोई मानवी लयानड
वावाओडानी आंधीना यक्करमां इसाये। डोय
तेवे सभये, तथा समुद्रपर्यटन दरभ्यान भडा-

સાગરનાં ધૂધવતાં અને તાંડવના હિલોળે ચડેલાં
મોજાં સાક્ષાત્ કાળદેવ[યમરાજ]નાં દર્શન
કરાવતાં હોય તેવે સમયે, તથા રાજની
આજ્ઞાથી કાઠને વધસ્થાને—ફાંસીએ કે જલમાં
લઈ જવાતો હોય તેવે સમયે આ નવસ્મરણનું
સ્મરણ એ માનવીને સર્વ સંકટોમાંથી છૂટ-
વાનું એક માત્ર સાધન છે.

મહાસમુદ્રમાં જો જહાજ પર બેઠે હુણે છે,
और जिनका वह जहाज भयङ्कर आन्धी से
डूब रहा ऐसे मनुष्य इसके स्मरण से उस
आपत्तिसे छूट जाते हैं ॥ तथा जो राजाकी
आज्ञासे वधस्थानमें लाये गये हैं, जो जेलमें
रखे गये हैं, वहां भी इसके स्मरणसे रक्षा होती
है ॥ १५ ॥

पतत्सु चापि शस्त्रेषु,

संग्रामे दारुणे. तथा ।

अस्य स्मरणमात्रेण,

संकटान्मुच्यते नरः ॥ १६ ॥

(१६) भयंकर युद्ध भेदात् रथं होय
अने शत्रुओंनी छावणीओंमांथी अवलोक
शस्त्रोन्मो वरसाद वरसतो होय तेवे समये सर्व
संकटोभां नवरत्नमण्डपं स्मरणमात्र न अल-
यनुं दातार छे.

तथा संग्राममें भयंकर शस्त्रवर्षाके बीचमें
रहे हुए मनुष्य भी इसके स्मरणमात्रसे, उस
संकटसे मुक्त हो जाते हैं ॥ १६ ॥

अशेषानुपसर्गंश्च,

महामारीकृतानपि ।

रोगातङ्कभयं चैव,

समस्तं शमयेद् द्रुतम् ॥ १७ ॥

(१७) आवी पडेला के उपजवेला पधा
 न उपसर्गो—त्रास, भडाभरकीनो लयं कर रोग,
 उपसर्ग अन्त्य अवलेण रोगो आ नवस्मरणना
 स्मरणमात्रथी नलदी शमी नय छे.

शत्रुओं और ग्रहोंसे जनित समस्त उप-
 सर्गोंको, और महामारीकृत उपसर्गोंको, एवं
 रोग और आतङ्क से उत्पन्न समस्त भयोंको
 यह स्तोत्र शीघ्र ही शान्त कर देता है ॥ १७ ॥

उन्मादश्चित्तविक्षेपो,

मूर्च्छाऽपस्मार एव च ।

सद्यश्चैते निवर्तन्ते,

सर्वे स्मरणमात्रतः ॥१८॥

(१८) मननी उन्माद अवस्था, गांड-
पण, यितभ्रमदशा, वार्ध-हिरटीरिया, अने
भूयर्धना रोगो, ये सर्व नवस्मरणना
स्मरणमात्रथी निवारी शक्य छे.

उन्माद, चित्तविक्षेप, मूर्च्छा, अपस्मार,
(मिगी) ये सभी रोग इसके स्मरणमात्रसे
तत्काल ही निवृत्त होजाते हैं १८ ॥

सर्वपापप्रशमनं,

सर्वसिद्धिविधायमम् ।

य इदं कीर्तयेत् स्तोत्रं,

स सुखी सर्वदा भवेत् ॥१९॥

(૧૯) આ નવસ્મરણની આરાધના કરવાથી સઘળાં પાપો શમી જાય છે. નવસ્મરણ સર્વ પ્રકારની સિદ્ધિદાયક છે. જે કોઈ ભવિષ્ય આ સ્તોત્રનું કીર્તન કરશે તે સદૈવ સુખી રહેશે.

સમી પાપોંકો દૂર કરનેવાલે, સમી પ્રકારકી સિદ્ધિયોંકો દેનેવાલે
 इस स्तोत्रका जो मनुष्य पाठ करता है वह सर्वदा सुखी होता है ॥ १९ ॥

अभीष्ट प्राप्नुयात् सर्वं,
 धनार्थी धनसंपदम् ।

अस्य प्रभावात् प्राप्नोति,
 सुखं चात्र परत्र च ॥ २० ॥

(२०) आ स्तोत्रनी आराधनाथी मन-
वांछित इण प्राप्त थशे. जेने धननी अलि-
लाषा ढशे तेने धनसंपत्ति भणशे, आ लोक
तेमज परलोकमां पण सुखनी ज प्राप्ति थशे.

इस स्तोत्रको पढनेवाला अपने सभी
अष्टों [अभीमिलित वस्तुओं] को प्राप्त करता
है । धनार्थी धन पाता है । अधिक क्या कहा
जाय, इसके प्रभावसे मनुष्य इस लोक और
परलोकमें सुख पाता है ॥ २० ॥

यद्गृहे लिखितं स्तोत्रं,

भयं तस्य न जायते ।

तत्रैव सफला संपत् ,

स्थिरा भवति सर्वदा ॥ २१ ॥

(२१) जेना धरमां आ नवस्मरण
स्तोत्रनी आराधना थती हशे त्यांणीक डे भय
डोळियुं पणु करी शकतो नथी. लक्ष्मी भले
यंयल कहेवाती होय छतां आ स्तोत्रना
प्रभावथी आराधकना धरमां सधणी संपत्ति
सदैव अक्षय अने अयलित थई ने रहे छे.

जिसके घरमें हस्तलिखित यह स्तोत्र
रहता है उसे भय नहीं होता है, और उस
घरमें समी प्रकारकी संपत्तियाँ सर्वदा स्थिर
रहती हैं ॥ २१ ॥

मोक्षप्रदं मुमुक्षूणां,
दरिद्राणां निधिप्रदम् ।

स्तोत्रमेतद् व्याधिहरं,

ग्रहाणां शान्तिकारकम् ॥ ६२ ॥

(૨૨) આ સ્તોત્ર જેને મોક્ષની ઇચ્છા હોય તેને મોક્ષપ્રદ એટલે કે મોક્ષની પ્રાપ્તિ કરાવનાર છે. જે ધનરહિત છે તેને ધનની પ્રાપ્તિ કરાવનાર છે જેને કાઈ ખરાબ અહદશા નડતી હોય તેમજ આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિમાંથી પસાર થતો હોય તેને માટે શાંતિનું ધામ છે.

यह स्तोत्र मोक्षामिलाषियोंको मोक्ष देता है, दरिद्रोंको निधि देता है, व्याधियों को दूर करता है और अशुभ ग्रहोंको शान्त करता है ॥ २२ ॥

भेदे राज्ञः प्रजानां च,
दम्पत्योः प्रीतिभेदने ।

गुरौ शिष्ये च संघेषु,
मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥ २३ ॥

(૨૩) રાજા અને પ્રજા વચ્ચે કોઈ મોટા મતભેદ ઊભો થયો હોય તેવે વખતે, પતિ અને પત્ની વચ્ચે હોવી જોઈતી પ્રેમાળતા ને બદલે કડુતા વ્યાપી હોય તેવે સમયે તથા ગુરુ, શિષ્ય અથવા શ્રીસંઘ વચ્ચે ઊંચાં મન થયાં હોય તેવે વખતે આ નવસ્મરણ સ્તોત્ર, એ સધળી કડુતા તોડીને અટૂટ મૈત્રી ઉપજાવનાર ઉત્તમ મિત્રની ગરજ સારે છે.

યહ સ્તોત્ર, રાજા ઓર પ્રજાકે બીચકે મતભેદકો, દંપતીકે પ્રીતિભેદકો, ગુરુ-શિષ્ય કે વૈમનસ્યકો દૂર કરતા હૈ ઓર સંઘમેં અટૂટ મૈત્રીભાવ સ્થાપિત કરતા હૈ ૨૩ ॥

માનોન્નતિર્ભવેલ્લોકે

યશસા પરિવર્ધતે ।

આધિપત્યં ચ લભતે,

સર્વદા સ્તોત્રપાઠકઃ ॥ ૨૪ ॥

(૨૪) આ સ્તોત્રનું પઠન કરનારને
આ લોકમાં માન—મરતબો વધે છે, યશ-કીર્તિ
ખુબ વૃદ્ધિ પામે છે. અને પોતાના હોદ્દા ઉપર
ઉપરીપણું (—ગ્રેડ—અધિપતિપણું) વધે છે.

इस स्तोत्रका नित्य पाठ करनेवाला
सर्वत्र सन्मान पाता है, सर्वत्र उसके यशकी
ख्याति होती है, वह उत्तम आधिपत्यको प्राप्त
करता है ॥ २४ ॥

एतत्प्रभावाद् भव्यानां,

सर्वसौख्यपरम्परा ।

तथा तिष्ठति मेदिन्यां

पुत्रपौत्रादिसंततिः ॥ २५ ॥

(૨૫) આ સ્તોત્રના પ્રભાવથી ભવિ-
જનો સર્વ રીતે સુખેની પરંપરા ભોગવે
છે. અને આ લોકને વિષે પુત્ર, પૌત્રાદિક
ઔષ્ઠિક સુખ પ્રાપ્ત કરે છે.

इस स्तोत्रके प्रभावसे भव्योंको सौख्य
परम्परा प्राप्त होती है, तथा इस स्तोत्रके पढ़ने-
वाले भव्योंकी पुत्र—पौत्रादि सन्तति—परंपरा
सुखसे रहती है ॥ २५ ॥

इहलोके सुखं सिद्धि,

मङ्गलं सर्वसंपदः ।

प्राप्य जीवः परभवे,

मोक्षं वा स्वर्गमाप्नुयात् ॥ २६ ॥

(૨૬) આ સ્તોત્રની આરાધનાથી માનવી

આ લોકમાં સુખ, સમૃદ્ધિ, સિદ્ધિ, માંગલિક પ્રસંગો તથા સર્વ પ્રકારની શુભ સંપત્તિ મેળવે છે. સાથે સાથે પરભવને વિષે મોક્ષ-પદ અગર છેવટે સ્વર્ગલોક તો પામે છે જ.

इसके स्मरण से जीव इस लोक में सुख, सिद्धि, मङ्गल और सभी संपदाओंको प्राप्तकर परभव में मोक्ष अथवा देवलोक पाता है ॥ २६ ॥

॥ इति नवस्मरणमाहात्म्य ॥

*

(૧)—નમસ્કારરૂપ પ્રથમ મંજ્જલસ્મરણ ।

(૧) नमो अरिहंताणं, (२) नमो सिद्धाणं,

- (૩) નમો આયરિયાળં, (૪) નમો ઉવજ્ઞાયાળં,
(૫) નમો લોણ સન્વસાહૂળં ।

જણે રાગ દ્વેષ આદિ આત્માના અઢારે શત્રુઓને હણ્યા છે, એવા અરિહંત પ્રભુને નમસ્કાર હજો. (૨) જ્યો આત્માનાં સર્વ કર્મ ખપાવી, સકળ કાર્ય સિદ્ધ કરી, અચળ સિદ્ધપદને પામ્યા છે તેવા સિદ્ધ પરમાત્માને નમસ્કાર હજો. (૩) શ્રી આચાર્યજીને નમસ્કાર હજો. (૪) શ્રી ઉપાધ્યાયજીને નમસ્કાર હજો. (૫) લોકને વિષે વિચરતા સર્વ સાધુ, સાધ્વીજીઓને નમસ્કાર હજો.

આ પાંચ નવકાર (નમસ્કાર) સર્વ

પાપોને નાશ કરનાર છે. અને સર્વ માંગલિકા-
માં સર્વ પ્રથમ ક્ષાત્રું મંગળ છે.

શ્રી ૧ અરિહન્ત મગવાનકો નમસ્કાર
હો । ૨ શ્રી સિદ્ધ મગવાનકો નમસ્કાર હો ।
૩ આચાર્યકો નમસ્કાર હો । ૪ ઉપાધ્યાયકો
નમસ્કાર હો । ૫ લોક મેં વર્તમાન સર્વ સાધુ-
મુનિરાજકો નમસ્કાર હો ।

એસો પંચનમુક્કારો,

સવ્વાપાવપ્પણાસણો ।

મંગલાણં ચ સવ્વેસિ,

પદ્મં હબ્ધ મંગલં ॥૧॥

॥ ૧ ॥ જમ ચારિત્રની બાબતમાં યથા-
પ્પાત નામત્રું ચારિત્ર પ્રથમ ક્ષાત્રું છે, સર્વ

विजयोमां, कर्मक्षी शत्रुयो उपर भेजवेतो
विजय (अरिहंतपथु) श्रेष्ठ छे, तेम सर्व
मंत्रोमां पंच परमेष्ठिनो नवकार मंत्र श्रेष्ठ छे.

यह पञ्चनमस्कार सभी पापोंका नाशक
है, और सभी मङ्गलो में प्रधान मङ्गल है ।
चारित्रेषु यथाख्यातं, जयेषु कर्मणां जयः ।

परमेष्ठिनमस्कारस्तथा मंत्रेषु विद्यते ॥१॥

जैसे चारित्रों में यथाख्यात चारित्र और
जयों में कर्म जय मुख्य है, वैसे ही मन्त्रों में
पंच परमेष्ठि नमस्कार मन्त्र मुख्य है ॥१॥

गोत्रेषु तीर्थकृद्गोत्रं,

यथा गन्धेषु चन्दनम् ।

परमेष्ठिनमस्कार,

स्तथा मंत्रेषु विद्यते ॥ २ ॥

॥૨॥ ગોત્રની બાબતમાં જન્મ તીર્થ કર
ગોત્ર શ્રેષ્ઠ ગણાય છે, સુવાસમાં જન્મ ચંદ-
નની સુગંધિ ઉત્તમ ગણાય છે તેવી રીતે
સર્વ પ્રકારના મંત્રોમાં નવકારમંત્ર પ્રથમ
કક્ષાનો મંત્ર છે.

जैसे गौत्रों में तीर्थङ्कर गोत्र श्रेष्ठ है
गधनों चन्दन श्रेष्ठ है, वैसे ही मन्त्रों में,
पञ्चपरमैष्ठि नमस्कार श्रेष्ठ है ॥ २ ॥

एव पञ्चनमस्कारः,

सर्वपापप्रणाशनः ।

एतादृशा जगत्यस्मिन् ,

मन्त्रः कोऽपि न विद्यते ॥ ३ ॥

॥૩॥ આ પાંચ નવકાર(નમસ્કાર) સર્વ

પાપ પુંજનો નાશ કરનાર છે અને સર્વ માંગ-
લિકોમાં પ્રથમ ક્ષાન્તું મંગળ છે.

यह पञ्च नमस्कार सभी पापोंका विना-
शक है। इस जगत् में इसके समान दूसरा
कोई मन्त्र नहीं है ॥ ३ ॥

यशःकीर्तिं बलं लक्ष्मीं,
विविधं च महोत्सवम् ।
नवं नवं प्रमोदं च,

लभते नात्र संशयः ॥ ४ ॥

॥૪॥ નવકાર મંત્રના પ્રભાવે કરીને
આરાધક યશ, કીર્તિ, સશક્તતા, લક્ષ્મી તથા
આનંદ મંગળ વરતાય તેવા વિધિ પ્રકારના
શુભ અવસરના મહોત્સવો, અવનવા આનંદ
પ્રમોદ મેળવે છે તેમાં કોઈ સંદેહ નથી.

इस मन्त्रको जपने वाले भव्योंको यश,
कीर्ति, बल, लक्ष्मी, अनेक प्रकारके महोत्सव
और नवीन नवीन आनन्द निस्संदेह प्राप्त
होते हैं ॥ ४ ॥

नवलक्षजपादस्य,

षट्षष्टिलक्षयोनिकाः ।

क्षपयेन्मानवः शुद्ध-

स्ततो याति परां गतिम् ॥ ५ ॥

॥५॥ नवकार मंत्रना नव लाभ अप
शुद्ध भावे रटणु करनार आराधकने छसठ
(६६) लाभ, अतरती कक्षानी योनिमां जन्म-
भरणना कैरा करवा पडता नथी पणु परम
उच्य गतिने पाभे छे.

इस नमस्कार मन्त्रके नौलाख जाप जपने से मनुष्य छियासठ लाख योनियोंको खपाकर शुद्ध हो जाता है, और परम गतिको प्राप्त करता है ॥ ५ ॥

अष्टकोट्यष्टलक्षाणि,
सहस्राष्टकमेव च ।

अष्टोत्तरं चाष्टशतं,
जपित्वा तीर्थकृद् भवेत् ॥ ६ ॥

॥ ६ ॥ जे आराधक नवकार मंत्रना आठ करोड, आठ लाख, आठ हजार, आठसौ आठ वषत जप करे छे ते अष्ट अष्ट तीर्थ-कर गोत्र उपार्जन करे छे.

आठ करोड, आठ लाख, आठ हजार, आठ सौ आठ (८८८८८८८) बार जप करके मनुष्य तीर्थकर गोत्र बाँधता है ॥ ६ ॥

एनं संस्मृत्य भावेन,

यत्र यत्रैव गच्छति ।

तत्र तत्र भवेत् सिद्धिः,

सर्वाभोष्ट—पदार्थगा ॥ ७ ॥

॥७॥ જે આરાધક આવી રીતે શુદ્ધ ભાવથી નવકાર મંત્રનું સંસ્મરણ કરે છે, તે જ્યાં જ્યાં જાય છે ત્યાં ત્યાં મનવાંચિત ફળ દેનારી સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરે છે.

इस नमस्कार मन्त्रको भावपूर्वक स्मरण करके मनुष्य, जहाँ जहाँ जाता है वहाँ वहाँ उसके सभी अभिलषित वस्तुओंकी सिद्धि होती है ॥ ७ ॥

પ્રથમ મંગલ સ્મરણ સમાપ્ત

॥ इति नमस्कार रूप मङ्गल स्मरण ॥

૨—શ્રી વર્ધમાનમક્તામરસ્તોત્રમ્

આનન્દ સ્મરણ—

મક્તામર—પ્રવર—મૌલિ—મણિ—વ્રજેષુ,

જ્યોતિઃ—પ્રભૂત—સલિલેષુ સરોવરેષુ ।

ચેતોલિ—મંજુ—વિકસત્કમલાયમાનં,

શ્રી—વર્દ્ધમાન—ચરણં શરણં વ્રજામિ ॥૧॥

(૧) ભક્તિના ઉત્કર્ષ ભાવથી નમસ્કાર કરવા લગી પડેલા, દેવોના મસ્તકોના મુગટ-મણિમાંથી ઉત્પન્ન થતા જાણે કે જ્યોતિર્ણી સરોવરો છે, તે સરોવરોમાં જ્યોતિર્ણી જલ ભરેલું છે. તેમાં પ્રભુનાં ચરણ પંચવર્ણી કમળ-વન સમાન શોભે છે અને ભવ્ય જીવોના ભ્રમર-રૂપી મનને આકર્ષે છે, તેવા શ્રી મહાવીર સ્વામીના ચરણોનું શરણ હું ગ્રહું છું.

भक्तिके उत्कृष्ट भावसे नमस्कार करने के लिये झुके हुए देवोंके मस्तकोंके मुकुटोंमें जड़े हुए मणियोंके समूहरूपी सरोवर हैं, उन मणिरूपी सरोवरोंमें मणियोंकी ज्योतिरूप जल भरा हुआ है। उनमें प्रभुके चरण पञ्चवर्ण कमलवनके समान शोभित हो रहे हैं और वे भव्य जीवोंके मनरूपी भ्रमरोंको आकृष्ट कर रहे हैं, ऐसे श्री महावीर स्वामीके चरणोंका शरण लेता हूँ ॥ १ ॥

आनन्द-नन्दन-वनं सवनं सुखानां,

सद् भावनं शिव पदस्य परं निदानम् ।

संसार पार-करणं करणं गुणानां,

नाथ ! त्वदीय-चरणं शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥

(૨) હે નાથ ! આપના ચરણો આનં-
દનું નંદનવન છે, સદ્ભાવ ઉત્પન્ન કરનાર
અને મોક્ષપદ આપનાર છે, સંસારસાગર
તારનાર સમ્યક્ જ્ઞાનાદિ અનેક ગુણોનો
ભંડાર છે એવા હે નાથ ! આપનાં ચરણનું
હું શરણ લઉં છું.

હે નાથ ! आपके चरण, आनन्दके नन्दन-
वन हैं, सद्भाव उत्पन्न करनेवाले और मोक्ष-
पद देनेवाले हैं, संसारसागरसे पार उतारने
वाले हैं और सम्यग्ज्ञानादि अनेक गुणोंके
भंडार हैं । हे नाथ ! आपके शरणागतवत्सल
इन चरणोंका शरण में लेता हूँ ॥ २ ॥

सिद्धौषधं सकल-सिद्धि-पदं समृद्धं

शुद्धं विशुद्ध-सुखदं च गुणैः समिद्धम् ।

ज्ञानप्रदं शरणदं विगता-घ-वृन्दं,

ध्यानास्पदं शिवपदं शिवदं प्रणौमि ॥३॥

(३) हे प्रभु ! आपना चरणो, कर्मरूपी रोग भाटे सिद्ध औषध छे. शुद्ध अव्याबाध सुखादि आत्मिक गुणोथी उज्जवल छे. आप ज्ञाननो प्रकाश करनार, अभयना देनेार शांतिना धाम छे, जेवा ध्यानना आधारभूत वीरप्रभुना चरणुने हुं वारंवार प्रणाम करुं छुं.

हे प्रभु ! आपके चरण, कर्मरूपी रोगके लिये सिद्ध औषध हैं, शुद्ध हैं, अव्याबाध आत्मिक सुखादिको देने वाले हैं, शुभ लक्षण रूप गणोंसे उज्जवल हैं, ज्ञान एवं अभयके दायक और विघ्नोंके दूर करने वाले हैं. ऐसे

ધ્યાન કે આધારભૂત, કલ્યાણપ્રદ આપકે
મંગ્ગલમય ચરણોંકો મેં વારંવાર નમસ્કાર
કરતા હૂં ॥ ૩ ॥

બાલો વિવેક વિકલો નિજ-બાલ-ભાવા-

દાકાશ-માન-મપિ કર્તુમિવ પ્રવૃત્તઃ ।

જ્ઞાના-ચનન્ત-ગુણ-વર્ણ ન-કર્તુ-કામઃ,

કામં ભવામિ કરુણાકર । તે પુરસ્તાત્ ॥૪॥

(૪) જેમ બાળક બાલભાવે ક્રૂરતું વિવેક
વિના આકાશને માપી લેવા તૈયાર થાય છે,
તેમ આપની આગળ આપના જ્ઞાનાદિ અનંત
ગુણોનું જ્ઞાન કરવા, હું તત્પર થયો છું, તે
મને ક્ષમા કરજો, પ્રભુ !

जैसे अव्यक्तज्ञान से रहित बालक अपने बाल भावके कारण कूदता हुआ आकाशको भी मापनेके लिये तैयार हो जाता है, उसी प्रकार हे प्रभु ! आपके आगे आपके ज्ञानादि अनन्त गुणोंके गान करनेके लिये मैं तत्पर हुआ हूँ । हे करुणाकर ! मेरी धृष्टताको आप क्षमा करना ॥ ४ ॥

स्पर्शो मणिर्नयति चेन्निज-संनिधानात्-

लोहं हिरण्य-पदवी-मिति नात्र चित्रम् ।,

किन्तु त्वदीय-मनुचिन्तन-मेव दूरात्,

साम्यं तनोति तव सिद्धिपदे स्थितस्य ॥ ५ ॥

(५) जेम पारमभणिना स्पर्शस्थी लोभं उ
सोनुं अने छे तेमां आश्चर्य नथी. पणु आप

ધણે દૂર છે. છતાં આપનું ધ્યાન ધરવા માત્ર-
થી જીવ આપ સમાન બને છે તે ખરેખર
આશ્ચર્ય છે.

પારસમણિ તો અપને સ્પર્શ સે લોહેકો
સોના બનાતા હૈ પરન્તુ ઉસ લોહેકો પારસમણિ
નહીં બના સકતા, પરન્તુ, હે પ્રભુ ! આપ તો
બહુત દૂર (મોક્ષમેં) હોતે હુણ મી આપકે
ધ્યાનમાત્ર સે જીવ આપકે સમાન હો જાતા
હૈ યહ અવશ્ય આશ્ચર્ય હૈ ॥ ૫ ॥

कुन्देन्दु-हार रमणीय-गुणान् जिनेन्द्र !,
वक्तुं न पारयति कोपि कदापि लोके
कः स्यात् समस्त-भुवन-स्थित जीव-राशे-
रेकैक-जीवगणनाकरणे समर्थः ? ॥ ६ ॥

(६) हे प्रभु ! जेभ समस्त लोकना अनंत जव राशिनी ऐक ऐक जव करीने संख्यानी गणतरी करवा कोई शक्तिमान नथी, तेभ आपना कुन्दपुष्प, चन्द्र अने मोती समान निर्मल गुणुनुं वर्णन करवा कोई समर्थ नथी.

हे प्रभु ! जैसे समस्त लोकके अनन्त जीव राशिकी, एक एक जीव करके गणना करनेमें कोई समर्थ नहीं है, उसी प्रकार आपके कुन्दपुष्पके समान उज्ज्वल, चन्द्र के समान निर्मल, और मोतियोंके हारके समान स्वच्छ गुणोंके वर्णन करने में कोई भी समर्थ नहीं है ॥ ६ ॥

શક્ત્યા વિનાપિ મુનિનાથ ભવદ્ગુણાનાં

ગાને સમુદ્યત—મતિર્નહિ લજ્જિતોઽસ્મિ ।

માર્ગેણ યેન ગરુડસ્ય ગતિઃ પ્રસિદ્ધા,

તેનૈવ કિં ન વિહગસ્ય શિશુઃ પ્રયાતિ ? ૭

(૭) હે મુનીશ્વર ! આપના ગુણોનું વર્ણન કરવા હું શક્તિહીન છું, છતાં ઉદ્ધમ-
વાંત થાઉં છું તેની શરમ મને નથી. કારણ
જે માર્ગે પક્ષીરાજ ગરુડ ઊડે છે તે માર્ગે પક્ષી
નું બચ્ચું શું નથી જતું ? અર્થાત્—એ જ
માર્ગે ઊડવાનો પ્રયત્ન કરે છે.

હે મુનિનાથ ! आपके गुणोंके वर्णन करने
में मैं समर्थ नहीं हूँ, तो भी इसके लिये
उद्यत हो रहा हूँ, इस में मुझे लज्जा नहीं है

क्यों कि जिस मार्ग से पक्षिराज गरुड़ उड़ता है उस मार्ग से क्या पक्षीका बच्चा नहीं उड़ता ? अर्थात् उसी मार्ग से उड़ता है ॥७॥

त्वद्वाक्सुधासुरुचिरेव विभो ! बलान्मां,

वक्तुं प्रवर्त्तयति नाथ ! भवद्गुणानाम् ।

यद् वर्द्धते जलनिधिस्तरलैस्तरंगै—,

स्तत्रास्ति चन्द्रकिरणोदय एव हेतुः ॥८॥

(८) जेभ पूणिमाने दिवसे उगता चंद्र-
नां किरणाना प्रभावथी समुद्रना चंचल
तरंगो उछणे छे तेभ, हे प्रभु ! आपनी
अमृतमय वाणी, आपना ज्ञानादि निर्मल
गुणानुं वर्णन करवा अणथी मने प्रेरे छे.

जैसे पूर्णिमाके दिन उगते हुए चन्द्रमा

की किरणोंके प्रभाव से समुद्रकी चञ्चल तरङ्गे
 ऊछलने लगती है, उसी प्रकार, हे प्रभु !
 आपकी अमृतमयी वाणी, आपके ज्ञानादि
 गुणोंके वर्णन करनेके लिये मुझे, बलपूर्वक
 प्रेरित करती है ॥८॥

अज्ञान—मोह—निकरं भगवन् ! हृदिस्थं,

हर्तुं प्रभु प्रवचनं भवदीयमेव ।

गाढं स्थिरं चिरतरं तिमिरं दरीस्थं,

हर्तुं प्रभुः सुरुचिरा रुचिरेव नान्यत् ॥९॥

(८) जेम लांभा वप्पतथी शुक्ष्मां जमेस
 अंधकारने दूर करवा भणिना प्रकाश सिवाय
 भीजे उपाय नहीं, तेम हे भगवान ! अनादि
 काणथी हृदयमां रहेस अज्ञान मोह—समूह—

ना आवरणरूपी अंधकारने दूर करना
आपना प्रवचनरूपी प्रकाश मात्र एक ही
समर्थ छे.

जैसे बहुतकाल से गुफा में स्थित अन्ध-
कारको दूर करनेके लिये मणिके प्रकाशके
अतिरिक्त कोई दूसरा साधन नहीं है, उसी
प्रकार हे भगवान् ! अनादिकाल से हृदय में
स्थित अज्ञान और मोहके समूह्रूप आवरण
जनित गाढ अन्धकारको दूर करने में आपके
प्रवचनरूपी प्रकाश ही एक समर्थ है ॥९॥
वाक्यं प्रमाण—नय—रीति—गुणै—र्विहीनं,

निर्भूषणं यदपि बोधिद ! मामकीनम् ।
स्यादेव देव—नर—लोक—हिताय युष्मत्—

संगाद् यथा भवति शुक्ति—गतो—दबिन्दुः १०

(૧૦) હેતરણુતારણુ નાથ ! મારું કથન ગુણના પ્રભાવ આદિથી શૂન્ય છે. છતાં તે કથન દ્વારા આપના અનુપમ નિર્મળ ગુણો ગવાતા હોવાથી જેમ સ્વાતિ નક્ષત્રમાં પાણીનું બિન્દુ છીપમાં પડવાથી મોતી બને છે, તેમ મારું કથન આપના પ્રભાવશાળી નામ અને ગુણોના સુયોગે કરીને આ લોક અને પરલોકમાં દેવ અને મનુષ્યને કલ્યાણનું સાધન થશે.

हे बोधिदाता भगवन्, मेरी वाणी यद्यपि प्रमाण, नय, काव्यरीति और काव्यगुणों से रहित होनेके कारण अलङ्कार रहित है तो भी उस वाणीका प्रयोग मैंने आपकी स्तुतिके निमित्त किया है, अत एव वह देव और मनुष्य

આદિ સમી પ્રાણિયોંકે લિયે અવશ્ય હિતકારક
બનેગી, ઇસમેં કુછ મી સન્દેહ નહીં હૈ, જૈસે
કિ સ્વાતિ નક્ષત્રમેં તુચ્છ મી પાનીકી બૂંદ
સીપ મેં પડને સે મોતી બન જાતી હૈ ॥૧૦॥

આસ્તાં તવ સ્તુતિ-કથા મનસો-પ્યગમ્યા,
નામાપિ તે ત્વયિ પરં કુરુતે-નુરાગમ્ ।
જમ્બીર-મસ્તુ સ્વલુ દૂરતરેપિ દેવ !
નામાપિ તસ્ય કુરુતે રસનાં રસાલામ્ ॥૧૧॥

(૧૧) હે પ્રભુ ! જમ દૂર પડેલ લીંબુ,
માત્ર યાદ કરવાથી મોઢામાં પાણી લાવે છે,
અને તેના રસનો સ્વાદ કરાવે છે, તેમ
આપના કલ્યાણકારી નામનો જાપ કરનારના

हृदयमां आपना नामनुं उच्चारण, आपना
अपूर्व महिमावान गुणोनी भक्तिनो आवरस
उत्पन्न करे छे.

हे प्रमु ! जैसे दूर पडा हुआ भी नींबू
मात्र स्मरण करने से मुँह में पानी लाता है
और अपने रसका स्वाद कराता है, उसी प्रकार
आपके कल्याणकारी नामका जप करने वालेके
हृदय में, आपके नामका उच्चारण आपके
अपूर्व महिमायुक्त गुणों के प्रति भक्तिभाव
का रस उत्पन्न करता है ॥११॥

नाना-मणि-प्रचुर-कांचन-रत्न-रम्यं,
स्वीयं प्रयच्छति पदं जनकः सुताय !

त्वद्-ध्यान-मेव जिनदेव ! पदं त्वदीयं,
भव्याय नित्य-सुखदं प्रकटी-करोति ॥१२॥

(૧૨) પિતા પોતાના પુત્રને મણિ, રત્ન, સુવર્ણ વગેરે મૂલ્યવાન ધન—સંપત્તિનો વારસો આપે છે, જે નાશવંત છે. પણ હે જિનેન્દ્ર ભગવાન ! તેના કરતાં તો ભવ્ય જિનોને આપનું ધ્યાન, નિત્ય સુખદાયી, અવિનાશી મોક્ષ પદ આપે છે જે એક માત્ર શાશ્વત છે.

પિતા અપને પુત્રકો મણિ, રત્ન, સુવર્ણ આદિ મૂલ્યવાન ધનસમ્પત્તિ સે યુક્ત અપના પદ દેતા હૈ અર્થાત્ અપના અધિકારી બનાતા હૈ, પરન્તુ હે જિનેશ્વર ! આપકા ધ્યાન તો ભવ્ય જીવોંકો નિત્ય સુખદાયી અવિનાશી મોક્ષપદ દેતા હૈ જો કિ અવિનશ્વર હોનેકે કારણ શાશ્વત હૈ । અતઃ એવ હે ભગવન્ ! પિતાકે દ્વારા દી ગયી

સમ્પત્તિકી અપેક્ષા આપકે ધ્યાનકે દ્વારા દી
ગયી સમ્પત્તિ અનન્તગુણ બહુ મૂલ્ય હૈ ॥૧૨॥

જ્ઞાના-અનન્ત-ગુણ-ગૌરવપૂર્ણ-સિન્ધુ,

બન્ધુ ભવન્ત-મપહાય પરં ક ઇચ્છેત ? ।

પ્રાજ્યં પ્રલમ્બ્ય ભુવન-ત્રિતયસ્ય રાજ્યં,

કઃ કામયેત કિલ કિંકરતાત્મબુદ્ધિઃ ॥૧૩॥

(૧૩) હે પ્રભુ ! આપ જ્ઞાનાદિ અનંત

ગુણોના સમુદ્ર છો, સંસારના અ શરણ જીવોને

શરણરૂપ છો, દયાના સાગર છો, બાન્ધવ-

હીનના બંધુ છો, એવા આપનું શરણ છોડી

કોણ બીજાને ઇચ્છે ? કારણ કોણ એવો મૂર્ખ

હોય કે જે ત્રિભુવનનું રાજ્ય પ્રાપ્ત કર્યા

છતાંયે તે ત્યજ દાસત્વની ઇચ્છા કરે ? અર્થાત્

કોઈ ન કરે.

हे प्रभु ! आप ज्ञानादि अनन्त गुणोंके समुद्र हैं, संसारके अशरण जीवोंके शरणरूप हैं ! दयाके सिन्धु हैं, जगत्के निष्कारण बन्धु हैं, ऐसे आपको छोड़कर दूसरे की चाहना कौन करे ? क्योंकि कौन ऐसा मूर्ख होगा कि जो त्रिभुवनका राज्य मिलने पर भी उसको छोड़कर दासताकी इच्छा करे ? अर्थात् कोई भी इच्छा नहीं कर सकता है ॥१३॥

त्वद्—गात्रता—परिणताः परमाणवोऽपि,

सर्वोत्तमा निरुपमाः सुषमा भवन्ति ।

लब्ध्वा शरण्य ! शरणं चरणं जनास्ते,

सिद्धा भवेयुरिति नाथ ! किमत्र चित्रम् ॥१४॥

(૧૪) હે જિનેન્દ્ર ! આપના શરીરપણે પરિણમેલા જડ પરમાણુઓ પણ સુંદર સર્વોત્તમ થઈ સુખ શાંતિદાયક ઠર્યા છે; તો પછી હે પ્રભુ ! કોઈ પુરુષ આપના ચરણનું શરણ મેળવી સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત કરે તેમાં શું આશ્ચર્ય છે ?

હે જિનેન્દ્ર ! आपके शरीररूप में परिणत हुए जड परमाणु भी सुन्दर एवं सर्वोत्तम शोभाशाली बन जाते हैं, तो फिर हे प्रभु ! कोई पुरुष आपके चरणोंका शरण गहकर सिद्ध पदको प्राप्त करे उस में क्या आश्चर्य ॥१४॥

कश्चंडकौशिक-समं भव—सिन्धुपारं,

नेता सुदर्शन—समं च जगत्त्रयेपि ।

हे नाथ ! तत् कमय ते चरणाम्बुजस्य,

येनोपमा गुणलवेन घटेत लोके ॥१५॥

(१५) चण्डकौशिक जेवा परम भेरी,
दृष्टिविष सर्प जेवा अधमने अने शीलवन्ता
सुदर्शन शेठ जेवा उत्तमने, समभावथी भव-
सिन्धु पार करानार आप सिवाय अन्य
कोई नथी. तो पछी हे नाथ ! क्या करी आप
ज को छोड़ के कुछ वस्तुथी आपना यरण-
कुमलनी उपमा आपी शक्य ?

विषय विषवाले, दृष्टिविष चण्डकौशिक
सर्प जैसे अधमको, और सुदर्शनशेठ जैसे शील-
वान् उत्तम पुरुषको भेदभाव विना समरूप से
भवसिन्धु पार करानेवाला आपके अतिरिक्त

દુસરા કોઈ નહીં હૈ । તો ફિર હે નાથ ! આપ
હી કહેં કિ આપકે ચરણકમલોંકી ઉપમા
કિસ વસ્તુ સે દી જાય ? ॥૧૫॥

લોકોત્તરં સકલમંગલ—મોદ—કન્દં,

સ્યન્દં વચો—મૃત રસસ્ય જગત્યમન્દમ્ ।

સ્વર્ગા—પવર્ગા—સુખદં ભવ—દાસ્ય—ચન્દં,

દષ્ટ્વા મુદં મજતિ મવ્ય—ચકોર—વૃન્દમ્ ॥

(૧૬) હે પ્રભુ ! સર્વ લોકમાં ઉત્તમ તથા
સર્વ રીતે મંગલકારી એવું આપનું મુખરૂપી
ચંદ્રમંડળ, આનંદ મંગળના ધામ સભો-
સરણમાં દેશના પ્રવચનરૂપી અમૃતરસનો
જેમાંથી ઝરે વહે છે તેવું મુક્તિધામ
આપનારું મુખચંદ્ર જોઈ ચકોર પક્ષી જેવા
અવ્ય—જીવસમૂહો સદા હર્ષ પામે છે.

हे प्रभु ! सभी लोकों में उत्तम तथा सभी प्रकार से मङ्गलकारी और आनन्ददायक ऐसा आपका मुखरूपी चन्द्र मण्डल कि जिसमें से आनन्द मङ्गलके धाम समवरण में देशना रूपी अमृतरसका झरना झरता है । देवलोक और मोक्षके सुखको देनेवाले ऐसे आपके मुख-चन्द्रको देखकर चकोर पक्षीरूपी भव्य जीव सर्वदा आनन्दमग्न होते हैं ॥ १६ ॥

आन्त्यापि भद्र-मुदितं भवदीय-नाम,

सिद्धे-र्विधायि भगवन् ! सुकृतानि सूते ।

अज्ञानतोऽपि पतितं सितखंड-खंडम्,

धत्ते मुखे मधुरिमाण-मखंड-मेव ॥ १७ ॥

(१७) जेम अजणुपणु पणु मोढाभां

નાખેલા સાકરના ગાંગડાની મીઠાશ જીભ ઉપર કાયમ રહી જાય છે. તેમ હે પ્રભુ ! આપનું કલ્યાણકારી નામ ભૂલથી પણ કાઠ લે તો તે સુખ, સંપત્તિ અને સાચું પુણ્ય મેળવે છે.

जैसे अनजान में भी मुंह में पड़ा हुआ मिसरीका टुकड़ा अखंड मीठास को देता है अर्थात् संपूर्ण मुहको मीठा बना देता है, उसी प्रकार हे प्रभु ! कल्याणकारी आपके नामका उच्चारण यदि कोई भूल से भी करे तो वह सुख, सम्पत्ति और पुण्यको उत्पन्न करता है, इस में सन्देहकी कोई संभावना नहीं ॥१७॥

यो मस्तकं नमयते जिन ! तं ऽघ्नિपद्मे,

सर्वर्द्धि—सिद्धि—निचयः श्रयते तमेव ।

તીર્થંકરઃ શુભકરઃ પ્રવિભૂય સોયં,

સ્થાનં પ્રયાતિપરમં ધ્રુવ-નિત્ય-શુદ્ધમ્

॥૧૮॥

(૮) હે પ્રભુ ! આપના ચરણકમલમાં જે જીવ પોતાનું મસ્તક નમાવી આપને સર્વદા નમસ્કાર કરે છે તેને આ જગતમાં સર્વ પ્રકારની રિક્તિ-સિદ્ધિ મળે છે. એટલું જ નહિ પણ નમસ્કાર કરનાર આત્મા તેના કૃણરૂપે પુણ્યના ઉદયવડે ક્રમશઃ તીર્થં-કર થઈ કલ્યાણ કરનાર બને છે અને શાશ્વત મોક્ષ પદ પ્રાપ્ત કરે છે.

હે પ્રભુ ! જો જીવ નતમસ્તક હોકર આપકે ચરણકમલોં મેં નમસ્કાર કરતા હૈં उसको इस

जगत् में सभी प्रकारकी ऋद्धिसिद्धि मिलती है। इतना ही नहीं बल्कि नमस्कार करने वाला जीव, उस नमस्कारके फलस्वरूप पुण्यके उदय से क्रमशः तीर्थङ्कर होकर जगत् कल्याण करने वाला हो जाता है और शाश्वत मोक्ष पदको प्राप्त करता है ॥१८॥

पृच्छामि नाव—मधुना मुनिनाथ ! नित्यं,

प्राप्ता त्वया तरणतारणता हि कस्मात् ? ।
सा नोत्तरं वितनुते त्वमपि प्रयात—,

स्तद् ब्रूहि कोऽस्ति परितोष—करस्तृतीयः ॥१९॥

(१८) हे मुनियोना नाथ ! तुं आ
शरीररूपा नौकाने नित्य पूछुं छुं के आ
तरवा तारवान्नी कणा तुं क्यांथी शीभी ?

परंतु नौका मने कांઈ उत्तर आपती नथी,
 आप पणु निर्वाणु पाभ्या छे अने सिद्ध
 गतिमां बिराज्या छे, भाटे हे प्रभु !
 आप न मने कहो के आ प्रश्नो संतोष-
 कारक उत्तर आपे अबो त्रीजे डाणु छे ?
 (सद्गुरु सिवाय कांई उत्तर आपी शकसे
 नही.)

हे मुनिनाथ ! मैं इस नौकाको नित्य
 पूछता हूँ कि हे नाव ! यह तरने और तार-
 नेकी कला तूने कहाँ से सीखी ? परन्तु नौका
 तो कुछ उत्तर देती नहीं और आप भी
 निर्वाण प्राप्तकर सिद्धगति में विराज रहे हैं,
 तो हे प्रभु ! आप ही कहो कि इस प्रश्नका
 सन्तोषकारक उत्तर देनेवाला तीसरा कौन

હૈ ? અર્થાત્ સુગુરુકે અતિરિક્ત કોઈ મી ઉત્તર
દેને મેં સમર્થ નહીં હૈ ॥ ૧૯ ॥

પીયૂષ—મત્ર નિજ—જીવન—સાર—હેતું,

પીત્વાપ્નુવન્તિ મનુજાસ્તનુમાત્રરક્ષામ્ ।

સ્યાદ્વાદ—સુન્દર—રુચં ભવતસ્તુ વાચં,

પીત્વા પ્રયાન્તિ સુતરા—મજરા—મરત્વમ્

॥૨૦॥

(૨૦) હે નાથ ! આ લોકમાં મનુષ્ય
અમૃતરસ પીધા થકી લાંબો કાળ તંદુરસ્ત
જીવન ગાળે છે પણ તેથી કાંઈ અમર
બનતા નથી; પણ આપની અમૃતમય
સ્થાદ્વાદવાણીનું જે ભવ્ય જી પાન કરી
તેના અલૌકિક રસનો આસ્વાદ કરે છે તે

अजर अमर मोक्षपदने प्राप्त करे छे.

हे नाथ ! इस लोक में मनुष्य यदि
अमृतरसका पान करता है तो वह उसके
प्रभावसे निश्चय दीर्घजीविताको प्राप्त करता
है, जिसका कोई महत्त्व नहीं ! परंतु जो भव्य
आपकी अमृतमयी स्याद्वाद वाणीके रसका
पान करता है वह तो सहज में ही अजर,
अमर मोक्षपद को प्राप्त करता है ॥ २० ॥
चक्री यथा विपुल—चक्र—बला—दखंडं,

भूमंडलं प्रभुतया समलं—करोति ।

रत्न—त्रयेण मुनिनाथ ! तथा पृथिव्यां,

जैनेन्द्र—शासन—परान् भविनो विधत्से

(२१) हे प्रभु ! जेम चक्रवर्ती पोताना
चक्रथी विजय करीने पोतानुं आधिपत्य छ
अंडमां जभावे छे, तेम आप पणु आपना
सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्ररूपी त्रण
रत्नचक्रोना अणथी मिथ्यात्वने डरी शासन
प्रणुता अनी आप अव्यञ्जवने जैनशासनना
पथ पर चढावे छे.

जैसे चक्रवर्ती अपने प्रधान अस्त्र चक्र
रत्नके द्वारा छ खण्डोंको जीतकर उन पर
आपना आधिपत्य स्थापित करता है उसी प्रकार
हे मुनिनाथ ! आप भी अपने सम्यग्ज्ञान, सम्यगू
दर्शन और सम्यक्चारित्ररूपी रत्नत्रयरूपी
रत्नचक्रके प्रभावसे मिथ्यात्वको दूर कर अव्य
जीवोंको जैनशासनके वशवर्ती बनाते हैं ॥ २१ ॥

કાલસ્ય માન-મસ્તિલં શશિ માસ્કરાભ્યાં,
 પક્ષ-દ્વયેન ગગને ગમનં સ્વગાનામ્ ।
 તદ્વદ્ ભવાનપિ ભવાદ્ ભગવન્ ! જનાનાં,
 જ્ઞાનક્રિયોભયવશાદિહમુક્તિમાહ ॥૨૨॥

(૨૨) જેમ સમયની એટલે દિવસ-
 રાત્રીની જાણ જગતમાં સૂર્ય-ચંદ્રના ઉદય
 અને અસ્તથી થાય છે, અને જેમ પક્ષીઓ
 આકાશમાં બે પાંખ વડે ઊડી શકે છે તેમ,
 હું ભગવન્ ! ભવ્ય જીવોને સંસારથી
 ભિન્ન, અવિનાશી મોક્ષ પદ પામવાને
 માટે જ્ઞાન અને ક્રિયા દ્વારા આપે મોક્ષમાર્ગ
 બતાવ્યો છે.

जैसे दिनरात्रिरूपी कालका उदय-अस्त

જગત મેં ચન્દ્ર ઓર સૂર્ય સે હોતા હૈ, જૈસે
પક્ષિયોંકા આકાશમે ગમન દોનોં પાંखો સે
હોતા હૈ, ઉસી પ્રકાર હે ભગવાન્ ! આપને
इस संसार से जीवोंकी मुक्तिका उपाय, ज्ञान
और क्रिया इन दोनोंको कहा है ॥ २२ ॥

આનાદિકં હૃદિ-ગતં વિષમં વિષાક્તમ્,

સંસાર-કાનન-પરિભ્રમણૈક-હેતુમ્ ।

મિથ્યાત્વ-દોષ-મસ્તિલં મલિનસ્વરૂપં,

ક્ષિપ્રં પ્રણાશયતિ તે વિમલઃ પ્રભાવઃ ॥ ૨૩

(૨૩) હે પરમાત્મા ! અનાદિ કાળથી
સંસારી જીવ મિથ્યાત્વરૂપી અધિકારને કારણે
ભ્રમણ કરે છે, અને મિથ્યાત્વરૂપી ઝેરના
કેટલી જન્મ-મરણનાં દુઃખો ભોગવે છે.

आवा मलिन स्वरूपी मिथ्यात्वना दोषने
आपने निर्मल प्रभाव सत्वर नाश करे छे.

हे प्रभु । यह मिथ्यात्व दोष, जो कि
अनादि है, प्राणियोंके हृदयके भीतर जिसका
निवास है, जो विषम अर्थात् भयंकर है,
रागद्वेषादिरूप महाविषयों से जो भावित है,
संसाररूपी भयानक अटवीं में जिसके कारण
जीव निरन्तर परिभ्रमण कर रहे है और जिसका
स्वरूप स्वभावतः मलिन है, ऐसे इस मिथ्यात्व
दोषको आपका निर्मल प्रभाव क्षणमात्र में
समूल नष्ट कर देता है ॥२३॥

प्रमादिका विषय—मोह—वशं गता ये,

कर्त्तव्यमार्गविमुखाः कुमतिप्रसक्ताः ।

અજ્ઞાનિનો વિષય-ઘૂર્ણિત-માનસાશ્ર,
 સન્માર્ગમાનયતિ તાન્ ભવતઃ પ્રભાવઃ ॥

(૨૪) હે નાથ ! આ સંસારમાં જે જીવો પ્રમાદી, વિષયી, મોહવશે કરીને કર્તવ્યવિમુખ જીવન ગુજારે છે; પાપીઓની સોખતમાં ઉન્માર્ગ જીવન જીવી રહ્યા છે; અજ્ઞાનને આધીન જાઓનું મન ઇન્દ્રિયોના વિષયોનું ઉત્પત્તિસ્થાન બની રહ્યું છે એવાઓને આપનો પ્રભાવ સન્માર્ગમાં લાવે છે.

હે નાથ ! इस संसार में जो जीव प्रमादी, विषयी, मोहके वशीभूत होने से कर्तव्य-विमुख होकर जीवन व्यतीत करते हैं, पापि-

योंकी संगति से जो उन्मार्गगामी हो गये
 है, जिन्हे ज्ञानका लेश भी नहीं है, जिनका
 मन विषयरूपी सुरापान से घूम रहा है, ऐसे
 जीवोंको भी आपका प्रभाव सन्मार्ग पर
 लाता है ॥ २४ ॥

कल्प—द्रुमा—निव गुणास्तव चन्द्र-शुभ्रान्,
 चिन्तामणीनिव समीहितकामपूर्णान् ।
 ज्ञानादिकान् जन—मन—परितोष—हेतून्,
 संस्मृत्य को न परितोष—मुपैति भव्यः ॥

(२५) हे प्रभु ! अंद्र समान निर्भण,
 शीतल, कल्पवृक्ष अने चिन्तामणि समान
 मनचाँछित कामना पूर्ण करनेवाले आपना
 गुणोनी स्तुति करीने डालो अव्य जव

संतोष भोगवता नथी ! अर्थात् सर्व भोगों
शांति अनुभव है।

हे प्रभु ! चन्द्रमाके समान निर्मल, कल्प-
वृक्ष और चिन्तामणिके समान इच्छाओं की
पूर्ति करने वाले, अतः एव मनुष्योंके मनको
परितुष्ट करने वाले जो आपके ज्ञानादिक गुण
हैं उनका भक्तिभावपूर्वक स्मरण कर कौन
भव्य जीव सन्तुष्ट नहीं होता ? अर्थात् सभी
सन्तुष्ट होकर अविच्छिन्न सुखशान्तिके भागी
होते हैं ॥ २५ ॥

चिन्तामणिः सुरतरु—निधय—स्तथैव,

तेभ्यः सुखं क्षणिक—नश्वर—माप्नुवन्ति ।

त्वत्सेविनो भवि—जना ध्रुव—नित्य—सौख्यं,

तस्मादितो—प्यधिकतां समुपैषि नाथ ! ॥

(૨૬) સંસારી જીવ ચિન્તામણિ, કલ્પ-
વૃક્ષ અને નવનિધાનના યોગ વડે ક્ષણિક
અને નાશવંત સુખ મેળવે છે, પણ
આપની આરાધના કરનાર ભવ્ય જીવો
નિત્ય અને અદ્યાબાધ સુખને પ્રાપ્ત કરે
છે તેથી આપ તે સર્વથી અધિક છો.

हे भगवान् ! चिन्तामणि, कल्पवृक्ष और
नवविधि से मनुष्य सुख प्राप्त करते हैं, परन्तु
वह सुख सांसारिक होनेके कारण क्षण विन-
श्वर हैं । लेकिन आपके चरणकमलोंके सेवन
से भव्य जीवोंको जो सौख्य प्राप्त होता है
वह तो अलौकिक होनेके कारण ध्रुव और
नित्य है, अर्थात् कभी भी विनष्ट होने वाला

नहीं है। इसलिये हे नाथ ! आपकी महिमा की समानता चिन्तामणि आदि कभी नहीं कर सकते ! आप तो अनुपम हैं ॥ २६ ॥

ध्वान्तं न याति निकटे रवि-मंडलस्य,
चिन्तामणेश्च सविधे खलु दुःखलेशः ।
रागादि-दोष-निचया भगवँ-स्तथैव,
नो यान्ति किञ्चिदपि देव ! भवत्समीपे ॥

(२७) जेम सूर्यमंडल पासो अधिकार आवी शक्तो नथी, चिन्तामणि रत्न पासो दुःख मात्र आवी शक्तुं नथी, तेम हे दोषहर देव ! आपनी अनुपम प्रभा आगल राग आदि अद्वार दोषोभांथी डोई दोष जरा पालु नञ्क ईरकी शक्तो नथी.

જૈસે સૂર્યમણ્ડલકે સમીપ અંધકાર નહીં
જા સકતા, ચિન્તામણિકે સમીપ દુઃખકા
અંશમાત્ર મી નહીં જા સકતા, ડસી પ્રકાર હે
મગવાન્ રાગ-દ્વેષ આદિ અઠારહ દોષો મેં સે
ઁક મી દોષ આપકે પાસ નહીં આ સકતા ॥૨૭

શીતાંશુમંડલ- જલા-મૃત-ફેનપુંજ,

પ્રોત્ફલિતેપ્સિતસુપુષ્પવિશાલકુંજમ્ ।

ધર્મ નિરૂપ્ય પરમં સ્વલુ દુઃસમંજ,

નિત્યં વિકાસયસિ મવ્યદ ! મવ્યકંજમ્ ॥

(૨૮) હે પ્રભુ ! આપે જ ધર્મનો
ઉપદેશ કરેલ છે તે ખરેખર દુઃખનો નાશ
કરનાર છે. તે ચંદ્રમંડલ, જલ, અમૃત
અને ક્ષીણના પુંજ સમાન નિર્મળ અને

शान्तिप्रद छे. मतोरथरूप, मनोहर कूलोनो
विशाल लतामंडप छे. अने आप भव्यरूपी
कमलोनो विकास करे छे.

हे प्रभु ! आपने जिस धर्मका उपदेश
दिया है वह तो निश्चय ही सकल दुःखोंका
नाशक है, चन्द्र मण्डल, जल, अमृत और फेन
पुञ्जके समान निर्मल और शान्तिप्रद है, मनो-
रथरूप मनोहर पुष्पोंका विशाल लतामण्डप
है । ऐसे परम मनोहर धर्मका भव्योंके
हितार्थ प्ररूपण किया है । तथा हे कल्याण-
कारक ! आप सूर्यके समान भव्यरूपी कम-
लोंको नित्य प्रफुल्लित करते हैं, इसी कारण
उनके हृदयकोशस्थित सद्भावरूपी सुवास से

समस्त दिङ्मण्डल सुगन्धित हो रहा है ॥२८॥

दूरस्थितोपि सितरश्मि-रत्नं स्वकीयैः

शुभ्रैर्विकासिकिरणैः सुविकासभावम् ।

अन्तर्गतं वितनुते किल कैरवाणां,

तद्वदजिनेन्द्र ! गुणराशिरयं जनानाम् ॥

(२८) जेभ अंद्रभा पोतानां किरणोना प्रभावथी सरोवरभां उगेलां कमणोना अंत-
रनो विकास करे छे, तेभ हे जिनेन्द्र ! आपना
उज्जवण गुणोना समूहनो प्रभाव लव्य
जनोना हृदय पर पडवाथी सर्वथा आनंद
आपी भीलवे छे.

जैसे दूर में रहा हुआ चन्द्रमा अपनी
किरणोंके प्रभाव से, सरोवरो में उगे हुए

कैरव-समूह (रात्रिविकासि कमलों) के अन्त-
 स्तलको विकासित करता है उसी प्रकार हे
 जिनेन्द्र ! आप भी अपने उज्ज्वल गुणोंके
 प्रभाव से भव्यजनोंके हृदयरूपी कमलोको
 विकसित करते हैं, अर्थात्-आपके अनुपम
 गुणोंके माहात्म्य श्रवण से भव्योंका हृदय
 आनंदित हो जाता है ॥२९॥

शीतांशु-रश्मि निकर प्रसरा—नुषंगाद,
 यच्चन्द्रकान्त-मणयः परितो द्रवन्ति ।

तद्-वत्-त्वदीय-महिम-श्रवणेन भव्याः,
 शान्ताः प्रवृद्धकरुणा द्रविता भवन्ति ॥

(३०) हे प्रभु ! जैसी रीते चंद्रनां शीतल
 किरणोंनी निर्भल प्रज्ञा, पृथ्वी उपरना

श्रेष्ठ चन्द्रकान्त भणिने पीगणावे छे, तेवी
रीते आपना अनुपम महिमानुं श्रवण
करता, अव्य लोवोना हैयाभांथी दया अने
अहिंसानां अरणां अरे छे.

हे प्रभु ! जैसे चन्द्रमाके शीतल किरणों-
की प्रभासे पृथ्वी पर ही श्रेष्ठ चन्द्रकान्त
मणियां द्रवित होती है, अर्थात् पिघलाती है
उसी प्रकार आपकी अनुपम महिमाके सुनने
से, भव्योंके हृदय में से दया और अहिंसाका
झरना झरने लगता है ॥३०॥

दुःख-प्रधान-शिद-वर्जित हीयमाने,

काले सदा विषय-जाल-महा-कराले ।

भव्या भवत्प्रवचनं शिवदं जिनेन्द्र !

पीत्वात्मशान्तिमुपयान्ति नितान्तशुद्धाम्

(૩૧) હે પ્રભુ ! ઊતરતા આ વિષમ પંચમ કાળમાં સંસારી જીવો મોક્ષ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી. દુઃખનો ભાવ વૃદ્ધિ પામે છે, આયુષ્ય બળ ઘટતું રહે છે. એવા આ પાંચમા આરામાં ભવ્ય જનો આપના અમૃત રસથી ભરપૂર વચનનું પાન કરી આપનું ધ્યાન ધરવા થકી આત્મશાંતિ પ્રાપ્ત કરે છે.

હે પ્રભુ ! અવસર્પિણીકે इस विषम पंचम काल में जीव मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते । इस काल में दुःखके भाव बढ़ रहे हैं, आयु और बलका ह्रास हो रहा है, ऐसे इस पञ्चम आरा में भी भव्यजन, शिवसुखके देनेवाले

અમૃતસમાન આપકે વચનકા આસ્વાદ ન કરકે
પરમ આત્મશાન્તિકો પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥૩૧॥

ષટ્કાયનાથ ! મુનિનાથ ! ગુણાધિનાથ !

દેવાધિનાથ ! ભવિનાથ ! શુભૈકનાથ ! ।

અસ્માન્ પ્રબોધય જિનાધિપ ! દૂરતોપિ,

કિંનો સ્મિતાનિ કુરુતે કુમુદાનિ ચન્દ્રઃ ?

(૩૨) હે જિન ભગવાન ! છ કાયના

નાથ ! મુનિઓના સ્વામી ! જ્ઞાન દર્શન

આદિ અનંત ગુણોના ધારક ! દેવોના

નાયક ! આપ ધણે દૂર બિરાજે છે તો પણ

કૃપા કરી અમને જ્ઞાનરસના પૂરથી વિકસિત

કરો, કારણ ચંદ્રમા આકાશમાં ધણે દૂર

છે છતાં શું કુમુદોને પ્રપુલ્કિત નથી કરતો ?

અર્થાત્ કરે છે.

हे षड्जीवनिकायोंके नाथ ! हे मुनीश्वर !
 हे केवलज्ञान केवलदर्शन आदि अनन्त गुणोंके
 धारक ! हे देवाधिदेव ! हे भव्योंके हित
 विधायक ! हे जीवमात्रके कल्याणकारक
 जिनेन्द्र भगवान् ! आप बहुत दूर सिद्धिस्थान
 में विराज रहे हैं, तो भी आप कृपा करके
 ज्ञान रसके प्रवाह से हमारे हृदयकमलोंको
 प्रफुलित करें । यह हमारी प्रार्थना अनुचित
 नहीं है, क्यों कि दूर में रहा हुआ चन्द्रमा
 भी तो कुमुदोंको विकसित करता है ॥३१॥

वृक्षेऽपि शाकरहितो भवदाश्रयेण,

जातस्ततः स यदशोक इति प्रसिद्धः ।

भव्याः पुनर्जिन ! भवच्चरणाश्रयेण,

किं नाम कर्मरहिता न भवन्त्यशोकाः ?

(३३) हे प्रभु ! कंकली नामनुं वृक्ष
आपना संसर्गंथी शोकरहित जनी जग-
तमां अशोक नामथी प्रसद्धि पाभ्युं, तो
पछी हे नाथ ! भव्य जव आपनां
अरणोना आश्रय लई कर्मरहित अशोक
(शोकरहित) अवस्था प्राप्त करे ज, तेमां
आश्चर्य नथी.

हे प्रभु ! कंकलि नामक वृक्ष, आपके
संसर्ग से शोकरहित होकर जगत में अशोक
नामसे प्रसिद्ध हुआ, तो फिर हे नाथ ! भव्य
जीव आपके चरणोंका आश्रय लेकर कर्मरहित
हो अशोक (शोकरहित) अवस्थाको प्राप्त करें,
इस में आश्चर्य ही क्या ? ॥३३॥

સિંહાસને મણિમયે પરિભાસમાનં,

નાથં નિરીક્ષ્ય કિલ સન્દિહતે વિધિજ્ઞાઃ ।

ઇન્દુઃ કિમેષ ? નહિ યત્ સ કલંકયુક્તઃ,

કિ વા રવિર્ન સતુ ચંડતરપ્રકાશઃ ? ૩૪

(૩૪) સમોસરણમાં મણિરત્નો જડિત
સિંહાસને બિરાજમાન, તેમજ તેજના
પુંજરૂપ આપને જોઈ હે નાથ ! તત્ત્વજિજ્ઞાસુ
બુદ્ધિમાન જનો આપના સ્વરૂપ વિષે
શંકાશીલ બને છે અને વિચાર કરે છે કે
શું આ ચંદ્રમા હશે ? પણ ના, કારણ
કે તે કલંકયુક્ત છે. તો શું સૂર્ય હશે ? તે
પણ હોય નહિ. કારણ કે તેનો તાપ તો
પ્રચંડ હોય છે.

हे नाथ ! समवसरण में मणिरत्नजडित
 सिंहासन पर विराजमान तथा तेजके पुञ्जरूप
 आपको देखकर तत्त्वजिज्ञासु बुद्धिभान् पुरुष
 आपके स्वरूपके निर्णय में शङ्काशील होते हैं
 और वे तर्क करते हैं क्या ये चन्द्रमा हैं ?
 नहीं, क्यों कि चन्द्रमा तो कलङ्कयुक्त है, तो
 क्या ये सूर्य हैं नहीं, क्यों कि सूर्यका ताप
 तो अतिशय प्रचण्ड होता है परन्तु ये तो
 अतिशय शीतल हैं ॥३४॥

पुंज—स्त्वषा—मिति पुरा निरणाथि पश्चाद्—,

व्यक्ताकृति—स्तनुधरोय—मिति प्रबुद्धेः ।

भव्यैः पुमानिति पुनः प्रशम-स्वभावः.

कारुण्यराशिरिति वीरजिनः क्रमेण ३५

(૩૫) હે પ્રભુ ! ઉપર પ્રમાણે વિચાર કરવા છતાં બુદ્ધિમાન ભવ્ય જનોએ આપના સ્વરૂપ વિષે, તે તેજનો પુંજ છે એમ નિર્ણય કર્યો. આકાર ભેદ દેહધારી પુરુષ છે એમ અનુમાન કર્યું; વિશેષ નજીક જતાં જાણ્યું કે આ શાન્ત સ્વભાવાળી કોઈ મહાન વ્યક્તિ છે. વળી વધુ નજીક જતાં નિર્ણય કર્યો કે આ તો બીજું કોઈ નહીં પણ કરુણાના સાગર વીર જિનેશ્વર ભગવાન છે.

હે પ્રભુ ! इस प्रकार संशय करनेके बाद, बुद्धिमान् भव्य जनोने आपके स्वरूपके विषय में प्रथम यह निर्णय किया कि यह कोई तेज-पुञ्ज है । फिर कुछ आगे बढ़कर आकारके

स्पष्ट दर्शन से उन्हें यह विश्वास हुआ कि ये कोई देह धारी पुरुष है, और कुछ आगे जाने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि ये शान्तस्वभाववाले कोई महान् पुरुष हैं। फिर अधिक समीप जाने पर उन्हें ज्ञान हुआ कि ये तो कोई दूसरे नहीं है किन्तु करुणाके सागर वीर जिनेश्वर भगवान् हैं ॥३५॥

देवै—रचित कुसुम—प्रकरस्य वृष्ट्या,

दिङ्मण्डलं सुरभितं भवतोतिशेषात् ।

स्याद्वाद—चारु—रचना—वचना—वलीनां,

वृष्ट्या भवन्ति भविनः प्रशमे निमग्नाः ॥ ३६

(३६) समोसरणुमां हे प्रभु ! आपना
अतिशय मोहमांथी गेरार्थ देवो अयित्त

પુષ્પોની વૃષ્ટિ કરે છે. તેથી દશે દિશાઓ (દિગ્મંડલ) સુગંધિત થઈ શુદ્ધ વાતા-વરણમય થઈ જાય છે. અને આપના અનેકાંત વાદની સુંદર દિવ્ય વાણી વરસે છે. તેનાથી ભવ્ય જીવો શાંતિના સાગરમાં નિમગ્ન થઈ અપૂર્વ આનંદ અનુભવે છે.

समवसरण में हे प्रभु ! आपकी अतिशय महिमासे प्रेरित होकर देवगण अचित्त पुष्पों की वृष्टि करते हैं जिससे दसों दिशाये (दिग्मण्डल) सुगन्धित हो जाती है, वातावरण नितान्त प्रशान्त हो जाता है, और फिर आपकी अनेकान्तमयी प्रशस्त दिव्य वाणी की वृष्टि होती है, उससे भव्य जीव शान्तिके

સાગરમેં નિમગ્ન હોકર અપૂર્વ આનન્દ કા
અનુભવ કરતે હૈં ॥૩૬॥

લોકોત્તરા સકલ—જીવ—વચો—વિલાસા,
પીયૂષવત્—પરિણતા ભવદીય—ભાષા ।
સર્વદ્વિ—સિદ્ધિ—ગુણવૃદ્ધિ—વિધાન—દક્ષા,
સાક્ષાત્તનોતિ કુશલં સકલં સુલક્ષા ॥૩૭॥

(૩૭) હે ભગવાન્ ! આપની દેશના
(ધર્મોપદેશના) સર્વ જીવોની ભાષામાં
સમજી શકાય તેવી છે. અમૃત સમાન,
મધુર અને આકર્ષક છે. કલ્યાણકારી,
સિદ્ધિ આપનાર, તેમજ શાંતિ આદિ
અનુપમ ગુણરત્ન દેનાર છે.

हे भगवन् ! आपकी देशना समस्त जीवोंकी अपनी अपनी भाषामें परिणत हो-जाती हैं । वह अमृतके समान मधुर और आकर्षक है, कल्याणकारिणी हैं, सिद्धि और शान्ति आदि अनुपम गुणरत्नोंको देनेवाली है, तथा संपूर्ण कुशलको देनेवाली है ॥३७॥

गोक्षीर-नीर-शशि-कुन्द-तुषार-हार-,
शुक्लै-र्वियद्-विलसितैः-शुभ-चामरौघैः ।

ध्यानं सितं तव विभो ! विनिवेद्यते यत् ,
सर्वज्ञता तदनु कर्म-समूल-नाशः ॥३८॥

(३८) हे प्रभु ! गायन्तुं दूध, निर्मल पाणी, चंद्र, कुन्द पुष्प, आकण अने मोती-ना डार समान उज्ज्वल, जे सदैव आभरे।

આપના ઉપર ચમકતાં ઢોળાઈ રહ્યાં છે તે
આપનું શુક્લ ધ્યાન, સર્વજ્ઞતા અને સર્વ
કર્મનો નાશ કર્તા આપ જ છે તેનાં
સૂચક છે.

હે પ્રભુ ! ગાયકા દૂધ, નિર્મલ જલ,
કુન્દ પુષ્પ, હિમ (બરફ) ઓર મેંતીકે હારકે
સમાન ઝજ્જલ જો સ્વચ્છ ચામર આપકે
ઉપર ઢોરે જા રહે હૈં વે આપકે શુક્લ ધ્યાનકો
સૂચિત કરતે હૈ, ઓર શુક્લ ધ્યાનસે સર્વજ્ઞતા
જાતી હૈ, સર્વજ્ઞતાસે સકલ કર્મોંકા નાશ હોતા
હૈં હન બાતોંકે સૂચક હૈ ॥૩૮॥

આશંકલૈ-રવનિ મંડલ-ભાગતૈ સ્તૈ-

ર્મામંડલં તત્ર નુતં મુનિમંડલૈશ્ચ ।

મોહા—ન્ધકાર—પરિહાર—કરં—જિનેન્દ્ર,

તુલ્યં કથં ભવતિ તદ્ રવિમંડલેન ॥૩૯

(૩૯) હે નાથ ! પૃથ્વી પર રહેનારા મુનિઓ આપના ભામંડળની સ્તુતિ કરે છે અને કહે છે, આપનું ભામંડળ મોહરૂપી અંધકારનો નાશ કરે છે તો તેને સૂર્ય-મંડળની ઉપમા (તુલના) કેમ આપી શકાય ? અર્થાત્ ન આપી શકાય. કારણ ભામંડળ તો દ્રવ્ય અને ભાવ બંને અંધકારનો નાશ કરે છે.

હે નાથ ! પૃથ્વી પર દેવલોકસે ઉતરકર આયે हुए इन्द्रगण और पृथ्वी पर रहनेवाले मुनिगण आपके भामण्डल की स्तुति करते हैं

और कहते हैं कि—हे जिनेन्द्र ! आपका भामण्डल द्रव्य अन्धकारका विनाशक तो है ही परन्तु साथमें मोहरूपी भाव अन्धकारका भी विनाशक है, और सूर्य तो मात्र द्रव्यरूप अन्धकारका ही विनाशक है, अत एव आपके भामण्डल की तुल्यता सूर्य कभी नहीं कर सकता ? ॥३९॥

यत्कर्म—वृन्द—सुभटं विकटं विजेता,

लोकत्रय—प्रभु—रसा—वतिशेष—धारी ।

तस्मा—ज्जिनेन्द्र—सरणिं शरणीकुरुध्वं,

भव्या ! इति ध्वनति खे किल दुन्दुभिस्ते॥

(४०) हे नाथ ! आपना प्रभावथी

आकाशमां दृंदुभिनाद थाय छे अने ते

चोक्रस कहें छे: 'हे भव्य जीवो ! आ
विकटकर्म समूहरूपी वेरीना जतनार, तणु
लोकरना नाथ, चोत्रीस अतिशयोना धारक,
जिनेन्द्र भगवान् जे मार्ग बतावे छे तेनुं
शरणु अछएणु करै. '

हे नाथ ! आपके अतिशय प्रभावके कारण
आकाशमें दुंदुभि नाद होता है, वह दुंदुभि
नाद निश्चय यही कहता है कि—हे भव्यजीवो !
इस विकट कर्म समूहरूपी शत्रुओंको जीतने
वाले, तीन लोकके नाथ, चौतीस अतिशयों
के धारक जिनेन्द्र भगवान् जो मार्ग बतलाते
हैं उस मार्गका अवलम्बन करो ॥४०॥

अत्युज्ज्वलं विजित—शारद—चन्द्र—विम्बं
संमोदकं सकल—मंगल—मंजु—कन्दम् ।

છત્રત્રયં તવ નિવેદયતે જિનેન્દ્ર !,

રત્નત્રયં પ્રભુપદં શિવદં દદાતિ ॥૪૧॥

(૪૧) હે જિનેન્દ્ર ! સમવસરણમાં
આપના ઉપર જે ત્રણ ઉજ્જવળ છત્રો
ધરાય છે તેની પ્રભા શરદ ઋતુના ચન્દ્રની
પ્રભાથી અત્યંત ઉજ્જવળ છે. વળી તે
આપના સમ્યક્ દર્શન, સમ્યક્ ચારિત્રરૂપ
રત્નત્રય તથા આપ પ્રભુપદ અને મોક્ષ-
પદના દાતા તેમાં સૂચક છે.

હે જિનેન્દ્ર ! સમવરણमें आपके उपर जो
उज्ज्वल तीन छत्र तने हुए हैं, जिनकी प्रभा
शरदऋतुकी चन्द्र प्रभासे भी अत्यन्त उज्ज्वल

હૈં વે આપકે પ્રભુપદ ઔર મોક્ષપદકો દેનેવાલે
સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યગ્દર્શન, સમ્યક્ ચારિત્રરૂપ
રત્નત્રયકે સૂચક હૈં ॥૪૧॥

યત્ર ત્વદીય-પદ-પંકજ-સન્નિધાનં,

સન્ધાન-ભૂમિ-રસમાપિ સમા સમન્તાત્
સર્વર્ત્તવશ્ચ સુખદા વિલસન્તિ લોકા,

મન્યે નુ કલ્પતરુરેવ ભવત્ પદાબ્જમ્ ૪૨

(૪૨) હે પ્રભુ ! આપના ચરણકમળો
પૃથ્વી પર જ્યાં પગલાં ભરે છે તે ભૂમિ
ષિમ હોય તો પણ સમ થઈ શાતાકારક
થાય છે. સર્વ ઋતુઓ એકી સાથે આનંદ-
દાયક નીવડે છે. તેથી આપના ચરણ
કમળ એ જ કલ્પતરુ છે.

हे प्रभु ! आपके चरणकमल पृथ्वी पर जहाँ २ पडते हैं वे स्थल विषम हों तो भी सम होकर सुखकारक होजाते हैं, सभी ऋतुएँ एक साथ संमिलित होकर प्रकट होती है और लोक आनन्द पाते हैं । इस कारण आपके चरणकमल ही वस्तुतः कल्पतरु है ॥४२॥

दिव्यो ध्वनिर्गुण-गणश्च यशोपि दिव्यं,

दिव्यापि भावसमता प्रभुतापि दिव्या ।

तस्माद् विभो ! क तुलना भुवनत्रयेपि,

ज्योतिर्गणाः किमिह भानुसमा विभान्ति ?

॥४३॥

(४३) हे परमात्मा ! आपनी वाणी, गुण, यश, भावसमता अने प्रभुता,

अनुपम अने दिव्य छे. तेथी हे विष्णु !
 आपना तुल्य जगतमां जीणुं ऊर्ध छे नहि,
 कारण ताराणा समूह यमके छे पण ते ऊही
 सूर्य जेवो प्रकाश आपी शकता नथी.

हे भगवान् ! आपकी वाणी दिव्य है,
 गुण दिव्य है, यश दिव्य है, भाव समता
 दिव्य है, और प्रभुता भी दिव्य भी है, इस
 लिये हे प्रभु ! आपके तुल्य इस जगत् में दूसरा
 कोई नहीं है। भला, आपके तुल्य कोई दूसरा
 हो भी कैसे सकता है ? क्या तारागण सूर्य के
 समान प्रकाशित होसकते हैं ? कभी नहीं ! ४३

दिव्यं प्रभाव—मवलोक्य सुरादयस्ते,
 पीयूष-सार-वचनानि निशम्य सम्यक् ।

आनन्द—वारिधि—तरंग—निमग्न—चित्ता,-

स्त्वद्वर्णनाक्षमतया प्रणमन्ति भावात् ॥

(४४) हे प्रभु ! आपने। दिव्य प्रभाव
ज्येष्ठ भवनपति व्यन्तर, ज्योतिष्मि अने
वैमानिक देवो वगेरे आपनी अमृतमयी
बाणी सांभलतां आनन्दसागरना तरंगमां
प्रेमथी निमग्न थई भक्तिभावथी आश्रित-
ना आवेशमां आपने नमस्कार करे छे.

हे प्रभु ! भवनपति, व्यन्तर, ज्योतीष्मि
और वैमानिक देव आदि, आपके दिव्य प्रभाव
को देखकर, और आपकी अमृतमयी बाणी
को सुनकर आनन्द सागरकी तरङ्गोंमें अपने
चित्तको निमग्न कर देते हैं, और आपके

अनुपम गुणोंके वर्णन करनेमें असमर्थ हो,
 आन्तरिक भक्तिभावके आवेशसे आपको वारं-
 वार नमस्कार करते हैं ॥४४॥

तुभ्यं नमः सकल—मंगल—कारकाय,

तुभ्यं नमः सकल—निर्वृति—दायकाय,

तुभ्यं नमः सकल—कर्म—विनाशकाय,

तुभ्यं नमः सकल—तत्त्व—निरूपकाय ४५

(४५) हे प्रभु ! सर्वभंगण करनार
 आपने हुं नमस्कार करुं छुं. सर्वप्रकारे
 सुख—शांति देनेार आपने हुं नमस्कार
 करुं छुं. ज्ञानावरणीय आदि आठे कर्मेनि
 क्षय करनार आपने हुं नमस्कार करुं छुं.
 सकल तत्त्वना प्ररूपक हे नाथ ! आपने

हुं नमस्कार ऊरुं धुं.

हे प्रभु ! समस्त मंगलोंके कारक आपको नमस्कार हो, सभी प्रकारके सुख शान्ति देने-वाले आपको नमस्कार हो, ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मोंके विनाशक आपको नमस्कार हो, और समस्त तत्त्वोंके प्ररूपक आपको नमस्कार हो ॥४५॥

तुभ्यं नमः सकल—जीव—दया—पराय,

तुभ्यं नमः शिवद—शासन—भास्कराय ।

तुभ्यं नमः सकल—लोक—शुभंकराय,

तुभ्यं नमः सततमस्तु जिनेश्वराय ॥४६॥

(४६) हे प्रभु ! सभय लोकना ज्वेने
अलयदान देनार आपने हुं नमस्कार ऊरुं

छुं. मोक्षपद प्राप्त करनेवाले, शासनना सूर्य
 आपने छुं नमस्कार करुं छुं. प्राणीमात्रनुं
 ललुं करनेवाले आपने छुं नमस्कार करुं छुं. हे
 दयानिधि जिनेश्वर ! आपने छुं नमस्कार
 करुं छुं.

हे भगवान् ! सकललोकवर्ती जीवोंको
 अभय देनेवाले आपको नमस्कार हो, मोक्षपद
 को प्राप्त करनेवाले और शासनके सूर्य समान
 आपको नमस्कार हो, प्राणि मात्र के हित-
 कारक आपको नमस्कार हो। हे दयानिधि
 जिनेन्द्र ! आपको सर्वदा नमस्कार हो ॥४६॥

रक्षः—पिशाच—निकरै—रदयो—पसृष्टं,

दुर्वृत्त—दुष्ट—खल—सृष्ट—विसृष्ट—मुष्टम् ।

दारिद्र्य—दुःख—गद—जाल—विशाल—कष्टं,

नष्टं भवत्यखिल—माशु भवत्प्रभावात्

(४७) राक्षस पिशाचना उपसर्गो, दुष्ट
जनोनी भूठ, दारिद्र्यना दुःखभांथी उत्पन्न
यतां महान कष्टो वगेरे हे नाथ ! आपना
तेज्ज्ही सधणां नाश पाभे छे.

हे नाथ ! राक्षस और पिशाचके उपसर्ग,
दुष्ट जनों की मूँठ, दुःख दारिद्र्य, नाना प्रकार
के रोग, शोक और भयंकर कष्ट आदि सभी
आपके प्रभावसे नष्ट होजाते हैं ॥४७॥

चौरारि—सिंह—गज—पन्नग—दुष्ट—दाव—,

हिंस्रप्रचार—खल—बन्धन—दुर्ग—भूमौ ।

सर्वं भयं भयकरं प्रणिहन्ति नाथ !

त्वद्ध्यानमात्रमखिलं भुवनत्रयेऽस्मिन् ॥

(४८) हे नाथ ! चोर, दुश्मन, सिंह, हाथी, सर्प, दावानल आदि संहारक तत्त्वोत्थी तेमज्ज दुष्ट बन्धनत्थी उत्पन्न थतो भय, अेवा सर्व प्रकारना भयंकर भयना कारणोने दूर करवा आपनुं ध्यान मात्र अव्य ञ्चोने तणु भुवनमां अेकमात्र उपाय छे.

चोर, शत्रु, सिंह, हाथी, सर्प, दावानल, और हिंसक प्राणियोंके संचारसे, तथा दुष्ट मनुष्योंके द्वारा होनेवाले बन्धनके भयसे जो भूमि अत्यन्त दुर्गम है, ऐसी भूमिमें भी हे नाथ ! आपका ध्यान घरनेसे मनुष्य सभी प्रकारकी विपत्तियोंसे उगर (बच) जाता है, क्योंकि आपका ध्यान सभी विपत्तियोंको दूर

ભગા દેતા હૈ । इस लिये आपका ध्यान त्रिमु-
वनमें सर्व श्रेष्ठ है ॥४८॥

सिंहो—रग—प्रखर—सूकरहिंस्रजालै—,

व्यासा—टवी विकट—लुण्टक—कण्ट—नालैः ।

सर्वर्तु—पुष्प—फल—पल्लव—शोभमाना,

सा नन्दनं भवति ते स्मरणाज्जिनेन्द्र !

(૪) હે જિનેન્દ્ર ! સિંહ, સર્પ, સુવર,
આદિ હિંસક પ્રાણીના વાસથી વિકરાળ, ચોર
લૂંટારાના ત્રાસથી ભયાનક, તીક્ષ્ણ કાંટાની
જાળથી દુર્ગમ એવી જે ઘોર અટવી છે તે
આપના સ્મરણ માત્રથી સર્વ ઋતુના પત્ર,
પુષ્પ, ફલથી શોભાયમાન થઈ નંદનવન સમાન
આનંદદાયક બને છે.

हे जिनेन्द्र ! सिंह, सर्प, अत्यन्त तीखे दाँतवाले शूकर तथा अन्य हिंसक प्राणियोंके निवासस्थान होनेसे विकराल, चोर, डाकू आदिका निवासस्थान होनेसे भयानक, और तीक्ष्ण कँटोंसे व्याप्त होनेके कारण अत्यन्त दुर्गम जो अटवी है वह भी, आपके स्मरण मात्रसे सभी ऋतुओंके पत्र, पुष्प और फलोंसे संपन्न होकर नन्दनवनके समान आनन्ददायक हो जाती है ॥४९॥

घोरा—तिघोर—विकटे सुभटेऽतिकष्टे,

अष्टे बले विविध—दुःख—शतै—र्विशिष्टे ।

शस्त्रा हति-प्रविचल-द्रुधिरप्रवृद्धे,

युद्धे तनोति तव नाम विशुद्ध-शान्तिम् ॥

(५०) हे प्रभु ! अपने पक्षने मडा-कूट
 क्षारी दारुण युद्ध ज्यां चालतुं, होय, शत्रुना
 अनेक त्रासथी भूष, तृषा, आदिथी व्याकुण
 सेनापण आसरतुं होय, रणभेदाने शस्त्रथी
 धवायेल योद्धाना शरीरमांथी रुधिरप्रवाह
 जेसमेर वहेतो होय, अवा धोर संश्राममां
 पणु आपनुं नामस्मरणु भव्य जेवने
 शांति आपे छे.

हे प्रभु दोनों पक्षोंके लिये महाकष्टकारी
 दारुण युद्ध जहां होरहा है शत्रू त्राससे और
 क्षुधा, पिपासा आदिसे व्याकुल होकर सैनिक
 जहांसे भाग रहे हैं, जहांपर शस्त्रके आघातसे
 आहत योद्धाओंके शरीरसे निरन्तर प्रबल

शोणितप्रवाह बह रहा है, ऐसे घोर संग्राममें
मी आपका नाम—स्मरण भव्य जीवोंको शान्ति
देता है ॥ ५० ॥

सर्वद्धि—सिद्धिद—मिदं परमं पवित्रं,
स्तोत्रं च यः पठति वीर—जिनेश्वरस्य ।

चिन्तामणिः सुरतरुः सकलार्थसिद्धिः,
संसेवितुं तमनुकूलयितुं समेति ॥ ५१ ॥

(५१) श्री वीर जिनेश्वर भगवाननुं
परम पवित्र, सर्वदा सिद्धिसिद्धि आपनार
आ स्तोत्र जे जेव सदा आवथी आवुशे,
तेने चिन्तामणिरत्न, उदपवृक्ष अने अनेक
प्रकारनी सिद्धिओ अनुकूल थई आवी भणशे.

श्री वीर जिनेश्वर भगवानके परमपवित्र
सर्वदा ऋद्धिसिद्धिके देनेवाले इस स्तोत्रको जो

मनुष्य भक्तिभावपूर्वक पढेगा उसकी प्रसन्नता के निमित्त, चिन्तामणिरत्न, कल्पवृक्ष और अनेक प्रकारकी सिद्धियां उसकी सेवामें सर्वदा उपस्थित रहेगी, अर्थात् इस स्तोत्रके पढनेसे इह लोक संबन्धी सभी सिद्धियां प्राप्त होती हैं और परम्परासे वह मोक्षका भागी बनता है ॥५१॥

श्री-वर्द्धमान-शुभनाम-गुणा-नुबद्धां,
 शुद्धां विशुद्ध-गुण-पुष्प-सुकिर्ति-गन्धाम्
 यो घासिलाल-रचितां स्तुति-मंजु-मालां,
 कंठे बिभर्ति खलु तं समुपैति लक्ष्मीः ॥
 ॥ इतिश्री जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-
 पूज्यश्री-घासीलालजीमहाराजविरचितं
 श्रीवर्द्धमानभक्तामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(પર) શ્રી વર્ધમાન પ્રભુના શુભ—નામ
 રૂપી દોરામાં તેના શુદ્ધ, નિર્મળ ગુણરૂપી
 ફોલોને ગૂંથી, કીર્તિરૂપ સુગંધથી ભરપૂર
 પૂજ્ય ધારસીલાલજી મહારાજ સાહેબે બનાવેલ
 આ સ્તુતિરૂપ સુંદર માળાને જે ભવી કંઠમાં
 ધારણ કરશે તેને ત્રણ લોકની દ્રવ્ય અને
 ભાવલક્ષ્મી આપમેળે આવીને વરશે.

ધૃતિ શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય
 શ્રી ધારસીલાલજી મહારાજ વિરચિત

શ્રી વર્ધમાનભક્તામરસ્તોત્રનો

ગુજરાતી ભાષાનુવાદ

સંપૂર્ણ

श्री वर्धमान प्रभुके शुभ नामरूपी सूतमे
 उनके शुद्ध, निर्मल गुणरूपी फूलेको गूँथकर
 कीर्तिरूपी सुगन्धिसे परिपूर्ण पूज्यश्री धासी-
 लालजी महाराज द्वारा रचित इस स्तुतिरूपी
 सुन्दर मालाको जो भव्य जीव अपने कण्ठमें
 धारण करेगा उसको त्रिभुवनकी द्रव्य और
 भावलक्ष्मी स्वयं उपस्थित होकर वरेगी ॥५२॥

॥ इति श्रीजैनाचार्य—जैनधर्मदिवाकर—पूज्य—
 श्री—धासीलालजी—महाराज—विरचित—
 श्री—वर्धमानभक्तामरस्तोत्रका हिन्दी

भाषानुवाद सम्पूर्ण ॥

(३) अथ—सुखस्मरण

सुखमूलं गणधरं, वर्धमानानुयायिनम् ।

द्वादशाङ्गधरं नित्यं, वन्दे तं गौतमप्रभुम् ॥१॥

(૧) સુખના મૂળકારણરૂપ એવા શ્રી વર્ધમાન મહાવીર જિનેશ્વરના પદ શિષ્ય તથા બાર અંગધારી એવા ગણધર શ્રી ગૌતમ પ્રભુને મારાં સદૈવ નમસ્કાર હોજો.

શ્રી વર્ધમાન પ્રભુ કે અનુયાયી દ્વાદશાઙ્ગ કે ધારક સુખકે મૂલ શ્રી ગૌતમસ્વામી કો નિત્ય નમસ્કાર કરતા હૂં ॥ ૧ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण, सर्वलब्धिः प्रजायते ।
ऋद्धिः सिद्धिः समृद्धिश्च, वन्दे तं गौतमं प्रभुम्

(૨) જેનું સ્મરણ માત્ર કરવાથી સર્વ પ્રકારની લબ્ધિ, રિક્ષિ, સિદ્ધિ અને સમૃદ્ધિ મળે છે તેવા લબ્ધિ તણા ભંડાર ગૌતમપ્રભુને મારા નમસ્કાર હોજો.

જિનકે સ્મરણમાત્ર સે સમી પ્રકાર કિ
લબ્ધિ ઋદ્ધિ સિદ્ધિ ઔર સમૃદ્ધિ ભવ્ય જીવોં
કો મિલતી હૈ, ઁન મહાપ્રભાવશાલી શ્રી
ગૌતમસ્વામી કો નિત્ય નમસ્કાર કરતા હૂં ॥૨॥

નેતારં સર્વસંઘસ્ય, જેતારં કર્મવૈરિણામ્ ।
ત્રાતાારં સર્વજીવાનાં, વન્દે તં ગૌતમં પ્રભુમ્ ॥ ૩ ॥

(૩) આ ગૌતમ પ્રભુ કેવા છે ? સકળ
સંઘના નાયક છે, કર્મરૂપી શત્રુઓના વિજેતા
છે. સર્વ જીવોના રક્ષક એવા ગૌતમપ્રભુને
મારા નમસ્કાર હો.

સમસ્ત સંઘ કે નેતા કર્મ શત્રુઓકો
જીતને વાલે ઔર સમી જીવોં કે રક્ષક શ્રી

ગૌતમસ્વામી કો નમસ્કાર કરતા હું ॥ ૩ ॥

તનયં વસુભૂતેશ્ચ, પૃથિવ્યા અદ્ભુજાતકમ્ ।

દિવ્યજ્યોતિર્ધરં દિવ્ય,—રૂપલાવણ્ય—સંયુતમ્ ॥૪॥

દિવ્યસંહનનં ચૈવ દિવ્યસંસ્થાનશોભિતમ્ દિવ્યર્દ્ધિં
દિવ્યલેશ્યં ચ, વન્દે તં ગૌતમં પ્રભુમ્ ॥ ૫ ॥

(૪) વિક્રાન વસુભૂતિ પંડિતના સુપુત્ર
અને પૃથિવી નામે માતાની કૃપે જન્મેલા,
દિવ્યરૂપ, દિવ્ય લાવણ્યથી યુક્ત સુશોભિત
તથા દિવ્ય જ્ઞાનની અણબુઝ જ્યોતિ પેટાવીને
સારાથે આર્યાવર્તને જ્ઞાનનો પ્રકાશ આપનાર
જ્યોતિર્ધર ગૌતમ પ્રભુને મારા નમસ્કાર હોજો.

(૫) જેના શરીરનું સંહનન બંધારણ

दिव्य छे, जेनुं संस्थान—आकार-दिव्य रीति
सुशोभित छे, जेनी रिद्धि दिव्य अने जेनी
लेश्या—मननाभाव पाए दिव्य छे अेवा गौतम
प्रभुने भारे नमस्कार छे.

वसुभूति के पुत्र पृथ्वीमाता के अङ्गजात
दिव्यज्योति के धारक दिव्यरूपलावण्य से
संयुक्त, दिव्यसंहननधारी, दिव्य संस्थान से
सुशोभित और दिव्यश्रद्धि एवं दिव्य लेश्या-
वाले श्री गौतमस्वामी को मैं नमस्कार करता
हूँ ॥४-५॥

दिव्यप्रभाव—संपन्न, दिव्यतेजःसमर्चितम्

दिव्यलब्धिधरं दिव्यं, वन्दे तं गौतमं

प्रभुम् ॥६॥

(૬) દિવ્ય પ્રભાવથી જે યુક્ત છે, અલૌકિક તેજના પુંજ સમાન, તથા અલૌકિક લઘિધઓના સ્વામી એવા ગૌતમ પ્રભુને મારા નમસ્કાર હજી.

દિવ્ય પ્રભાવ સે સમ્પન્ન, દિવ્ય તેજસે યુક્ત, દિવ્યલઘિધધારી એસે શ્રી ગૌતમસ્વામી કો નમસ્કાર કરતા હૂં ॥૬॥

ચતુર્જ્ઞાનધરં શુદ્ધં, વિદ્યાચરણપારગમ્ ।

ધારકં સર્વપૂર્વસ્ય, વન્દે તં ગૌતમં પ્રભુમ્ ॥૭॥

(૭) ચાર પ્રકારના શુદ્ધ જ્ઞાનના ધરણુ-હાર, વિદ્યા અને ચારિત્રમાં પારંગત તથા ચૌદ પૂર્વના ધારી એવા ગૌતમ પ્રભુને મારાં વંદન હજી.

ચાર જ્ઞાન કે ધારક, વિદ્યા ઓર ચારિત્ર
મેં પારંગત, સકલ (ચૌદહ) પૂર્વોં કે ધારણ
કરનેવાલે એસે વિશુદ્ધ ગૌતમસ્વામીકો નમ—
સ્કાર કરતા હૂં ॥ ૭ ॥

ગોશબ્દાત્ કામધેનુત્વં, તકારાત્ તરુતુલ્યતા ।
મકારાન્મણિસામ્યં ચ, જ્ઞાયતે ગૌતમપ્રભોઃ ॥૮॥

(૮) ‘ ગૌ—ત—મ ’ શબ્દ ત્રણ અક્ષરનો
બનેલો છે તેમાં પ્રથમ ‘ગ’ ‘ગો’ અક્ષર
આપ કામધેનુ સમાન છે, તેમ સૂચવે છે. ‘ત’
અક્ષર મનવાંચિછત ક્ષણ આપનાર તરુ
(કદપતરુ) સમાન છે, તેમ સૂચવે છે. ત્રીજો
‘મ’ અક્ષર આપ ચિંતાવેલું આપે તે મણિ
(ચિંતામણિ) સમાન છે તેમ સૂચવે છે હે
ગૌતમ પ્રભુ ! આપના ત્રણ અક્ષરના

(ગૌ—ત—મ) આ નાનકડા નામમાં કેટલું
બધું સામર્થ્ય સમાયેલું છે !

ગૌતમ પ્રભુ કે ‘ગૌતમ’ इस नामके
अन्तर्गत ‘गो’ शब्दसे उनमें कामधेनुतुल्यता,
‘त’ से कल्पवृक्षतुल्यता और ‘म’ से चिन्ता-
मणितुल्यता प्रकट होती है ॥ ८ ॥

कामधेनुसमो लोके, सर्वसिद्धिप्रदस्तथा ।

कल्पवृक्षसमो वाञ्छा—पूरणे चिन्तिते मणिः ॥९॥

(૯) લોકને વિષે આપ કામધેનુ
સમાન છો, તથા સર્વ પ્રકારની રિક્તિના
દાતાર છો, આપ મનમાંચિછત ઇચ્છાઓ
પરિપૂર્ણ કરનાર કેલ્પવૃક્ષ સમાન છો, એવા
હે ગૌતમ પ્રભુ ! આપને મારા નમસ્કાર હજી.

સમી પ્રકાર કો સિદ્ધિયોં કે દાયક
હોને સે ગૌતમસ્વામી ઇસ લોકમેં કામધેનુ
સમાન હૈ, અભિલાષા કે પૂરક હોને સે કર્પ-
વૃક્ષ સમાન હૈ' ઔર ચિન્તિત પદાર્થોંકે દાયક
હોનેસે ચિંતામણિસમાન હૈ ॥ ૯ ॥

અઙ્ગુઠે ચામૃતં યસ્ય, યશ્ચ સર્વગુણોદધિઃ ।

મળ્ડારઃ સર્વલઘ્વીનાં, વન્દે તં ગૌતમં પ્રભુમ્ ॥ ૧૦ ॥

(૧૦) જેને અંગૂઠે સાક્ષાત્ અમૃત
વસે છે, જે સર્વ પ્રકારની લઘ્વીઓના ભંડાર
છે, તેવા ગૌતમ પ્રભુ! આપને મારા
નમસ્કાર હો.

(ગૌતમ પ્રભુને આપણે લઘ્વીતાણા
ભંડાર કહીને નવાળાં છીએ તો હવે
તેમની લઘ્વીઓનાં ગુણગાન કરીએ—)

जिनके अंगूठे में अमृत है, जो सभी गुणोंके सागर हैं, ऐसे गौतमस्वामी को नमस्कार करता हूँ ॥ १० ॥

आमषषधिलब्धिश्च, विप्रुडोषौष षधिरेव च
श्लेष्म—जलौषर्धा चैव, विपुलर्जुमती तथा ॥ ११ ॥
संभिन्नश्रोत्रलब्धिश्चा—वधिलब्धिस्तथैव च ।

मनः पर्ययलब्धिश्च, लब्धिः केवलिनस्तथा ॥ १२ ॥
लब्धिर्गणधरस्यापि, लब्धिः पूर्वधरस्य च ।

पदानुसारिलब्धिश्च, लब्धिः क्षीरास्रवस्य च ॥ १३ ॥
घृतास्रवस्य लब्धिश्च, लब्धिर्मध्वास्रवस्य च ।
वैक्रियाहारलब्धी च, लेश्यालब्धिस्तथैव च ॥ १४ ॥

अक्षीणमहानसस्य, लब्धिर्जङ्घाचरादिकाः ।

लब्धयः सकलास्तस्य, वशे तिष्ठन्ति सर्वदा ॥ १५ ॥

(૧૧) આપ આમષૌષધિ નામની લઘ્વિના ધરણુહાર છે (જેના પ્રભાવે કરીને આપના સ્પર્શ માત્રથી રોગોનો નાશ થાય.) આપ વિપ્રુડોષધિ નામની લઘ્વિના ધરણુહાર છે. (આ લઘ્વિ જને હોય તેનાં મળમૂત્રમાં સર્વરોગનાશક શક્તિ હોય છે) આપ શ્લેષ્મ ઔષધિના ધરણુહાર છે (આ લઘ્વિ જને હોય તેનું શ્લેષ્મ સર્વ રોગો ઉપર ઔષધિ તરીકે કામ આવે છે) તથા આપ વિપુલ અને ઋણુમતી નામની લઘ્વિના ધારક છે.

(૧૨) આપ સંભિન્નસ્રોત લઘ્વિના ધારણુહાર છે (આ લઘ્વિ જને હોય તેની બધી ઇન્દ્રિયો એક બીજી ઇન્દ્રિયનું કામ

કરી શકે) આપ અવધિજ્ઞાન, મનઃપર્યાયજ્ઞાન,
અને કેવલજ્ઞાનની લખિંધઓના ધરણુહાર છો.

(૧૩) હે ગૌતમ પ્રભુ ! આપે ગણધરની
લખિંધ મેળવેલી છે. ચૌદ પૂર્વની લખિંધ પણ
આપની પાસે છે. પદ્ધાનુસારિ લખિંધના આપ
ધારક છો. (જે લખિંધમાં એક પદ ઉપરથી
અનેક પદ ઉત્પન્ન કરવાની શક્તિ સમા-
યેલી છે) તેમજ આપ ક્ષીરાસ્રવ લખિંધ(જેનાં
દૂધ જેવાં મીઠાં વચન હોય તેવી)ના ધારક છે.

(૧૪) આપ ઘૃતાસ્રવ (જેનાં વચનો ધી
જેવાં હોય) લખિંધના ધરણુહાર છો. આપ
મધ્વસ્રવ (મધ જેવા મીઠાં જેનાં વચનો
હોય તેવી) લખિંધના ધરણુહાર છો. આપ

વૈક્રિયઆહારક (જેનામાં એકનાં અનેક સ્વરૂપો બનાવવાની શક્તિ રહેલી છે તેથી) લઘિવના ધરણુહાર છે. આપ તેજોલેશ્યા અને શીતલેશ્યા લઘિવઓના આપ ધારક છે.

(૧૫) આપ અક્ષીણમહાનસ (અક્ષય પાત્ર સમાન રસોડાની) લઘિવ, જંધાયરાદિક (જંધ ઉપર હાથ મૂકવાથી ગગનમાં વિહાર કરી શકાય તેવી) લઘિવના ધરણુહાર છે. આ સર્વ લઘિવઓ સર્વદા આધીન રહે છે.

(૧)—આમરૌષધિલઘ્વ, (૨)—વિપ્રુહો—
ષધિલઘ્વ, (૩)—શ્લેષ્મૌષધિલઘ્વ, (૪)—જલ્હો—
ષધિલઘ્વ, (૫)—વિપુલમતિલઘ્વ, (૫)—
ઞ્જુમતિલઘ્વ, (૬)——સ્ખંભિન્નસ્રોતલઘ્વ,

- (७)–अवधिलब्धि, (८)–मनःपर्ययलब्धि,
 (९)–केवलिलब्धि, (१०)–गणधरलब्धि,
 (११)–पूर्वधरलब्धि, (१२)–पदानुसारिलब्धि
 (१३)–क्षीरास्रवलब्धि, (१४)–घृतास्रवलब्धि,
 (१५)–मध्वास्रवलब्धि (१६)–वैक्रियलब्धि,
 (१७)–आहारकलब्धि (१८)–लेश्यालब्धि—
 (तेजोलेश्यालब्धि, शीतललेश्यालब्धि),
 (१९)–अक्षीणमहानसलब्धि, और इनके अति-
 रिक्त जङ्घाचरण आदिक सभीलब्धियाँ गौतम-
 स्वामीके अधीन में सर्वदा रहती हैं॥११—
 १२–१३–१४–१५॥

ऋद्धिः सिद्धिः सुखं संपद, यशः कीर्तिर्जयस्तथा ।
 विजयश्चास्य पाठेन, लभ्यते नात्र संययः ॥१६॥

(१६) आगण कही गया प्रमाणे सर्व प्रकारनी लब्धिअना धारक गौतमस्वाभिना गुणगान ३५, आ सुअस्मरणनी आराधना करनारने रिद्धि, सिद्धि, सुअ-संपत्ति यश, कीर्ति अने विजय आवी भणे छे, तेमां संशयने स्थान नथी.

श्री गौतम प्रभु के इस स्मरण के पाठ करनेसे भव्योंको ऋद्धि, सिद्धि, सुख, संपत्ति, यश, कीर्ति और विजय का लाभ सर्वदा होता है, इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं है ॥१६॥

दिव्यं सुखं परमवे, तथाऽनन्तं च शश्वतम् ।

अव्याबाधं ध्रुवं सौख्यं, लभ्यते परमं पदम् ।

(૧૭) તે ઉપરાંત આરાધક પરભવને વિશે દિવ્ય, અનંત અને શાશ્વત સુખ સંપત્તિનો સ્વામી બને છે. અને છેલ્લે અચળ પરમપદ મોક્ષની પણ પ્રાપ્તિ કરે છે.

સુખસ્મરણ સંપૂર્ણ (૩)

इस स्तोत्र के स्वाध्याय करनेवाले परभव में देवलोक के सुखों को पाते हैं, तथा कर्मों का क्षय करके परम्परा से अनन्त, शाश्वत, अव्याबाध, ध्रुव सौख्यस्वरूप परम पद—मोक्ष की प्राप्ति करते हैं ॥१७॥

॥ इति सुखस्मरण ॥४॥

(४) अथ संपत्स्मरण ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः।

॥ श्री गौतमस्वामिलब्धिर्भवतु ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऋषभदेवथी मांडीने
ते महावीर स्वामी सुधीना येवीसे तीर्थंकर
देवाने भारा नमस्कार हुन्ने. श्री गौतम
स्वामीना जेवी लब्धि हुन्ने.

मंगलाचरण

चिन्तामणिमहाविद्ये श्रीधारे सर्वसौख्यदे ।

अचिन्त्यशुभदे शुद्धे, संपत्सिद्धिप्रदे नमः ॥१॥

भंगणाचरण

(१) लक्ष्मीनी धारा समान सर्वा प्रकार-
नां सुख देनेारी, जेती चिंतना पाण न
करी होय छतां शुभ मनःकामना पूर्ण
करनार. शुद्ध स्वरूपवाणी, संपत्ति सिद्धि
देनारी हे चिन्तामणि महाविद्या ! तने
नमस्कार हजे.

हे चिन्तामणि महाविद्ये ! हे श्रीधारे-
लक्ष्मी की धारास्वरूप ! हे सभी प्रकार के
सौख्यों को देनेवाली ! हे अचिन्त्य शुभों के
देनेवाली ! हे शुद्धस्वरूप ! हे संपत्ति और
सिद्धि को देनेवाली ! तुम को नमस्कार करता

आनन्दकन्दसंभूते, महालक्ष्मिमहोत्सवे ।

सदाजिनेन्द्रभक्तानां संपत्तिसिद्धिप्रदे नमः ॥ २ ॥

(२) हे आनन्दकन्दस्वरूप ! हे महा-
लक्ष्मी ! हे महाउत्सववाणी तथा जिनेन्द्र
भगवानना भक्तोने सदा सुखसंपत्ति अने
सिद्धि आपनारी अेवी हे महाविधा तने नम-
स्कार हजे.

हे आनन्दकन्द के उत्पत्तिस्थान ! हे महा-
लक्ष्मी ! हे महोत्सवयुक्त ! हे जिनेन्द्र भगवानके
भक्तोंको सर्वदा सम्पत्ति और सिद्धि देनेवाली !
तुमको नमस्कार करता हूं ॥ २ ॥

नानाशास्त्रं समादाय श्रीधारा सुखदा सदा ।
लोकोत्तरा लौकिकी च धासीलालेन तन्यते ॥ ३ ॥

(३) विविध प्रकारनां शास्त्रोभां यथा-
वायेली सदा सुख अने लक्ष्मीनीधारा वडा-
वनार, लौकिक तथा लोकोत्तर ये ये विधा विशे
हवे श्री धासीलालजी महाराज साहेब आपने
कहे छे.

अनेक शास्त्रों से उद्धृतकरके स श्रीधारा
स्तोत्र की रचना पूज्य श्री धासीलालजी महाराज
करते हैं । यह श्रीधारा सर्वदा सुख देनेवाली
है, और यह लोकोत्तर और लौकिकभेदसे दो
प्रकार की है ॥ ३ ॥

रुचिरप्रभे रुचिरकान्ते रुचिरवर्णे रुचिरलेश्ये रुचिर-
ध्वजे सिद्धे सिद्धिरूपे, सिद्धिधरे सिद्धिदे, पूर्णे
पूर्णरूपे पूर्णप्रभे, सूर्यकान्ते, सूर्यवर्णे सूर्यलेश्ये,

पद्मे पद्मरूपे पद्मवर्णे पद्मलेश्ये, शुक्ले शुक्लरूपे
 शुक्लवर्णे शुक्ललेश्ये, इष्टे, इष्टरूपे इष्टदे, कान्ते
 कान्तरूपे कान्तदे, प्रिये प्रियरूपे प्रियदे, मनोज्ञे
 मनोज्ञरूपे मनोज्ञदे, सौम्ये, सौम्यरूपे सौम्यदे,
 शुभे, शुभरूपे शुभदे, सुभगे, सुभगरूपे सुभगदे,
 ततमे तितिमे थथमे थिथिमे, ददमे दिदिमे दुदुमे,
 धधमे धिधिमे धुधुमे, ककमे किकिमे कुकुमे,
 खखमे खिखिमे खुखुमे । ईं एं एं एं रक्ष रक्ष
 मां सर्वं ममाधीनं च सर्वं विघ्नतः ।

ॐ २६१ ॐ महाविधा—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रं संप्रदे,
 श्रीधारे, सुधारे, सुधाधारे, सुभे, सुभरूपे,
 सुभदे, रुयिरे रुयिरप्रभे; रुयिरकान्ते, रुयिर-

वर्णे, रुचिर लेश्ये, रुचिरदन्ते, सिद्धे सिद्ध-
 रूपा, सिद्धवरे, सिद्धिदे, पूर्णे पूर्णरूपा, पूर्ण-
 प्रले, सूर्यप्रले, सूर्यकान्ते, सूर्यवर्णे, सूर्य-
 लेश्ये, पद्मे, पद्मरूपा, पद्मवर्णे, पद्मलेश्ये, शुद्धे,
 शुद्धरूपा, शुद्धवर्णे, शुद्धलेश्ये, धृष्टरूपा,
 धृष्टदे, कान्ते, कान्तरूपा, कान्तदे, प्रिये, प्रियरूपा
 प्रियदे, मनोज्ञे, मनोज्ञरूपा, मनोज्ञदे, सौम्ये,
 सौम्यरूपा, सौम्यदे, शुभे, शुभरूपा, शुभदे,
 सुखे, सुखरूपा, सुखगदे, ततमे, तितिमे,
 थथमे, थिथिमे, दृढमे, दृढिमे, दुदुमे, धधमे,
 विधिमे, धुधुमे, ककमे, किकिमे, कुकुमे, ञ्जमे,
 ञ्जिमे, ञ्जुमे, ईं, औं, औं, औं भारी
 रक्षा करो, रक्षा करो, तेभ्यः सर्व विघ्नोत्थी

भारा आश्रितोनुं रक्षणु करो.

वह महाविद्या इस प्रकार—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं संपत्प्रदे० इत्यादि
विशेषणवाली हे श्रीधारा मेरी रक्षा करो, और
मेरे आश्रितों को सभी विघ्नोंसे बचाओ ।

चंद्रे चंद्ररूपे चंद्रवर्णे चंद्रलेश्ये चंद्रोत्तमे
चंद्रशेखरे, यथा शशी शिशिरकिरणैः संतापं
हरति, तथैव मम मत्परिवारस्य च दुःखदारिद्र्यं
संतापं हर हर स्वाहा । यंत्रे यंत्ररूपे मंत्रे
मंत्ररूपे तंत्रे तंत्ररूपे सर्वं मम वश्यं कुरु कुरु ।
कर्षे कर्षवति हर्षे हर्षवति मम शरीरे मम गृहे
मम कुटुम्बे अचिन्तय हर्षं कुरु कुरु । चिन्तितं
सर्वं सुखं शीघ्रं मह्यं देहि देहि ।

હે ચંદ્રે, ચંદ્રના રૂપ, વર્ણુ લેશ્યાવાળી,
 ચંદ્રથી પણ ઉત્તમ, ચંદ્રનાં કિરણો સમાન
 દેવી ! જેવી રીતે ચંદ્રમા તેનાં શીતળ કિરણો
 વડે સંતાપ નીવારે છે તેમ હે ચંદ્રે ! મારાં
 તથા મારા કુટુંબપરિવારનાં દુઃખદારિદ્ર્ય
 તથા સંતાપ હરો. યંત્રમાં યંત્રરૂપ, મંત્રમાં
 મંત્રરૂપ, તંત્રમાં તંત્રરૂપ હે દેવી ! સર્વે મને
 વશ થાય તેમ કરો. કર્ષમાં કર્ષવતિ,
 હર્ષમાં હર્ષવતિ, મારા શરીરે, મારા ઘરમાં
 મારા કુટુંબકબીલામાં, જેની ચિંતમણી પણ
 ન કરી હોય, રોમરોમમાં આનંદ ઉભરાય
 તેવો હર્ષ ઉત્પન્ન કરો. મારાં મનવાંચિછત
 સર્વ સુખ મને તત્કાળ આપો.

हे चंद्र के समान आह्लादक, चन्द्ररूप,
 चन्द्र जैसे वर्णवाली, चन्द्रसदृश लेश्यावाली,
 चन्द्र के समान उत्तम, चन्द्र के मुकुटवाली !
 जैसे चन्द्रमा अपनी शीतल किरणोंसे संताप को
 दूर करता है उसी प्रकार आप मेरे और मेरे
 परिवारके दुःख, दारिद्र्य और सन्ताप को दूर
 करो । हे यन्त्रवाली ! हे यन्त्ररूप ! हे मंत्र-
 वाली ! हे मंत्ररूप ! हे तंत्रवाली ! हे तंत्ररूप !
 सभी मेरे वश करो । हे हर्षवाली ! हे हर्षरूप !
 मेरे शरीरमें, मेरे घरमें, मेरे कुटुम्बमें अचिन्तित
 सुख दो, और मेरे चिन्तित सभी सुख मुझे दो ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं स्तनवर्षिणि
 अंकरत्न-स्फटिकरत्न-हीरक-वैडूर्यरत्न-लोहिताक्ष-

રત્ન—હંસગર્ભ—પુલાક—જ્યોતિઃ સૌગન્ધિકાદિ-
વિવિધરત્નાનિ વર્ષય । બહુધનધાન્યૈર્મમ કોશકોષ્ટા-
ગારં પૂર્ણં કુરુ કુરુ ।

ૐ હ્રીં શ્રીં ક્લીં ઐં હ્રીં શ્રીં
હે રત્નોનો વરસાદ વરસાવનારી અં કરત્ન,
સ્ફટિકરત્ન, હીરા, વૈદૂર્યરત્ન, લોહિતાક્ષરત્ન,
હંસગર્ભ, પુલાક જ્યોતિઃ, સૌગન્ધિક વગેરે
જાતનાં રત્નોની વૃષ્ટિ કરો, વૃષ્ટિ કરો. હિરણ્ય
સુવર્ણની વૃષ્ટિ કરનારી મારા ધરમાં
સોનૈયા, રૂપૈયાની વૃષ્ટિ કરો. બહુ ધન—ધાન્યથી
મારો ખજાનો ડોઠાર ભરપૂર કરો—ભંડાર
ભરપૂર કરો.

ૐ હ્રીં શ્રીં ક્લીં ઐં હ્રીં શ્રીં હે રત્ન-

वर्षिणि ! (हे रत्नोंकी वर्षा करनेवाली !) अङ्क-
 रत्न, स्फटिकरत्न, हीरा, वैडूर्यरत्न, लोहिताक्षरत्न,
 हंसगर्भ, पुलाक, ज्योतिसौगन्धिक आदि विविध
 रत्नोंकी वर्षा करो । हे हिरण्यसुवर्णवर्षिणि ! (हे
 हिरण्यसुवर्णवरसानेवाली !) मेरे घरमें हिरण्य-
 सुवर्णकी वर्षा करो ! बहुत धनधान्य से मेरे कोष
 और कोठार को पूर्ण भरो ।

अमृते, अमृतोपमे, अमृतद्रवे अमृतस्त्रवे
 अमृतवदने अमृतसेचने अमृतपूर्णे मां ममाधीनान्
 अमृतमयान् कुरु कुरु ।

अमृते ! अमृतनी उपमा तुल्य, अमृत
 सींयन करनेवाले, अमृत वरसावनवाले, अमृत
 वदनवाणी, अमृत सिंयन करवावाणी अमृत-

पूर्णा, मने अने भारा पधा आश्रितोने
तमे अमृतमय बनावो.

हे अमृते ! हे अमृतकी उपमावाला !
(हे अमृतसमान !), हे अमृत के समान
तरल !, हे अमृतकी धारा बहानेवाली !, हे
अमृत के समान मुखवाली !, हे अमृत का
सेचन करनेवाली !, हे अमृतपूर्ण ! मुझको और
मेरे अधीन सभी लोगों को अमृतमय करो ।

ऐं कामराज क्लीं शुद्धे बुद्धे बुद्धरूपे
बुद्धिदे सिद्धे सिद्धिरूपे सिद्धिदे मम सर्वकार्याणि
साधय । ॐ अहं वशिनि मोहिनि सर्वान् मम
वश्यान् कुरु कुरु सर्वान् मोहय मोहय ॐ ह्रीं
श्रीं सुखसुधाहिरण्यसुवर्णवर्षिणि मम सुखं वर्षय

२, सुधा वर्षय २, हिरण्यं वर्षय २, सुवर्ण
वर्षय २, आमंकरे प्रमंकरे, चंद्रे चंद्रकांते चंद्रा
वर्ते चंद्रवर्णे चंद्रलेश्ये चंद्रश्रेष्ठे चंद्रशेखरे सूर्ये
सूरप्रभे सूरकांते सूरलेश्ये सूरश्रेष्ठे सूरशेखरे मम
लोकोत्तरं सुखदं चमत्कारं कुरु २ ॐ ह्रीं
घृणिः सूर्यः आदित्यः श्रीं मम सर्वाधिव्याधि-
चिन्तारोगशोकान् नाशय २, मम तुष्टिं पुष्टिं
सुखं च कुरु कुरु । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो
भगवति अन्नपूर्णे धनधान्यं वर्षय २ । सर्व-
सिद्धिदायिनि सर्वसुखदायिनि श्रीसीमंभरस्वामिनं
सर्वज्ञं सर्वदर्शिनं जिनमनुस्मर, गणधर, सत्य-
मनुस्मर, निर्ग्रन्थप्रवचनमनुस्मर, आदिनाथजिन-
मनुस्मर, शान्तिनाथजिनमनुस्मर, पार्श्वनाथजिन-

મનુસ્મર, વર્દ્ધમાનજિનમનુસ્મર, શેષસર્વજિનમનુસ્મર, અવધિજિનમનુસ્મર, મનઃપર્યયજિનમનુસ્મર, કેવલિ-
જિનમનુસ્મર, આમશૌષધિમનુસ્મર, વિપ્રુહોષધિ-
મનુસ્મર, બીજવુદ્ધિમનુસ્મર, અક્ષીણમહાનસ-
લઙ્ઘિધરમનુસ્મર, નવપૂર્વ ધરમનુસ્મર યાવચ્ચતુર્દશ-
પૂર્વધરમનુસ્મર વૈક્રિયલઙ્ઘિધરમનુસ્મર, આહારક-
લઙ્ઘિધરમનુસ્મર ।

ઐં કામરાજ રૂપીં શુદ્ધ, યુદ્ધ, યુદ્ધિ-
રૂપી, યુદ્ધિ દેનારી, સિદ્ધિ, સિદ્ધિરૂપી, સિદ્ધિ
દેનારી મારાં સર્વકાર્યો સાધી આપો. ૐ અર્ધ-
વશિનિ, મોહિનિ સર્વ મારે વશ થાય તેવું કરો,
સર્વને મારા ઉપર મોહ થાય તેવું કરો.

ૐ હ્રીં શ્રીં સુખ, અમૃત, હિરણ્ય-
સુવર્ણ વરસાવનારી મારા ઉપર સુખ વરસાવો,

અમૃત વરસાવો. રૂપું વરસાવો. સુવર્ણ
 વરસાવો—હે દેવી ! આભંકરે, પ્રભંકરે,
 ચંદ્રે, ચંદ્રાકાન્તે, ચંદ્રાવર્તે, ચંદ્રવર્ણે, ચંદ્ર-
 લેશ્યે, ચંદ્રશ્રેષ્ઠે, ચંદ્રશેખરે, સૂરે, સૂરપ્રભે,
 સૂરકાન્તે, સૂરલેશ્યે, સૂરશ્રેષ્ઠ સૂરશેખરે, મને
 લોકોત્તર સુખ આપે તેવો ચમત્કાર કરો ॐ
 હ્રીં ધૃણી સૂર્યઃ આદિત્યઃ શ્રીં મારાં સર્વ
 આધિ, વ્યાધિ, ચિંતા, રોગ, શોક વગેરેનો નાશ
 કરો. મને સંતોષ થાય, પુષ્ટિ મળે, સુખ થાય
 તેવું કરો—ૐ હ્રીં શ્રીં ક્લીં હે ભગવતિ
 અન્નપૂર્ણા તમને મારા નમસ્કાર હજો. તમે
 મારે ત્યાં ધનધાન્યની વૃષ્ટિ કરો. સર્વ
 સિદ્ધિ દેનારી, સર્વ સુખ દેનારી, સર્વજ્ઞ,

સર્વ દર્શિત જીનેશ્વર સિમંધર સ્વામીનું
 સ્મરણ કરો, ગણધર સત્યનું સ્મરણ કરો,
 નિર્ઘંથના પ્રવચનનું સ્મરણ કરો, આદી-
 શ્વર ભગવાનનું સ્મરણ કરો, શાંતિનાથ ભગ-
 વાનનું સ્મરણ કરો, પાર્શ્વનાથ ભગવાનનું
 સ્મરણ કરો, ભગવાન મહાવીરનું સ્મરણ કરો,
 બાકી રહેલા સર્વ કર ભગવાનનું સ્મરણ કરો,
 અવધિજ્ઞાની જીનેશ્વરનું સ્મરણ કરો, મનઃપર્ય-
 યજ્ઞાની જીનેશ્વરનું સ્મરણ કરો, કેવળજ્ઞાનીનું
 સ્મરણ કરો, અમશૌષધિ લઙ્ઘિધારીનું
 સ્મરણ કરો, વિપ્રદોષધિ લઙ્ઘિધારીનું સ્મરણ
 કરો, નીજ્યુદ્ધિધારીનું સ્મરણ કરો, અક્ષીણ
 મહાનસલઙ્ઘિધારીનું સ્મરણ કરો. નવપૂર્વ-

धारीनुं स्मरणुं करो, दशथी तेर सुधीना पूर्व-
धरोनुं अने यौदभा पूर्वधरनुं स्मरणुं करो,
वैक्रिय लब्धिवधरनुं स्मरणुं करो, व्याहारक
लब्धिवधरनुं स्मरणुं करो.

ऐं कामराजकली, हे शुद्धे ! हे बुद्धे !
हे बुद्धरूपे ! हे बुद्धिदे ! हे सिद्धे ! हे सिद्धि-
रूपे ! हे सिद्धिदे ! मेरे सभी कार्यों को सिद्ध
करो । ॐ अहं हे वशिनि ! हे मोहिनि !
सभी को मेरे वश करो । सभी को मोहित
करो । ॐ ह्रीं श्रीं हे सुखसुधा-हिरण्यसुवर्ण को
बरसानेवाली ! मेरे लिये सुख की वर्षा करो,
सुधाकी वर्षा करो, हिरण्य की वर्षा करो,
सुवर्ण की वर्षा करो । हे आभंकरे ! हे

प्रभंकरे ! हे चन्द्रे हे चन्द्रकान्ते ! हे चन्द्रावर्त्ते !
 हे चन्द्रवर्णे ! चन्द्रलेश्ये ! हे चन्द्रश्रेष्ठे ! हे चन्द्र-
 शेखरे ! हे सूर ! हे सूरप्रभे ! सूरकांते ! हे सूरलेश्ये !
 हे सूरश्रेष्ठे ! हे सूरशेखरे ! मुझको लोकोत्तर
 सुखदायीं चमत्कार दे । ॐ ह्रीं, घृणिः सूर्य-
 आदित्यः श्रोँ मेरे समी आधि, व्याधि, चिन्ता,
 रोग, शोकों को नष्ट करो, मुझको तुष्टि, पुष्टि
 और सुख दे । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हे सर्वसिद्धि-
 दायिनि ! हे सर्वसुखदायिनि ! सर्वज्ञ, सर्वदर्शी
 श्री सीमन्धर स्वामी जिनका स्मरण करो, गण-
 धरसत्य का स्मरण करो, निर्ग्रन्थ प्रवचन का
 स्मरण करो, आदिनाथजिन का स्मरण करो,
 शान्तिनाथजिन का स्मरण करो, पार्श्वनाथजिन का

स्मरण करो, वर्धमानजिन का स्मरण करो, शेष सभी जिनों का स्मरण करो, अवधिजिनों का स्मरण करो, मनः-पर्ययजिनों का स्मरण करो, केवलजिनों का स्मरण करो, आमशौषधिलब्धिधारियों का स्मरण करो, विप्रडोषधिलब्धिधारियों का स्मरण करो, बीजबुद्धिलब्धिधारियों का स्मरण करो, अक्षोणनहानसलब्धिधारियों का स्मरण करो, नवपूर्वधारियों का स्मरण करो, यावत्-चौदहपूर्वधारियों का स्मरण करो, वैक्रियलब्धिधरे का स्मरण करो, आहारकलब्धिधरे का स्मरण करो.

सकलजिनशासनदेवमनुस्मर, सकलजिन-
शासनदेवीमनुस्मर, बलकूटे बलदेवमनुस्मर, गंध-

માદને ગંધમાદનદેવમનુસ્મર, બ્રાહ્મીં સુન્દરીમનુસ્મર,
 શ્રીદેવીમનુસ્મર, નન્દનકૂટવાસિનીં મેઘંકરાદેવી-
 મનુસ્મર, મન્દરકૂટવાસિનીં મેઘવતીદેવીમનુસ્મર,
 નિષધકૂટવાસિનીં સુમેધાદેવીમનુસ્મર, હૈમવતકૂટ-
 વાસિનીં મેઘમાલિનીદેવીમનુસ્મર, રજતકૂટવાસિનીં
 સુવત્સાદેવીમનુસ્મર, રુચકકૂટવાસિનીં વત્સમિત્રા-
 દેવીમનુસ્મર, સાગરચિત્રકૂટવાસિનીં વૈરસેનાદેવી-
 મનુસ્મર, વજ્રકૂટવાસિનીં બલાહકાદેવીમનુસ્મર ।

સકળ જીનશાસનદેવનું સ્મરણ કરો.
 સકળ જીનશાસનદેવીનું સ્મરણ કરો. બલ-
 કુટમાં બિરાજમાન બલદેવનું સ્મરણ કરો,
 ગંધમાદનમાં બિરાજતી ગંધમાદનદેવનું
 સ્મરણ કરો, સતી બ્રાહ્મી—સુન્દરીનું સ્મરણ

करो, श्रीदेवीनुं स्मरण करो, नंदनकूटनिवासी
 मेधकरा देवीनुं स्मरण करो, मंदरकूटनिवासी
 मेधवती देवीनुं स्मरण करो, निषधकूटनिवासी
 सुमेधादेवीनुं स्मरण करो, छैभवतकूट निवासी
 मेधमालिनीदेवीनुं स्मरण करो, रजतकूट-
 निवासी सुवत्सादेवीनुं स्मरण करो, रुच्यकूट
 निवासी वत्समित्रादेवीनुं स्मरण करो, सागर
 त्रिकूटनिवासी वैरसेनादेवीनुं स्मरण करो,
 प्रगल्भकूटनिवासी अलाहकादेवीनुं स्मरण करो.

सभी जिनशासनदेवों का स्मरण करो,
 सभी जिनशासनदेवियों का स्मरण करो, बलकूट
 पर्वत निवासी बलदेव का स्मरण करो, गन्ध-
 मादम पर्वत निवासी गन्धमादनदेव का स्मरण करो,

ब्राह्मो और सुन्दरी का स्मरण करो, नन्दनकूट में रहनेवाली मेघंकर देवी का स्मरण करो, मन्दकूटमें रहनेवाली मेघवती देवी का स्मरण करो, निषधकूटमें रहनेवाली सुमेधा देवी का स्मरण करो, हैमवत कूटमें रहनेवाली मेघमालिनि देवी का स्मरण करो, रजतकूट में रहनेवाली सुवत्सादेवी का स्मरण करो, रुचककूट में रहनेवाली वत्समित्रादेवी का स्मरण करो, सागरचित्रकूट में रहनेवाली वैरसेनादेवी का स्मरण करो, वज्रकूट में रहनेवाली बलाहका देवी का स्मरण करो !

धन्यशालिभद्रमनुस्मर ॥ ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मी-
देवी आगच्छ २ मम गृहे मम निवासस्थाने धन-
धारां वर्षय २, सर्व मनवांछितं पूरय २, क्षण-

मीक्षणैः मम सर्वं क्षणं सुखमयं कुरु कुरु ।

धन्ना शालिभद्रनुं स्मरण करो. ॐ ह्रीं
श्रीं लक्ष्मीदेवी पधारो, भारा धरमां आपनी
पधारामणी करो, भारा निवासस्थाने भारा
धरमां धननी धारा वरसावी—धननी वृष्टि करो,
भारा मननी सर्व भुराद पूर्ण करो. काणनी
गतिमां वहेती भारी डरेक पण—समय सुख-
मय बनावे।

धन्यशालि भद्र का स्मरण करो ।

ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीदेवी ! आओ, मेरे धर
मेरे निवास्थान में धनधारा की वृष्टि करो, मेरे
सभी वांछित को पूर्ण करो, प्रति क्षण मेरे
सभी क्षण—समय को सुखमय करो ।

पद्मा श्रीं मन्मथ क्लीं हृदयं नमः सुप्र-
तिष्ठे वरिष्ठे शमे शमप्रमे महाप्रमे भासुरे भासुर-
प्रमे मम सर्वमनोरथं पूरय । धनधान्यहिरण्यसुवर्ण-
विविधरत्नवृष्टि कुरु कुरु ।

पद्मा श्रीं मन्मथ क्लीं हृदयं नमः
सुप्रतिष्ठे, श्रेष्ठे, वरिष्ठे, गरिष्ठे, शमे, शम-
प्रमे, महाप्रमे, भासुरे, भासुरप्रमे, भासुर-
सर्व मनोरथ पूर्ण करो. धनधान्य हिरण्य,
सुवर्ण तथा तरेख तरेखनां रत्नोंनी वृष्टि करो.

पद्मा श्रीं मन्मथ क्लीं हृदयं नमः । — हे
सुप्रतिष्ठे ! हे श्रेष्ठे ! हे वरिष्ठे ! हे गरिष्ठे ! हे
शमे ! हे शमप्रमे ! हे महाप्रमे ! हे भासुरे ! मेरे,
सभी मनोरथो को पूर्ण करो, धन, धान्य,

हिरण्य, सुवर्ण और विविध रत्नों की वृष्टि करो ।

ॐ ह्रीं श्रीं रूपे प्रसीद २ । ॐ श्रीं
 दिव्यानुभावे प्रसीद २ । ॐ श्रीं उज्ज्वले प्रसीद
 २, ॐ ह्रीं श्रीं उज्ज्वलरूपे प्रसीद २ । ॐ
 श्रीं ज्योतिर्मयि प्रसीद २ । ॐ श्रीं ज्योतिरूपधरे
 प्रसीद २ मम गृहं मम गृहस्य अंगणं नन्दनवनं
 कुरु कुरु । ॐ अमृतकुम्भे प्रसीद २ । ॐ
 अमृतकुम्भरूपे प्रसीद २ मम वाञ्छितं देहि २ ।
 ॐ ऋद्धिदे प्रसीद २, ॐ समृद्धिदे प्रसीद २,
 ॐ महालक्ष्मि प्रसीद २, ॐ श्रीं लोकमातः
 प्रसीद २, ॐ श्रीं लोकजननि प्रसीद २, ॐ
 श्रीं शोभावर्द्धिनि प्रसीद २, ॐ श्रीं अमृत-
 संजीवनि प्रसीद २, ॐ श्रीं शान्त लहरि

પ્રસીદ ૨, ઐ શ્રીં પ્રશાન્તલહરિ પ્રસીદ ૨, ઐશ્રીં
 શાંતપ્રશાંતલહરિ પ્રસીદ ૨ । ઐ શ્રીં ગ્લૌં
 શ્રીં નમઃ, ઐ હ્રીં શ્રીં સર્વશત્રુદમનિ સર્વશત્રૂન્
 નિવારય ૨ વિઘ્નં છિન્ધિ ૨ પ્રસીદ ૨ ધરણેન્દ્રપદ્મા-
 વતિ મમ સુખં કુરુ ૨ પ્રસીદ ૨ ।

ઐ હ્રીં શ્રીં લક્ષ્મીરૂપે પ્રસન્ન થાઓ.
 ઐ શ્રીં દિવ્યાનુભાવે પ્રસન્ન થાઓ. ઐ શ્રીં
 ઉજ્જવલસ્વરૂપા પ્રસન્ન થાઓ. ઐ શ્રીં
 ઉજ્જવલરૂપા પ્રસન્ન થાઓ ઐ શ્રીં જ્યોતિ-
 ર્માયિ પ્રસન્ન થાઓ ઐશ્રીં જ્યોતિરૂપધરા પ્રસન્ન
 થાઓ, મારું ધર અને મારા ધરના આંગણાને
 નંદનવન સમાન કરો—નંદનવન બનાવો. ઐ
 અમૃતકુંભા પ્રસન્ન થાઓ. ઐ અમૃતકુંભા-

રૂપા પ્રસન્ન થાઓ. મારી મનોકામના પૂર્ણ
 કરો. ઐ શ્રદ્ધિદા પ્રસન્ન થાઓ. ઐ સમૃદ્ધિદા
 પ્રસન્ન થાઓ. ઐ શ્રી મહાલક્ષ્મીદેવી પ્રસન્ન
 થાઓ. ઐ શ્રી લોકમાતા પ્રસન્ન થાઓ. પ્રસન્ન
 થાઓ. ઐ શ્રી લોકજનનિ પ્રસન્ન થાઓ. ઐ શ્રી
 શોભાવર્ધિની પ્રસન્ન થાઓ. ઐ શ્રી અમૃત-
 સંજીવનિ પ્રસન્ન થાઓ. ઐ શ્રી શાન્તલહરિ
 પ્રસન્ન થાઓ. ઐ શ્રી શાંત પ્રશાંતલહરિ પ્રસન્ન
 થાઓ. ઐ શ્રી ગ્લૌં શ્રી નમઃ ઐ હ્રીં સર્વ-
 શત્રુદમનિ મારા સર્વ શત્રુઓનું નિવાણ
 કરો. વિઘ્ન કાષો પ્રસન્ન થાઓ. હે ધરણેન્દ્ર
 અને પદ્માવતી મને સુખી કરો. પ્રસન્ન
 થાઓ.

ॐ ह्रीं श्रीं रूपे (प्रज्ञस्त रूपवाली)
मेरे ऊपर प्रसन्न होओ । ॐ श्रीं हे दिव्यानु-
भावे ! (दिव्यप्रभावशाली !) मेरे उपर
प्रसन्न होओ । ॐ ह्रीं श्रीं हे उज्ज्वले !
प्रसन्न होओ । ॐ ह्रीं श्रीं हे उज्ज्वलरूपे !
प्रसन्न होओ । ॐ ह्रीं श्रीं हे ज्योतिर्मय !
प्रसन्न होओ । ॐ ह्रीं श्रीं हे ज्योती रूप-
धरे ! प्रसन्न होओ, मेरे घर को, मेरे घर के
आंगन को नन्दनवन करो । ॐ हे अमृत
कुम्भे प्रसन्न होओ । ॐ हे अमृत कुम्भरूपे !
प्रसन्न होओ, मेरे सभी वाञ्छित पूर्ण करो,
ॐ हे ऋद्धिदे ! प्रसन्न होओ, ॐ हे समृद्धिदे !
प्रसन्न होओ, ॐ श्रीं हे महालक्ष्मी ! प्रसन्न

होओ, ॐ श्रीं हे लोकमाता ! प्रसन्न होओ,
 ॐ श्रीं हे लोकजननि ! प्रसन्न होओ, ॐ
 श्रीं हे शोभावर्द्धिनि ! (शोभा बढ़ाने वाली)
 प्रसन्न होओ, ॐ श्रीं हे अमृतसंजीवनि !
 प्रसन्न होओ, ॐ श्रीं हे शान्तलहरी ! प्रसन्न
 होओ, ॐ श्रीं प्रशान्तलहरी प्रसन्न
 होओ, ॐ श्रीं शान्तप्रशान्तलहरी प्रसन्न
 होओ, ॐ श्रीं ग्लौं श्रीं आपको नमस्कार
 हो ! ॐ ह्रीं सभी शत्रुओंका दमन करने
 वाली ! सभी शत्रुओंका निवारण करो, विधका
 छेदन करो, प्रसन्न होओ, हे, धरणेन्द्र पद्मा-
 वति ! मुझे सुख दो, प्रसन्न होओ !

मूलमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं असिआउसाणं नमः ।

भूणमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं असिआउसाणं नमः

श्री अरिहंत देवने नमस्कार करुं छुं.

श्री सिद्ध भगवानने नमस्कार करुं छुं.

श्री आचार्यजने नमस्कार करुं छुं.

श्री उपाध्यायजने नमस्कार करुं छुं.

लोकने विषे विचरतां साधु—साध्वीज-
याने नमस्कार करुं छुं.

मूलमन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं असि आउसाणं नमः ।

१ श्रीं अरिहन्त देवको नमस्कार हो ।

२ श्रीं सिद्धभगवानको नमस्कार हो ।

३ श्रीं आचार्यको नमस्कार हो ।

४ श्रीं उपाध्यायको नमस्कार हो ।

५ लोक में विराजमान सभी साधु—

साध्वीयोंको नमस्कार हो ।

ॐ मंगलकरि प्रसीद, २, सुखकरि प्रसीद
 २, ॐ शान्तिकरि प्रसीद २, ॐ ऋद्धिसिद्धिकरि
 प्रसीद २, सुखं देहि, शान्तिं देहि, ऋद्धिसिद्धि
 देहि, ॐ किलिकिलि एहिणहि आगच्छ आगच्छ
 सर्वसिद्धिदायिनि मम मनोवाञ्छितं शीघ्रं पूरय पूरय ।

ॐ मंगल करनेारी प्रसन्न थाओ, ॐ
 सुख करनेारी प्रसन्न थाओ, ॐ शान्ति
 करनेारी प्रसन्न थाओ. ॐ रिद्धि सिद्धि कर-
 नारी प्रसन्न थाओ, सुख आपो, शान्ति
 आपो, रिद्धि सिद्धि आपो, ॐ कलि कलि
 ओहि—ओहि, पधारे पधारे, हे सर्वसिद्धि-
 दायिनि भारी मनोकामनाओ तुरत पूर्ण करे.

ॐ हे मङ्गल करनेवाली ! प्रसन्न होओ

ॐ हे सुख करनेवाली ! प्रसन्न होओ, हे
 शान्ति करनेवाली ! प्रसन्न होओ, हे
 अद्विसिद्धि करनेवाली ! प्रसन्न होओ, सुख
 दो, शान्ति दो, अद्विसिद्धि दो, किलि-
 किलि ! एहि एहि (आओ आओ) आगच्छ
 आगच्छ (आओ आओ) हे सभी सिद्धियोंको
 देनेवाली । मेरे सभी मनोवाञ्छितोंको शीघ्र
 पूर्ण करो ।

साध्यमंत्र—ॐ श्रीं धारे प्रसीद प्रसीद ।
 उपहृदयम्—ॐ श्रीं त्रिलोकवासिन्यै केवल लक्ष्म्यै
 नमः धनधान्यहिरण्यसुवर्णधारां ममनिवासे पातय
 २ । ॐ श्रीं रत्नसिंहासने प्रसीद २, ॐ
 कमलासने प्रसीद २ । ॐ रत्नकुण्डले प्रसीद

૨, ॐ રત્નમુકુટે પ્રસીદ ૨ । ॐ રત્નભૂષણે
 પ્રસીદ ૨ । ॐ ચારુચ્છત્રચામરે પ્રસીદ ૨,
 ॐ સહસ્રકિરણપદ્મોત્કરિ સર્વરાજવશકરિ
 સર્વપ્રજાવશકરિ સર્વલોકવશકરિ સર્વ મમ વશ્ય
 કુરુ કુરુ ।

સાધ્યમત્ર-ॐ શ્રીધારા પ્રસન્ન થાઓ
 ઉપદ્રવ્યમ્ ॐ ત્રણે લોકમાં નિવાસ કરનાર
 કેવલલક્ષ્મીને મારા નમસ્કાર હજો. ધનધાન્ય,
 હિરણ્ય સુવર્ણની ધારા મારા ધરમાં વર-
 સાવો. ॐ શ્રી રત્નસિંહાસનવાળી પ્રસન્ન
 થાઓ. ॐ કમલાસનવાળી પ્રસન્ન થાઓ.
 ॐ રત્નકુંડલવાળી પ્રસન્ન થાઓ. ॐ રત્ન-
 મુકુટવાળી પ્રસન્ન થાઓ. ॐ રત્નભૂષણવાળી

प्रसन्न थाओ। ॐ सुंदर छत्र्याभरयुक्त
प्रसन्न थाओ। ॐ हे उज्जर किरणोना प्रका-
शथी तेजोमयी सर्व राज्ञोने वश करनारी
सर्व प्रजने वश करनारी हे देवी ! सर्व मने
वश थाय तेवुं करे।

उपहृदय — ॐ त्रिलोकवासिनी लक्ष्माको
नमस्कार हो, धन, धान्य, हिरण्य, सुवर्णकी
धारा मेरे घरमें वरसाओ ! ॐ हे रत्न-
सिंहासने ! (रत्नसिंहासनवाली !) प्रसन्न होओ ।

हे कमलासने ! (कमलके आसनवाली !)
प्रसन्न होओ । हे रत्नकुण्डवाली ! प्रसन्न
होओ । हे रत्नमुकुटवाली ! प्रसन्न होओ,
ॐ हे रत्नोंके भूषणवाली ! प्रसन्न होओ ।

ॐ हे चारु (सुन्दर) छत्र और चामरवाली !
 प्रसन्न होओ । ॐ हे सहस्र किरणों से प्रकाश
 करनेवाली ! हे सभी राजाओंको वश कर-
 नेवाली ! हे सभी प्रजाको वश करनेवाली !
 हे सभी लोगोंको वश करनेवाली ! सभीको
 मेरे वशमें करो !

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महामायः प्रसीदतु ।
 इन्द्रः प्रसीदतु । सूर्यः प्रसीदतु । सोमः प्रसी-
 दतु । यमः प्रसीदतु । वरुणः प्रसीदतु । वैश्र-
 वणः प्रसीदतु । हरिणैगमेषिदेवः प्रसीदतु ।
 त्रिजृम्भकः प्रसीदतु । शब्दापातिस्वामि स्वाति-
 देव प्रसीद २ । विकटा पातिस्वामिप्रभासदेव
 प्रसीद २ । गंधापातिस्वाम्यरुणदेव प्रसीद २ ।

माल्यवदद्रिस्वामिपद्मदेव प्रसीद सर्वदिशाभ्यः
सर्वविदिशाभ्यः कल्पलतेव मम वाञ्छितं पूरय २ ।

ॐ ह्रीं श्रीं इलीं डेवण लक्ष्मी प्रसन्न
थाओ. धन्द्रप्रसन्न थाओ. सूर्य प्रसन्न थाओ.
सोम (यंद्र) प्रसन्न थाओ. यम प्रसन्न
थाओ. वरुण प्रसन्न थाओ. वैश्रवाण
प्रसन्न थाओ. हरिणैगमेषिदेव प्रसन्न
थाओ. त्रिभृभक्त देव प्रसन्न थाओ.
शब्दापाति पर्वतना अधिपति स्वातिदेव
प्रसन्न थाओ. विकटापाति पर्वतना अधि-
पति प्रभासदेव प्रसन्न थाओ. गंधापाति
पर्वतना अधिपति अरुणदेव प्रसन्न थाव.
माल्यवदद्रिपर्वतना अधिपति पद्मदेव

प्रसन्न थाव. सर्व दिशाथी सर्व विदिशाथी
 कटपलता सभा भारा सर्व मनोरथ
 पूर्ण करो.

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महामाया प्रसन्न
 होओ ! इन्द्र प्रसन्न होओ ! सूर्य प्रसन्न
 होओ ! सोम प्रसन्न होओ ! यम प्रसन्न
 होओ । वरुण प्रसन्न होओ । वैश्रवण प्रसन्न
 होओ । हरिणैगर्मेष देव प्रसन्न होओ ।
 त्रिजुम्भक देव प्रसन्न होओ । शब्दापाति
 पर्वतके स्वामी हे स्वातिदेव ! प्रसन्न होओ ।
 विकटापाति पर्वतके स्वामी हे प्रभासदेव !
 प्रसन्न होओ । गन्धापाति पर्वत के स्वामी
 हे अरुणेदेव ! प्रसन्न होओ । माल्यवान्

पर्वतके स्वामी हे पद्मदेव ! प्रसन्न होओ ।
सभी दिशाओंसे कल्पलताके समान मेरे वाञ्छित
पदार्थोंको पूर्ण करो ।

अनुमोदयन्तु मां मन्त्राधिष्ठितदेवाः ।

शम २ मज २ सज २ उज २ तर
२ मिल २ दिल २ पुल २ फुल २ ।

हे मन्त्रना अधिष्ठित देवो ! भने
अनुमोदन आपो. शम—शम, मज—मज,
सज—सज, उज—उज, तर—तर, मिल—
मिल, दिल—दिल, पुल—पुल, फुल—फुल.

हे मन्त्राधिष्ठित देवो ! मेरा अनुमोदन
करो । शम २ मज २ सज २ उज २ तर
२ मिल २ दिल २ पुल २ फुल २ ।

દયામયિ દયસ્વ ૨ માં, જાગૃષ્વ ૨
 ઉત્તિષ્ઠ ૨ સુખકરં ૨ હિરણ્યસુવર્ણં દેહિ
 ૨ દાપય ૨ મહ્યં હિતકરં શાંતિકરં કુલકરં
 વંશકરં વંશવૃદ્ધિકરં । મહાપદ્મહૃદનિવાસિનિ હ્રી
 દેવિ મમ લજ્જાં રક્ષ ૨ । મહાપુંડરીકહૃદનિવાસિનિ
 બુદ્ધિદેવિ મમ બુદ્ધિ દેહિ ૨ । તિગિચ્છદ્મહૃદ-
 નિવાસિનિ ધૃતિદેવિ મમ ધૈર્યં કુરુ ૨ ।
 કેસરિદહ્નિવાસિનિ કીર્તિદેવિ મમ યશઃ કીર્તિં
 પ્રસારય ૨ ।

હે દયામયિ ! મારા ઉપર દયા કરો,
 મારું રક્ષણ કરો. જગો, જગો, ઊઠો-ઊઠો
 સુખ ઉપજાવે તેવું તેટલું હિરણ્ય સુવર્ણ
 આપો, અપાવો. મને હિતકારક, શાંતિ-

કારક, કુળવંશ રાખનાર તથા મારા ધર્મ-
વંશની વૃદ્ધિ કરનાર આપો—અપાવો. હે
મહાપદ્મ હૃદમાં ખિરાજતી હ્રીં દેવી ! મારી
ધન્યજત આબરૂનું રક્ષણ કરો. હે મહાપુંડ-
રીક હૃદમાં ખિરાજતી બુદ્ધિદેવી ! મને બુદ્ધિ
આપો. તિગિચ્છ હૃદમાં ખિરાજતી હે ધૃતિ-
દેવી મને ધૈર્યવાન બનાવો. હે કેસરિ હૃદમાં
ખિરાજતી હે કીર્તિદેવી ! મારો યશ અને
મારી કીર્તિ ચોમેર ફેલાવો.

હે દયામયિ ! મેરે ઉપર દયા કરો
૨ જાગો ૨ ઉઠો ૨ સુખકર હિરણ્ય સુવર્ણ
દો, મુક્તિદાતા, શાન્તિકર, કુલકર, વંશકર,
વંશવૃદ્ધિકર, હિરણ્ય સુવર્ણ દિલાઓ । મહાપદ્મહૃદ

में निवास करनेवालो हे ही देवी ! मेरी लज्जा रखो । महापुण्डरीक हृद में निवास करनेवाली हे बुद्धिदेवी ! मुझे बुद्धि दो । तिगिच्छ हृद में निवासकरनेवाली हे धृतिदेवी ! मुझे धैर्य दो । केसरि हृद में निवासकरनेवाली हे कीर्तिदेवी ! मेरे यश और कीर्तिको फैलाओ ।

ॐ ह्रीं विश्वरूपिणि, विभूति विभूतिरूपिणि-
सृष्टि सृष्टिरूपिणि, धृति धृतिरूपिणि, कीर्ति
कीर्तिरूपिणि, सिद्धि सिद्धिरूपिणि, सवसुख-
साम्राज्यदायिनि मम त्रिलोकसंपदं कुरु कुरु, हिरण्य-
सुवर्णैः सुखसिद्धिसौभाग्यैः श्रेष्ठैः सर्वोपकरणैः
सर्वभोगैः सर्वोपभोगैश्च मम कोषकोष्ठागाराणि
भर भर पूरय पूरय ।

ૐ હી વિશ્વરૂપિણિ, વિભૂતિ-વિભૂતિ-
રૂપિણિ, સૃષ્ટિ સૃષ્ટિરૂપિણિ, ધૃતિ-ધૃતિરૂપિણિ,
કીર્તિ-કીર્તિરૂપિણિ, સિદ્ધિ-સિદ્ધિરૂપિણિ,

હે સર્વ સુખ સામ્રાજ્ય દેનારી દેવી !
ત્રણે લોકની સંપત્તિ મને આપો. હિરણ્ય,
સુવર્ણસુખ, સિદ્ધિ સૌભાગ્યથી, શ્રેષ્ઠ સર્વ
ઉપકરણોથી, સર્વભોગોથી, સર્વ ઉપભોગોથી
મારો ખજાનો-ભંડાર ઠાંસોઠાંસ ઠાંસીને
ભરપૂર કરો.

ૐ હીં હે વિશ્વરૂપિણિ ! હે વિભૂતિ ! હે
વિભૂતિરૂપિણિ ! હે સૃષ્ટિ ! હે સૃષ્ટિરૂપિણિ હે
ધૃતિ ! હે ધૃતિરૂપિણિ ! હે કીર્તિ ! હે
કીર્તિરૂપિણિ ! હે સિદ્ધિ ! હે સિદ્ધિરૂપિણિ !

हे सभी सुख और साम्राज्यको देनेवाली ! मुझे तीनों लोकोंकी सम्पत्ति दो, हिरण्यों से, सुवर्णों से, सिद्धियों से, सौभाग्यों से, श्रेष्ठ सभी सामग्रियों से, सभी भोगों से और सभी उपभोगों से मेरे कोष और कोठारोंको भरो, पूर्ण करो ।

मूलविद्या—

ॐ नमिऊण असुरसुरगरुलभुयंगपरिवंदिय
 गयकिलेसे । अरिहा सिद्धायरिय उवज्झाय
 सव्वसाहुणो ॥

ॐ ह्रीं नमः धनदपुत्रि जगत्सवित्रि
 अष्टसिद्धिप्रधानमहानिधान सुवर्णकोटि रत्नकोटि
 शतसहस्रसंपन्ने आगच्छ २ भगवति मम गृहे
 मम पुरे प्रविश प्रविश मम अक्षीण सर्वधनं
 धारारूपेण वर्षय वर्षय ।

ॐ ह्रीं नमः हे धनदपुत्रि ! जगत्-
सवित्रि, आठ सिद्धियोंमां मुખ्य महानव-
निधान, सुवर्णकोटि, रत्नकोटि, लाखो-
संपत्ति साथे पधारो. हे भगवति ! मेरा
घरमां, मेरा नगरमां प्रवेश करो. मेरा
घरमां अक्षय अने वर्धमान सर्वधननी
अस्थलित धारा वडे वृष्टि करो.

ॐ ह्रीं नमः हे धनदपुत्रि ! हे जगत्स-
वित्रि ! हे अष्टसिद्धिप्रधान महानिधानवाली !
लक्षलक्ष सुवर्णकोटि और रत्नकोटियों से युक्त !
आओ २, हे भगवति ! मेरे घर में, मेरे पुर
में प्रवेश करो, मेरे लिये सभी प्रकारके
अक्षीण धनोंको धारारूप में बरसाओ ।

મહાવિદ્યા—

ૐ હ્રીં શ્રીં શ્રીધારે મમ ચિંતિતસુખ-
દાયિનિ અચિંતિતસુખદાયિનિ પ્રસીદ ૨ મમ સર્વ
કાર્યં સાધય સાધય ।

મહાવિદ્યા—

ૐ હ્રીં શ્રીં મારાં ચિંતવેલાં સુખો
આપનારી તથા મારા શમણામાં પણ નથી
એવાં વણચિંતવ્યાં સુખોની આપનારી
હે શ્રીધારા દેવી ! પ્રસન્ન થાવ. મારાં સર્વ-
કાર્યો સિદ્ધ કરો. મારા મનના મનોરથ
પરિપૂર્ણ કરો.

सर्वसुखनिधियंत्रः-

श्र	श्र	व	व
य	य	अ	अ
६	६	ध	ध

महाविद्या—

ॐ होँ श्रीँ श्रीधारे मम चिंतित सुख-
दायिनि अचिंतित सुखदायिनि प्रसीद २ मम
सर्वं कार्यं साधय ।

सर्वसुखनिधियंत्र —

श्र	श्र	व	व
ब	ब	झ	झ
द	द	ध	ध

ॐ नमः श्रीधारे चिंतामणि महाविद्ये
 करुणशरणे दीनभरणे जगदुद्धरणे विमलकमल-
 वासिनि हिरण्य-सुवर्ण-धनधान्यकरि मम सकलार्थ-
 सिद्धिं प्रापय प्रापय, सर्वचिंतां चूरय चूरय,
 सर्वरिपून् स्तम्भय २ निवारय २, जंभय २,
 मोहय २, सुखदे शिवदे शान्तिदे शुभदे प्रमोददे
 मम सर्वसौभाग्यं ऋद्धिं सिद्धिं समृद्धिं वश्यं रक्षां
 च कुरु कुरु, मम जयं विजयं च कुरु कुरु ॥

परमहृदयम्

नमः श्रीधारे चिंतामणि महाविद्या
 आपत्तिमां आवी पडेला उपर करुणाभाव
 राभीने शरण आपवावाणी, गरीयोनुं लरण-
 पोषणु करवावाणी, जगतनो उद्धार करवावाणी,

વિમળ કમલમાં નિવાસ કરાવાળી, હિરણ્ય,
 સુવર્ણ, ધનધાન્ય નિપજવનારી હે દેવી !
 મારા સકળ અર્થની સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરાવો.
 મારી સર્વ આધિ, વ્યાધિ, ઉપાધિઓ હરી
 લો. મારા સર્વ શત્રુઓને થંભાવી દો, તેનું
 નિવારણ કરો. મારા શત્રુઓને સ્તંભિત
 કરો. મારા ઉપર મમતા રાખો. હે સુખ
 દેનારી, કલ્યાણ કરનારી, શાંતિ દેનારી, શુભ
 કરનારી, આનંદ પ્રમોદ દેનારી, મારું સર્વ
 સૌભાગ્ય, રિક્તિ, સિદ્ધિ, સમૃદ્ધિ અને મારા
 વંશનું રક્ષણ કરો. મારો જય—વિજય
 થાય તેવું કરો.

परमहृदय—

ॐ नमस्कार हो, हे श्रीधारे ! हे चिन्ता-
मणि महाविद्ये ! हे दयनीय लोगोंके शरण रूप !
हे दीनोंका भरण करनेवाली ! हे जगत्के उद्धार
करनेवाली ! हे विमलकमलके उपर वास करने-
वाली ! हे हिरण्य—सुवर्ण—धन—धान्य देनेवाली !
मेरे सभी अर्थोंको सिद्ध करो, मेरी सभी चिन्ता-
ओंको चूरो, मेरे सभी शत्रुओंको स्तब्ध करो,
निवारित करो, जृम्भित करो, मोहित करो ।
हे सुख देनेवाली ! हे शिव—कल्याण—द देनेवाली !
हे शान्ति देनेवाली ! हे शुभ देनेवाली !
हे प्रमोद देनेवाली ! मुझे सभी सौभाग्य दे,
ऋद्धि दे, सिद्धि दे, समृद्धि दे, सभीको मेरे

વશ મેં કરો, મેરી રક્ષા કરો, મેરી જય—
વિજય કરો ।

યહ વિદ્યા અચલમતિ વિદ્યાધરને મદ્રનંદ
નામક ગાથાપતિ કો દી ।

इति श्रीधारामहाविद्यानामक संपत्स्मरण ॥ ४ ॥

૫—અથ ઋદ્ધિસ્મરણમ્

ઋદ્ધિસ્મરણમાત્રેણ જાયતે ઋદ્ધિમાન્નરઃ । તસ્માદ્
ઋદ્ધિ મગવતઃ પ્રવક્ષ્યામિ શુભાવહામ્ ॥ ૧ ॥

૫--મું રિદ્ધિસ્મરણ

(૧) રિદ્ધિસ્મરણના અધ્યયન માત્રથી
માનવી રિદ્ધિમાન બને છે. માટે હંમેશાં
શુભ કરનારી એવી ભગવાનની રિદ્ધિનું
હું વર્ણન કરીશ.

५-ऋद्धिस्मरण

भगवानकी ऋद्धिके स्मरणमात्र से मनुष्य ऋद्धिमान् होता है, इसलीये भगवानकी शुभ-
दायक ऋद्धिको मैं कहता हूँ ॥ १ ॥

ऋद्धेर्निरीक्षणं कर्तुं यस्याहारकलब्धिकः ।
गच्छत्याहारकं कृत्वा तस्मै भगवते नमः ॥२॥

(२) जेनी रिद्धिना निरीक्षण अर्थ
आहारक लब्धिधारी मुनिराज पोतानी
लब्धिना प्रतापे भगवान पासो जय छे,
ते प्रभुने भारो नमस्कार छेजे.

आहारकलब्धिवाले मुनि, भगवानकी ऋद्धिको
देखनेके लिये आहारक लब्धिका स्फोरण करके
उनके समीप जाते हैं ऐसे भगवान्को नमस्कार

કરતા હૂં ॥ ૨ ॥

અનન્તં કેવલં જ્ઞાનં તથા કેવલદર્શનમ્ ।

અનન્તસૌખ્યમપ્યેવં સમ્યક્ત્વં ક્ષાયિકં તથા ॥૬॥

યથાખ્યાતં ચ ચારિત્ર-મવેદિત્વમતીન્દ્રિયમ્ ।

દાનાદિલબ્ધયઃ પશ્ચ દ્વાદશોક્તા ગુણા इमे ॥ ૪ ॥

આ પ્રભુની રિદ્ધિ કેવીક છે ? જેને
૧ અનંત કેવલજ્ઞાન છે. ૨ અનંત કેવળ
દર્શન છે. ૩ અનંત સુખ છે. ૪ ક્ષાયિક
સમ્યક્ત્વ છે.

(૪) તે ઉપરાંત ચારિત્રોમાં શ્રેષ્ઠ એવું
પ. યથાખ્યાતચારિત્ર છે. ૬. અવેદીપણું
(સ્ત્રી, પુરુષ, નપુંસકપણાથી મુક્ત) છે.
અતીન્દ્રિયપણાથી અગોચર પાંચ પ્રકારની

લબ્ધિઓ (દાન ૮ લાભ ૯ ભોગ ૧૦
ઉપભોગ ૧૧ અને વીર્ય ૧૨) છે. એને
બારે ગુણે કરીને સહિત છે.

અરિહંત મગવાનકે બારહ ગુણ

(૧) અનન્ત કેવલ જ્ઞાન, (૨) અનન્ત
કેવલ દર્શન, (૩) અનન્ત સૌખ્ય, (૪) ક્ષાયિક
સમ્યક્ત્વ, (૫) યથાશ્યાતચારિત્ર, (૬) અવે-
દિત્વ, (૭) અતીન્દ્રિયત્વ ઓર પાંચ દાનાદિ-
લબ્ધિ, અર્થાત્ (૮) દાનલબ્ધિ, (૯) લાભલબ્ધિ,
(૧૦) ભોગલબ્ધિ, (૧૧) ઉપભોગલબ્ધિ ઓર
(૧૨) વીર્યલબ્ધિ, યે બારહ ગુણ અરિહંતોં મેં
હોતે હૈ ॥ ૩-૪ ॥

દિવ્યં લોકોત્તરં રૂપં દિવ્યલાવણ્યસંસૃતમ્ ।

દિવ્યં જ્ઞાનાદિકં યસ્ય તસ્મૈ ભગવતે નમઃ ॥૫॥

(૫) તે ઉપરાંત આ લોકમાં એના જેવું રૂપ નથી એવું દિવ્ય અને અલૌકિક જેવું રૂપ છે. જેના શરીરનું લાવણ્ય-સુંદરતા પણ દિવ્ય છે. જેનું જ્ઞાન વગેરે પણ દિવ્ય છે તે ભગવાનને મારા નમસ્કાર હોય.

જિનકા દિવ્ય રૂપ હૈ, જો દિવ્ય લાવણ્ય-વાલે હૈં, જિનકે દિવ્ય જ્ઞાનાદિક ગુણ હૈં, ઉન ભગવાન્કો મૈં નમસ્કાર કરતા હૂં ॥૫॥

ऊर्ध्वाग्राः कण्टकाः सर्वे

यत्प्रभावादधोमुखाः ।

વિષમાડપિ સમા ભૂમિ-

સ્તસ્મૈ ભગવતે નમઃ ॥ ૬ ॥

(૬) શું ભગવાનની સિદ્ધિ છે ! શું તેનો પ્રભાવ છે ! ધરતી પર ઊંચી આણી રાખીને પડેલા કાંટા પણ એના પ્રભાવે કરીને અધોમુખ-આડા પડી જાય છે. એવા પ્રભુને મારા નમસ્કાર હજો.

જિનકે પ્રભાવસે ઊર્ધ્વમુખ કાંટે અધોમુખ હો જાતે હૈં, વિષમ ભૂમિ મી સમ હો જાતી હૈ એસે ભગવાન્કો નમસ્કાર હો ॥૬॥

ईतिर्भीतिश्च मारी च

दुर्मिक्षं वैरभावना ।

आधिव्याधिरुपाधिश्च

तथोत्पातः प्रशाम्यति ॥ ७ ॥

(૭) અતિવૃષ્ટિ—અનાવૃષ્ટિ વગેરે ગમે તે પ્રકારનો ભય લાગતો હોય, મહામારી—મરકીનો રોગ ચાલતો હોય, દુષ્કાળ તેનું અપ્પર ભરતો હોય, શત્રુઓની વૈરભાવના પ્રબળ હોય, ચારે તરફ આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિનું સામ્રાજ્ય વરતાતું હોય તથા દેશમાં કે નગરમાં ભારે ઉત્પાત મચ્યો હોય તો તે સધળું પ્રભુની રિદ્ધિના પ્રતાપે શમી જાય છે.

પચીસ—પચીસ યોજન તક જિનકે પ્રભાવ
 સે (૧) ર્દિતિ અર્થાત્ ૧ અતિવૃષ્ટિ, ૨ અના-
 વૃષ્ટિ, ૩ ચૂહોકા ઉપદ્રવ, ૪ ટીડોંકા ઉપદ્રવ,
 ૫ શુકોંકા ઉપદ્રવ ઓર ૬ પરચક્રકા મય,

યહ છ પ્રકારકી ર્ઐતિ, (૨) મીતિ-મય (૩) મારી-મરકી, (૪) દુર્મિક્ષ, (૫) શત્રુતા, (૬) (૬) આધિ-માનસિક પીડા, (૭) વ્યાધિ-શારીરિક પીડા, (૮) ઉપાધિ (ઝંઝટ) ઔર (૯) ઉત્પાત-ઉપસર્ગાદિ, યે સમી પ્રશાન્ત હો જાતે હૈં ॥૭॥

ઋતવશ્ચ વસન્તાઘાઃ,

સર્વે પ્રાદુર્ભવન્તિ ચ ।

લોકાઃ પ્રમુદિતા યસ્માત્

તસ્મૈ ભગવતે નમઃ ॥ ૮ ॥

(૮) જેના પ્રભાવે કરીને વસન્ત, ગ્રીષ્મ, વર્ષા, શરદ, હેમન્ત, શિશિર ઋતુઓ પ્રગટ થાય છે. જેના પ્રભાવે કરીને. સર્વ લોકમાં

आनन्दमंगल वरताई रहे छे तेवा प्रभुने
भारा नमस्कार छजे.

जिन भगवान्की अतिशय महिमा से वसन्त
आदि सभी ऋतुएँ एक साथ प्रकटित होती हैं
और जिनसे सभी लोगोंको आनन्द होता है,
ऐसे भगवान्को मैं नमस्कार करता हूँ ॥८॥

संवर्तकेन वातेन,

तत्र योजनमण्डलम् ।

संशोध्यते च परितः,

प्रासु पुष्पाम्बुवर्षणम् ॥९॥

रूप्यसालो दीप्यमानः

स्वर्णकङ्कुर-शोभितः ।

स्वर्णसालोऽपि रुचिरो,

रत्नकङ्कुर-शोभितः ॥ १० ॥

સ્ત્નસાલ્સ્તૃતીયશ્ચ

માસ્વરો મણિકઙ્ગુરઃ ।

ઇન્દ્રાસ્ત્ર ચતુઃષ્ટિ—

રાયાન્તિ પ્રભુસન્નિધૌ ॥૧૧॥

અશોકપાદપસ્ત્ર

સિંહાસનવરસ્તથા ।

દુન્દુભિશ્ચામરં છત્રં,

પ્રાદુર્ભવતિ પુણ્યતઃ ॥ ૧૨ ॥

(૯) જેના પ્રભાવે કરીને સંવર્તક
નામે પવન-વાયરા દ્વારા આપું યોજન
મંડળ શુદ્ધ થઈ તેમાંથી અચેત પુષ્પોની
વૃષ્ટિ થાય છે તેવા પ્રભુને મારા નમસ્કાર હજો.

(૧૦) પ્રભુની રિદ્ધિનો મહિમા તો

જીઓ રૂપાના દેદીપ્યમાન ગઢ અને સુવર્ણના
ઝગમગતા સુશોભિત કાંગરા ૧, સુવર્ણના
ગઢ અને રત્નના સુશોભિત કાંગરાની ૨
રચના થાય છે.

(૧૧) ત્રીજો રત્નનો ગઢ અને મણિ
રત્નોના કાંગરાની રચના થાય છે. અને
જ્યાં ૬૪ ઇન્દ્રો પ્રભુની સેવા માટે હાજર
થાય છે.

(૧૨) એક બાજુ આ બધી રચનાઓ
થાય છે. બીજી બાજુ અસોક વૃક્ષ નીચે પ્રભુ
સિંહાસન પર બિરાજમાન થાય છે. છત્ર-
ચામરો ઢોળાય છે. અને આકાશમાં દેવો
કુંડુભિ--નાદ કરી પ્રભુના મહિમાની જગતને

आणु ऊरे छे. आ अधुं प्रभुना पुण्य-
प्रभावथी थाय छे.

भगवान् जिनेन्द्र देवका जहाँ समवसरण होता है वहाँ पर व्यन्तरदेव, संवर्त्तकवायु वैक्रिय करके चारों तरफ योजन मण्डल क्षेत्रको पहले—पहल वहांका कूडा—कचरा निकालकर साफ करते हैं, फिर वहां प्रासुक (अचित) पुष्प और अचित जलकी वृष्टि करते हैं, सोने के कंगूरों से शोभित, जगमगता हुआ पहला चान्दीका गढ बनाते हैं, रत्नोंके कंगूरों शोभित सोनेका दूसरा गढ बनाते हैं, और मणिमय कंगूरों से सुशोभित, प्रकाशवान् तीसरा रत्नोंका गढ बनाते हैं । वहाँ पर प्रभुके चरणोंके समीप चौसठ

इन्द्र आते हैं । प्रभुके पुण्य से वहाँ पर अशोक
वृक्ष, श्रेष्ठ सिंहासन, दुन्दुभि, चामर और छत्र-
प्रगट होते हैं ॥ ९-१२ ॥

भामण्डलं प्रभोस्तत्र नेत्रानन्दकरं परम् ।

दिव्यध्वनिश्च सर्वेषां सुखदं जायते ततः ॥

(૧૩) આ પ્રમાણે પ્રભુ જ્યાં બિરાજે છે
ત્યાં આનંદની સીમા નથી. પ્રભુના ભા
મંડળનાં દર્શન કરતાં નેત્રમાં અનંદનાં પૂર
ઉભરાય છે. પ્રભુના મુખેથી દિવ્ય વાણીની
ઘોષણા થાય છે, ત્યારે હાજર રહેલાં સૌ કોઈ
પ્રાણી માત્ર વિષાદ રહિત થઈ સુખનો અનુ-
ભવ કરે છે. રોમેરોમ આનંદ અને સુખથી
ઉભરાય છે. આવું સમોસરણ પ્રભુ જ્યાં બિરા-
જતા હોય ત્યાં થાય છે.

વહાં પર નેત્રોંકો આનન્દ દેનેવાલા
મળ્ડલ પ્રગટ હોતા હૈ, ઓર દિવ્યધ્વનિ હોતી હૈ ।
વહ સમીં જીવોંકે લિયે સુસ્વદાયક હોતી હૈ ।
યે આઠ મહાપ્રાતિહાર્ય તીર્થકરોંકે હોતે
હૈ ॥ ૧૩ ॥

સ્વર્ગશોભા ચ યા સ્વર્ગે

યાવતી સ્યાત્તતોઽધિકા ।

અનન્તગુણિતા શોભા,

રાજતે તત્ર મળ્ડલે ॥૧૪॥

(૧૪) પ્રભુના સમોસરણુ આગળ તો
સ્વર્ગ પણુ પાણી ભરે છે. સ્વર્ગમાં રહેલી
સ્વર્ગની શોભા કરતાં તો અનંતગણી
શોભા સમોસરણુની હોય છે.

વહાં કૈસી શોભા હોતી હૈ

વહ કહતે હૈ—

દેવલોક મેં જિતની શોભા હૈ ઉસસે મી
અનન્ત ગુણિત અધિક શોભા ભગવાનુ કે સમ-
વસરણ મેં હોતી હૈ ॥ ૧૪ ॥

ન્યૂનાન્યૂનં કોટિસંખ્યા—

સ્તં સુરાઃ સમુપાસતે ।

દ્વાદશાનાં પરિષદિ

દેશનાં દિશતિ પ્રભુઃ ॥ ૧૫ ॥

(૧૫) અનેક જાતિ અને પ્રકારના દેવો.
પ્રભુના સમોસરણમાં આવે છે. અને બાર
પ્રકારની પરિષદોને પ્રભુ દેશના (પ્રવચન)
આપે છે.

कमसे कम एक करांड देवता, प्रभुकी उपासना करते हैं, और प्रभु भवनपति, वानमन्तर, ज्योतिष। और वैमानिकदेव देवियां, तथा मनुष्य मनुष्यणी तिर्यच और तिर्यचणी, इस तरह बारह प्रकारकी परिषद् में धर्मदेशना देते हैं ॥ १५ ॥

देवा मनुष्यास्तिर्यञ्चः

सर्वे शृण्वन्ति देशनाम् ।

तत्तद्वाक्परिणामिन्या

भाषया स च भाषते ॥१६॥

(१६) देवता मनुष्य अने तिर्यच, मित्र अने शत्रु समझावे प्रभुना समोसरण् इय धर्म साम्राज्यमां शत्रुता भूली दया,

શાંતિ અને પ્રેમના વાતાવરણમાં અભય
બની પ્રભુની વાણી પોતપોતાની ભાષામાં
સમજે છે.

દેવ, મનુષ્ય, તિર્યંચ, ये सभी प्रभुकी
देशना सुनते हैं, और भगवान् उन उन
जीवोंकी अपनी २ भाषा में परिणत होनेवाली
भाषा में देशना देते हैं ॥ १६ ॥

यदि खण्डमयं क्षेत्रं

मधुवारि प्रवर्षणम् ।

क्षीरसारस्य पिण्डेन

पूरणं तत्र कर्षति ॥ १७ ॥

तत्रापि यदि बीजं स्यात्

पुण्ड्रकस्य निरामयम् ।

સેચનં તત્ર સદ્રાક્ષા

રસેન યદિ તત્ફલમ્ ॥૧૮॥

તદ્રસાદધિકાનન્ત

ગુણા મિષ્ટા પ્રમોર્ગિરઃ ।

યસ્ય ચોચ્છવાસનિઃશ્વાસા

પદમોત્પલસુગન્ધિકાઃ ॥૧૯॥

(૧૭) પ્રભુની જે વાણીએ પ્રાણીમાત્રના
આત્મા વચ્ચે પ્રેમની એકતા સાધી તે પ્રભુ-
જીની વાણી કવી છે, તો કહે છે કે ધારો કે
કોઈ ખાંડનું ખેતર હોય અને સોનામાં
સુગંધી જેમ તેમાં મધનો વરસાદ વરસે.
દૂધના માવાનું ખાતર નાખવામાં આવે
અને પછી તેને ખેડે.

(૧૮) આ ઉપરાંત પુંડ્રક નામની શેર-
ડીનું શુદ્ધ અને નીરોગી બીજ વાવવામાં
આવે અને તેનું સિંચન દ્રાક્ષના રસથી
કરવામાં આવે. અને પછી દૈવયોગે તેનું
ફળ ઉત્પન્ન થાય તો તે ફળ માટે કહેવાનું
શું હોય ? કેવી સરસ તે શેરડીની મીઠાશ
હોય !

(૧૯) એ શેરડીની મીઠાશ કરતાં તો
અનંતગણી મીઠાશ પ્રભુની વાણીમાં રહેલી
છે. જેના શ્વાસોશ્વાસમાં કમળના પુષ્પ જેવી
આહ્લાદક સુગંધી ભરેલી છે.

ભગવાનની વાણી કૈસી મીઠી હોતી હૈ ?
સો કહતે હૈ—

अगर खेत खांडका हो, उस में मधु (शहद) की वर्षा हो, और खादके स्थान में उसमें क्षीरसार (मक्खन) का पिण्ड डाला गया हो, फिर उस खेतको जोते । फिर उस खेतमें पुंड्रक नामके गन्ने—सांठेके नीरोग बीज बोया जाय, और उसको उत्तम द्राक्षारस से सींचे, फिर यदि उसमें फल लगे और वह फल जैसा मीठा हो उससे भी अनन्तगुण अधिक भगवान्की वाणी मीठी होती है । और भगवान्के उच्छ्वास—निःश्वास पद्म-कमल और उत्पलकमलके समान सुगन्धित होते हैं

॥ १७-१८-१९ ॥

जिनेन्द्र चरणोपान्ते ये
समायान्ति वादिनः ।

સંશયપગાદ સર્વ
સુપ્રસન્ના ભવન્તિ તે ॥૨૦॥

(૨૦) શાસ્ત્રના વાદવિવાદ કરનાર
વિદ્વાનો પણ આખરે તો એ જિનેશ્વર પ્રભુના
ચરણમાં આજોડે છે. અને જેઓ પ્રભુના
માર્ગમાં સંશય રાખતા હતા તેઓનો સંશય
ટળતાં પ્રસન્નતા અનુભવે છે.

जिनेन्द्र भगवानके चरणोंके समीप जो
जो वादी जाते हैं वे सभी अपने संशयके
दूर हो जानेके कारण अत्यन्त प्रसन्न होते
हैं ॥ २० ॥

एवं समवसरणं जिनेन्द्रस्यातिशायिनः ।

उत्कृष्टशोभासंपन्नं द्योतमानं च सर्वतः २१

(२१) એવું જિનેન્દ્ર ભગવાનના અતિ-
શયોથી શોભાયમાન સમોસરણ રચાયું છે.
એની શોભા અને પ્રકાશથી સર્વત્ર પ્રકાશ
પ્રકાશ રેલાઈ રહે છે.

अतिशय प्रभाव संपन्न भगवान् जिनेन्द्र-
देवका समवसरण, इस प्रकार उत्कृष्ट शोभा
से युक्त और चारों तरफ से प्रकाशमान
होता है ॥ २१ ॥

तत्र रत्नमयी भूमा रत्नप्राकारगोपुरम् ।

रत्नपत्रैरत्नपुष्पैर्वृक्षैरत्नफलैर्युतम् ॥२२॥

(२२) આ સમોસરણની ભૂમિ ડેવી

છે ? તો કહે છે કે રત્નમય તો તેની ધરતી
 છે, રત્નના ગઠ અને રત્નોના દરવાજા
 છે. રત્નનાં પાંદડાં છે અને રત્નનાં પુષ્પો
 છે. રત્નનાં વૃક્ષ છે અને રત્નનાં ફળ
 બાગેલાં છે.

उस समवसरणकी भूमि रत्नमयी होती है
 उसमें प्राकार (कोट) रत्नोंका होता है, गोपुर
 (नगरद्वार) भी रत्नोंका होता है, और वहां
 पर रत्नोंके पत्रवाले, रत्नोंके पुष्पवाले और
 रत्नोंके फलवाले वृक्ष होते हैं ॥ २२ ॥

क्वचिद् वैडूर्यसंकाशं

क्वचिन्नीलमणिप्रभम् ।

સ્ફટિકામં ક્વચિજ્જ્યોતિઃ

પદ્મરાગસમં ક્વચિત્ ॥૨૩॥

ક્વચિદ્કાશ્ચનસંકાશં

બાલસૂર્યસમં ક્વચિત્ ।

ક્વચિન્મધ્યાહ્નસૂર્યામં

વિદ્યુત્કોટિસમં ક્વચિત્ ॥૨૪॥

(૨૩) સમોસરણની આ પુનિત ધરતી
પર ઉપર પ્રમાણે સધળું રત્નમય જ ભાસે
છે. કોઈકે સ્થળે વૈદૂર્ય રત્નથી સુશોભિત
લાગે, તો કોઈકે સ્થળે નીલમણિના ઝળ-
કાટથી ઝળહળે છે. કોઈકે સ્થળે સ્ફટિક
રત્નનો ઝળકાટ દેખાય છે, તો કોઈકે સ્થળે
જ્યોતિ રત્ન સમાન, તો કોઈકે સ્થળે
પદ્મરાગની પ્રભા સમાન લાગે છે.

(૨૪) કોઈકે સ્થળે સુવર્ણ નગરી

સમાન લાગે છે, તો ઢાઢક સ્થળે પ્રભાત સમયે ઊગતા બાલરવિ સમાન તેજસ્વી અને શીતળ પ્રકાશ સમું લાગે છે. ઢાઢવાર ખરા બપોરના ઉપર આવેલા સૂર્ય સમાન પણ તાપ રહિત પ્રકાશે છે. ઢાઢકવાર કરોડો વીજળીના ચમકારા સમાન ચમકે છે.

વહાં કી રત્નભૂમિ કહીં પર વૈદૂર્ય મણિ
કે સમાન ચમકતી હૈ કહીં પર નીલમણિ કે
સમાન, કહીં પર સ્ફટિક રત્ન કે સમાન,
કહીં પર જ્યોતિરત્ન કે સમાન, કહીં પર પદ્મ-
રાગ મણિ કે સમાન, કહીં પર સોનેકે સમાન,
કહીં પર બાલસૂર્યકે સમાન, કહીં પર મધ્યાહ્ન-

कालिक सूर्यके समान ओर कहीं पर करोड़ों
विद्युतों के समान चलकती है ॥२३-२४॥

न सूर्यचन्द्रौ नो विद्युत्
कोटयो मणयोऽपि न ।

जिनप्रभायाः कोट्यंश-

कोट्यंशेनापि ते समाः ॥२५॥

(२५) क्यां राज भोज ने क्यां गांगे।
तेली । सूर्यनी सरण्यामणी आपणे आगिया
साथे करी रखा छीये. क्यां प्रभुजीनी
द्विष्य प्रसा ! अने क्यां आ आगिया
समा सूर्य, चंद्र, वीजणीओ अने भणि-
रत्न ! अरे जिनेश्वरनी प्रसानो अक
करोडांशेनो पणु करोडांश अ तभारा सूर्य,

चंद्र, वीजणी अने भणित्तेनां नथी.

जिनेश्वर की प्रभाके कोटि अंश के कोटि
अंश (करोड वे अंश के करोड वे अंश)
कि भी तुलना न सूर्य कर सकते हैं, न
चन्द्रमा कर सकते हैं न करोडों विद्युत कर
सकती हैं, मणियाँ नहीं कर सकती हैं ॥२५॥

लोकोत्तराऽऽर्हती

ऋद्धिरुद्रव्यतो भावतस्तथा ।

मण्डलान्तःस्थवस्तूनां

दिव्यदीप्तिविधायिनी ॥२६॥

तस्या विशुद्धभावेन

पाठेन विधिना जनः ।

भवेत् स्वल्पेन कालेन

द्रव्यभावर्द्धिसंयुतः ॥ २७ ॥

(२६) भगवाननी रिद्धि द्रव्य अने भावथी लोकोत्तर छे. समोसरणुमां भिराजता भगवाननी दिव्य दीप्तिविधायनी--दर्शाव-
नारी द्रव्य अने भावरिद्धि छे.

(२७) आवी प्रभुञ्जनी रिद्धिना स्तोत्रनी जे काँई भविजन विधिपूर्वक शुद्ध भावे आराधना करशे, तेने धणा जे द्वंका समयमां द्रव्य अने भावथी संयुक्त रिद्धि आपोआप आवीने भणशे.

रिद्धिस्मरण समाप्त थयुं

अर्हन्तो की लोकोत्तर द्रव्य और भाव ऋद्धि, मण्डल के अन्तर्गत वस्तुओंकी दिव्य दीप्ति को उत्पन्न करनेवाली होती है। जिनेन्द्र

भगवान्की ऐसी लोकोत्तर ऋद्धिका विधिपूर्वक
विशुद्ध भाव से पाठ करने से मनुष्य स्वल्पकाल
में ही द्रव्य और भाव ऋद्धि से युक्त हो
जाता है ॥ २६—२७॥

॥ इति ऋद्धिस्मरण संपूर्ण ॥

अथ षष्ठं सिद्धिस्मरणम्

सिद्धीसरणमेत्तेणं, सव्वसिद्धी पजायए ।
तमहं संपवाच्छिस्सं, भव्वाणं सिद्धिहेयवे ॥१॥

• ६ सिद्धिस्मरणम्

(१) सिद्धिस्मरणम् मात्रयी—अष्टवे ३

સિદ્ધિસ્મરણના સ્વાધ્યાય માત્રથી સર્વ પ્રકારની સિદ્ધિઓ પ્રાપ્ત થાય છે. એવા સિદ્ધિસ્મરણના મહિમાના ગુણગાન ભવી જીવોના હિતાર્થે હવે હું કહીશ.

N • ૬—અથ સિદ્ધિસ્મરણ—

સિદ્ધિસ્મરણ કે સ્મરણ માત્ર સે સમી પ્રકાર કિ સિદ્ધિ પ્રાપ્ત હોતી હૈ, ઇસ લિયે મવ્યોં કી સિદ્ધિ કે નિમિત્ત મૈં સિદ્ધિસ્મરણ કહૂંગા ॥૧॥

વિમલસયલમણોહરં, નમિઝ્ઞં ચરણં જિણવરાણં ।

વદ્ધસં તણુતણુત્તં, સુહસિદ્ધિયં મવિહિયઠાણ ॥૨॥

(૨) અત્યંત નિમંળ અને સર્વ જીવોના ચિત્તને આકર્ષે તેવા નયનમનોહર જિનેન્દ્ર-ભગવાનના ચરણને નમસ્કાર કરી, ભવ્ય

ज्योतिना हितार्थे हवे हुं सुख, सिद्धिदायक
 ज्येवा सिद्धि स्मरणे इय तनु तनुत्र(कवच)नां
 गुणगान करीश.

विमल और सर्वापेक्षा मनोहरजो जिने-
 न्द्रोंके चरणकमल है उन्हें नमस्कार करके,
 कवच के समान शरीरकी रक्षा करनेवाला सुख-
 सिद्धि देनेवाला इस कवच का मैं भव्यजनों
 के हितार्थ कहूँगा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं उसभोसिर मवउ

ॐ ऐं क्रों वि अजिओभालं ।

ॐ श्रीं संभवनोनेत्तं, पाउसया

सव्व सम्मदोय ॥ ३ ॥

(३) ॐ ह्रीं श्रीं ऋषभदेव स्वामी !

भारा भस्तकनी रक्षा करो. ॐ ज्यैं ह्रीं अजित-
नाथ स्वामी ! भारा बाल प्रदेशनी (कपा-
णनी) रक्षा करो.

ॐ श्री सर्व प्रकारना कल्याणना दाता
संभवनाथ स्वामी ! भारां यक्षु(आंभो)नी
सदा रक्षा करो.

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीऋषभस्वामी मेरे शिर
की रक्षा करें, अर्थात् इनके प्रभावसे शिर की
रक्षा हो । ऐसा सब जगह समझ लेना
चाहिये ।

ॐ ऐं क्रीं श्रीं अजितनाथ स्वामी
मेरे भाल (ललाट)की रक्षा करें ।

ॐ श्रीं सभी प्रकार के कल्याण को

देनेवाले श्री संभवनाथ स्वामी मेरे नेत्रों की
सदा रक्षा करें ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिरि अभिनंदणो ।

घाणिदियं सव्वया,

ॐ सिरि सुमतिनाथ स्वामी ॐ ब्लौं सिरि
पद्मनाभ स्वामी वच्छअं पाउ सुमइ ॐ,

कण्णं ॐ ब्लौं च पउकप्पहो ॥४॥

(४) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्री अभिनंदन
स्वामी भारी नासिका(नाक)नी सदा रक्षा करो.

ॐ सुमतिनाथ स्वामी ! भारा वक्षः-
स्थल(छाती)नी रक्षा करो.

ॐ ब्लौं पद्मप्रभु स्वामी ! भारा कर्णो-
(कान)नी रक्षा करो.

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीअभिनन्दन स्वामी

मेरे घ्राणेन्द्रिय(नाक)की सर्वदा रक्षा करें ।

ॐ श्रीं सुमतिनाथ स्वामी मेरे वक्षःस्थल
की रक्षा करें ।

ॐ ब्लौं श्री पद्मप्रभ स्वामी मेरे कर्णे-
न्द्रिय (कान) की रक्षा करें ॥४॥

कंठसंधि तु रक्खउ,
ॐ ह्रीं श्रीं क्लों सुपास जिणवरो मे ।
खंघं पुणपाउ मज्झक,

ॐ ह्रीं श्रीं जिणचंदप्पहो ॥५॥

(५) ॐ ह्रीं श्रीं क्लों सुपार्श्व-
नाथ स्वामी ! मेरा कंठ—गरदननी रक्षा
करे।

ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्रप्रभु जिनेश्वर !
 मेरी भक्तानी रक्षा करो.

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जिनवर श्री पार्श्वनाथ
 स्वामी मेरी कण्ठसन्धि की रक्षा करें ।

ॐ ह्रीं श्रीं जिनेश्वर श्री चन्द्रप्रभ
 स्वामी मेरे स्कन्ध (कंधे) की सर्वदा रक्षा
 करें ॥ ५ ॥

ॐ क्रोँ सुविधिबुद्धिं,

अवउ सिज्जंस वासुपुज्जो करजं ।
 विमलजिणो उयरं मे,

ॐ ह्रीं श्रीं वण्णसंकलिओ ॥ ६ ॥

(६) ॐ ह्रीं श्रीं सुविधिनाथ स्वामी ।

भारी बुद्धिनी रक्षा करे।

ॐ क्रोँ श्रेयांसनाथ स्वामी ! भारा
जभणा हाथनी आंगणीओनी रक्षा करे।

ॐ ह्रीँ वासुपूज्य स्वामी ! भारा डाया
हाथनी आंगणीओनी रक्षा करे।

ॐ ह्रीँ श्री विमलजनेश्वर ! भारा
उदर(पेट)नी रक्षा करे।

ॐ क्रोँ श्री सुविधिनाथ स्वामी मेरी
बुद्धिकी रक्षा करे ।

ॐ क्रोँ श्री श्रेयांसनाथ स्वामी मेरे
दाहिने हाथ की अंगुलियां की रक्षा करे ।

ॐ क्रोँ श्री वासुपूज्य स्वामी मेरे बायें
हाथ की अंगुलियों की रक्षा करे ।

ૐ હ્રીં શ્રીં શ્રી વિમલ જિન મેરે ઉદર
(પેટ) કી રક્ષા કરેં ॥ ૬ ॥

ૐ હ્રીં ધમ્મો જંઘં,
પિટ્ઠમલ્લિ મલ્લિકુસુમકોમલો ।

સદયમુણિસુવ્વયો હિયં,
કુન્થૂ કરેગીવં' અરો શ્રીં ॥ ૭ ॥

(૭) ૐ હ્રીં ધર્મનાથપ્રભુ ! મારી
જંઘાઓ(જંઘ)ની રક્ષા કરો.

ૐ શ્રીં મલ્લિકા (વેલી) ઇલ સમાન
કામળ શરીરધારી શ્રી મલ્લીનાથ જીનેશ્વર !
મારી પીઠની રક્ષા કરો

ૐ શ્રીં દયાળુ મુનિસુવ્રત જીનેશ્વર
મારા ! હૃદયની રક્ષા કરો.

ॐ कुन्थुनाथ जनेश्वर ! भारा ढाथेनी
रक्षा करे।

ॐ अरनाथ स्वामी ! भारी ग्रीवा-
(डोके)नी रक्षा करे।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ स्वामी मेरी जंघा-
ओं की रक्षा करें ।

ॐ ह्रीं मल्लिका पुष्पके समान कोमल
श्री मल्लीनाथ स्वामी मेरी पीठकी रक्षा करें ।

ॐ श्रीं दयालु श्री मुनि सुव्रतनाथ
स्वामी मेरे हृदयकी रक्षा करे ।

ॐ श्रीं श्री कुन्थुनाथ स्वामी मेरे हाथों
की रक्षा करें ।

ॐ श्रीं श्री अरनाथ स्वामी मेरी ग्रीवा

(ગલે) કી રક્ષા કરેં ॥ ૭ ॥

ૐ શ્રીં શ્રીં નમી કકલ્લં,

નાસારોગં હરત હ્રીં શ્રીં નેમી ।

અણંતપાસો ગુજ્જરોગં,

ૐ હ્રીં શ્રીં ક્લીં સુકલિયો ॥૮॥

(૮) ૐ હ્રીં શ્રીં શ્રી નમીનાથ-
સ્વામી ! મારી કાંખે (કૃપ્પ)ની રક્ષા કરો.

ૐ હ્રીં શ્રીં શ્રી નેમીજીનેશ્વર ! મારા
નાસિકાના રોગને મટાડો.

ૐ હ્રીં શ્રીં ક્લીં શ્રી અનંત
જીનેશ્વર તથા ૐ હ્રીં શ્રીં ક્લીં શ્રી
પાર્શ્વનાથ પ્રભુ ! મારા ગુહ્ય (ગુપ્ત)
રોગોને મટાડો.

ॐ श्रीं श्रीं श्री नमिनाथ स्वामी मेरी
काखोंकी रक्षा करें

ॐ ह्रीं श्रीं श्री नेमिनाथ स्वामी मेरे
नासिका रोगका हरण करें ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्री अनन्तनाथ स्वामी
और ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्री पार्श्वनाथ स्वामी
मेरे गुह्यरोगोंको हरे ॥ ८ ॥

ॐ श्रीं तिल्लोकवसं,

कुरु कुरु बद्धमाणो महावीरो ।

सर्वमंगलसुहकरो,

चिंतामणि—सुरतरुव्व फलओ ॥१॥

(९) ॐ श्रीं सर्वरीते भंगण ऊरनार
तथा सुभ्य देनार, चिंतामणि रत्न तथा

कल्पवृक्ष समान मनवांछित इष्ट देनेवा
 येवा है ! वर्धमान महावीर स्वामी !
 आप, चिन्तामणि सुरतरु कल्पवृक्ष समान
 भारे भारे थाव.

ॐ श्री श्री वर्धमान महावीर स्वामी
 तीनों लोगोंको मेरे वशमें करें । जो भगवान्
 सभी मङ्गल और सुख करनेवाले, चिन्तामणि
 और कल्पवृक्ष के समान अभीष्ट फलदायक
 हैं ॥ ९ ॥

सर्वे जिगणहरा,

अंगरोमाङ्ग मञ्जक रक्खंतु ।

ॐ ह्री श्री सियलंपहु,

सर्वसत्तुचयं सिद्धिलं कुरु ॥ १० ॥

(१०) हे सर्वे जिनवरो सर्वे गण-
धरो ! मारा शरीरना अंग तथा रोमो
(इवांटी)नी रक्षा करो.

ॐ ह्रीं श्रीं शीतलनाथ स्वामी
मारा सर्व शत्रु समूहने शिथिल बनावी दो.

सर्व तीर्थकरोंके सर्व गणधर मेरे शरीरके
रोमोंकी रक्षा करें और ॐ ह्रीं श्रीं श्री
शीतलनाथ स्वामी मेरे सभी शत्रुओंको
शिथिल करें ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं ,

संतीसुयसंपयं मज्झक कुणउ समिद्धि

ॐ ह्रीं ऐं सीमंघर,

पमुहा होंतु कामधेणु व ॥ ११ ॥

(११) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं
शान्तिनाथ जिनेश्वर भने शांति, सुख,
संपत्ति અને સમૃદ્ધિ આપો.

ॐ ह्रीं ज्यैं सीमन्धर स्वामी वगेरे
जिनगण कामधेनु गाय समान मारा माटे
भनवांछित इष्टना दातार हो !

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं श्री शान्तिनाथ
भगवान् मुझे सुत, सम्पत्ति और समृद्धि दे ।

ॐ ह्रीं ऐं श्री सीमन्धर आदिजिनेन्द्र
कामधेनुके समान अभीष्ट फलदायक होवे ११

एवं सिद्धीसरणं,

जयहियकरणं सुहावहं सययं ।

तम्हा अवमसणिज्जं,

सव्वाणं सव्वमुद्वदं सुवकंदं ॥१२॥

इति सिद्धिस्मरणम् ।

(૧૮) આ પ્રકારનું આ સિદ્ધિસ્મરણ માનવી માત્રના માટે સર્વદા હિતકારક અને સુખકારક છે. એટલા માટે સર્વ-સુખોના બીજ સ્વરૂપ આ સિદ્ધિસ્મરણનો સ્વાધ્યાય સર્વ લોકોએ કરવો ઇચ્છનીય છે.

સિદ્ધિસ્મરણ સંપૂર્ણ

इस प्रकारका यह सिद्धिस्मरण, मनुष्यों का सर्वदा हित करनेवाला और सुख देनेवाला है, इसलिये सभी सुखोंके कन्द स्वरूप इस स्मरणका अभ्यास सभीको करना चाहिये

॥ इति सिद्धिस्मरण संपूर्ण

अथ सप्तमं जयस्मरणम्—

जयस्मरणमात्रेण जयः सर्वत्र जायते ।

तदहं संप्रवक्ष्यामि, भव्यानां जयहेतवे ॥१॥

૭મું જય સ્મરણ

(૧) જય સ્મરણના સ્વાધ્યાય કરનારને
જ્યાં જ્યાં જય ત્યાં ત્યાં સર્વ સ્થળે
ચોમેર જય મળે છે. એટલા માટે ભવ્ય-
જનોના જયના હેતુ અર્થે હવે હું જય
સ્મરણ કહીશ.

॥ ૭ અથ જયસ્મરણ ॥

જયસ્મરણ માત્રસે સર્વત્ર જય હોતા હૈ,
ઇસલિયે મૈં ભવ્યોંકે હિતાર્થ જયસ્મરણ કહૂંગા
॥ ૧ ॥

ૐ ઘંટાકર્ણો મહાવીરઃ સર્વવ્યાધિવિનાશકઃ ।

સર્વ વિઘ્નાપહર્તા ચ, સર્વત્ર જયકારકઃ ॥ ૨ ॥

(૨) ૐ ઘંટાકર્ણ મહાવીર પ્રભુ !

सर्व प्रकारना व्याधिनो नाश करनार ! सर्व
प्रकारना आवी पडतां विघ्न हरनार ! सर्वत्र
जयकारी जेवा हे महावीर प्रभु....

ॐ श्री घण्टाकर्ण महावीर, सभी व्याधि-
योंके विनाशक हैं, सभी विघ्नोंको दूर करने
वाले हैं सर्वत्र जयकारक हैं ॥ २ ॥

यत्र त्वं वर्तसे देव !, लिखितोऽक्षरपङ्क्तिभिः ।

तत्राधयो व्याधयश्च, नैव तिष्ठन्ति सर्वदा ॥३॥

(३) हे देव ! ज्यों पिराजे छे, ज्यों ज्यों
पङ्क्तिओमां आपनुं नाम लप्पायेलुं छे त्यां
त्यां व्याधि व्याधि डोई काणे रही शक्तां
नथी.

हे देव ! जहां पर आप अक्षर पङ्क्तियोंसे

लिखित रहते हैं, वहां पर आधि और व्या-
धिकी स्थिति कभी भी नहीं होती ॥ ३ ॥

उपाधयश्च सर्वेऽपि,

शोकश्चिन्ता दरिद्रता ।

उपसर्गा ग्रहाश्चैव,

प्रशाम्यन्ति न संशयः ॥ ४ ॥

(४) ते उपरांत सर्व प्रकारनी उपा-
धीया शोक, चिन्ता, दरिद्रता, आवी
पडेला उपसर्गों तथा पनोती के तेवी डार्छ
प्रकारनी अछदशा, वगेरे हे धंटाकर्ण मछा-
वीरञ्ज आपना प्रभावथी सभी जय छे
तेमां संशयने स्थान नथी.

सभी प्रकारकी उपाधियाँ, सभी प्रकारके

શોક, ચિન્તા, દરિદ્રતા, ઉપસર્ગ, ઔર ગ્રહ,
પ્રશાન્ત હો જાતે હૈં, ઇસમેં કિસી મી પ્રકા-
રકા સંશય નહીં હૈં ॥ ૪ ॥

હાકિની શાકિની ચૈવ,
યોગિની રાક્ષસા અપિ ।

ભૂતાઃ પ્રેતાશ્ચ વૈતાલાઃ

પલાયન્તે ન સંશયઃ ॥ ૫ ॥

(૫) આહે ગમે તે વળગાડ હોય,
ડાકણ, શાકિણી, જોગણી, રાક્ષસ, ભૂત,
પ્રેત, વૈતાળ ગમે તેનો ઉપદ્રવ નડતો હોય
તો પણ, હે ધંટાકર્ણ મહાવીરજી ! આપના
પ્રભાવથી આ સર્વ ઉપદ્રવ કરનાર, જીવ
લઈને નાસી જાય છે તેમાં લેશમાત્ર પણ
સંશય નથી.

डाकिनी, शाकिनी, योगिनी, राक्षस, भूत, प्रेत और वेताल, इस जयस्मरण से दूर भाग जाते हैं, इसमें कुछ भी संशय नहीं ॥ ५ ॥

घण्टाकर्णप्रभावेण, कामधेनुः सुरद्रुमः ।

चिन्तामणिनिधिश्चैते, भवन्ति वशवर्तिनः ॥ ६ ॥

(६) घंटाकर्णना प्रभावथी कामधेनु, कल्पवृक्ष, चिन्तामणिरत्न, नवनिधि, वगेरे आ स्तोत्रनो स्वाध्याय करनारने वश थाय छे, अटले के मनोकाभना पूर्ण थाय छे.

घण्टाकर्ण महावीरके प्रभाव से कामधेनु, कल्पवृक्ष, चिन्तामणि, और निधि, ये सभी वशसर्ती हो जाते हैं ॥ ६ ॥

नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दश्यते ।

अग्निचौरभयं नास्ति, होँ धण्टाकर्ण नमोस्तुते,

ठः ठः ठः स्वाहा ॥ ७ ॥

(७) आ धंटाकर्ण भूषावीर स्तोत्रना
स्वाध्याय करनारतुं अकाण भोत थतुं नथी,
तेभज तेने सर्पदंश, अग्नि, तेभज चोर-
नो भय रहेतो नथी अेवा हे धंटाकर्ण
भूषावीर ! आपने हुं नमस्कार करुं
छुं. ठः ठः ठः स्वाहा....

जयस्मरण संपूर्ण

इस जयस्मरणके स्वाध्याय करनेवालेका
अकाल में मरण नहीं होता है, न उसे सर्प
डस सकते हैं, न डसको कभी चोर और

અમિકા 'ભય' હોતા હૈ । હ્રીં ઘણ્ટાકર્ણ !
આપકો નમસ્કાર હો, ઠઃ ઠઃ ઠઃ સ્વાહા ॥૭॥

॥ ઇતિ જયસ્મરણસંપૂર્ણમ્ ॥

॥ ૮ અથ વિજયસ્મરણમ્ ॥

વિજયસ્મરણાનિશ્ચ, સઁવત્થ વિજયો ભવે ।

તમહં સંપોવોચ્છિસ્સં, સઁવલોગોવકારણં ॥૧॥

• ૮ મું વિજયસ્મરણ

(૧) વિજય સ્મરણનેા સ્વાધ્યાય કર-
નાથી સર્વત્ર વિજયની પ્રાપ્તિ થાય છે. તેથી
હું સર્વ લોકના હિત કાળે સદા કલ્યાણ-
રૂપ એવા વિજયસ્મરણને કહીશ.

॥ અથ વિજયસ્મરણ ॥

(જ્વર આવે, મસ્તિષ્ક પર ભાર માલુમ પડતા હો તો કિસી સે સુનના અથવા સ્વયં પાઠ કરના)

વિજયસ્મરણ સે નિત્ય સર્વત્ર વિજય હોતી
 હૈ સમી લોગોંકા ઉષકારક ઉસ વિજયસ્મરણકો
 મૈં કહૂંગા ॥ ૧ ॥

ઉવમસગ્ગહરં પાસં, પાસં વન્દામિ કમ્મધણ યુક્કં ।
 ધરણિદપોમાવ્ઙ્, સહિય કલ્લાણઆવાસં ॥૨॥

(૨) આ વિજય સ્મરણનું અધ્યયન કરવા માત્રથી સર્વ ઉપસર્ગો (આવી પડેલી આપત્તિઓ)નો નાશ થાય છે. સર્વ પાપ-કર્મ નાશ પામે છે. ધરણેન્દ્ર અને પદ્મા-

वती देवी जनी सेवा करे छे जेवा सदा
कल्याणकारक प्रभु पार्श्वज्जुं दने हुं वंदन
करुं छुं.

पार्श्वयक्ष जिनकी आज्ञाके पालनके लिये
सर्वदा तत्पर रहता हैं, धरणेन्द्र पद्मावती
जिनकी सेवाके लिये सतत उत्सुक रहते हैं,
एसे उपसर्गहारी, कर्मघन से मुक्त, कल्याणके
आवास भगवान् श्री पार्श्वनाथ स्वामीको वन्दन
करता हूं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं तं नमामि पासनाहं ॥ ३ ॥

(३) ॐ ह्रीं श्रीं हे पार्श्वनाथ
प्रभु! आपने नमस्कार करुं छुं.

ૐ હ્રીં શ્રીં ઉન પાર્શ્વનાથકો નમ-
સ્કાર કરતા હું !! ૨ !!

ૐ હ્રીં શ્રીં ધરણિંદ

નમંસિયં દુહવિણાસં !! ૪ !!

(૪) ૐ હ્રીં શ્રીં દુઃખમાત્રનો નાશ
કરનાર એવા શ્રી ધરણેન્દ્ર દેવથી નમસ્કાર
કરાયેલા આપને નમસ્કાર કરું છું.

ૐ હ્રીં શ્રીં ધરણેન્દ્ર નમસ્કૃત દુઃખ-
વિનાશક પ્રમુ કો નમસ્કાર કરતા હું !! ૪ !!

ૐ હ્રીં શ્રીં જરસપ્પભાવેણં સેયા !! ૫ !!

ૐ હ્રીં શ્રીં નાસંતિ ઉવદ્વા સન્વે !! ૬ !!

(૫-૬) ૐ હ્રીં શ્રીં જેના પ્રભા-
વથી સર્વ પ્રકારની ઉપાધીઓ નાશ પામે છે.

ॐ હ્રીં શ્રીં જિનકે પ્રભાવ સે કલ્યાણ
હોતે હૈં ॥૫॥

ॐ હ્રીં શ્રીં સમી ઉપદ્રવ નષ્ટ હો જાતે
હૈં ॥૬॥

ॐ હ્રીં શ્રીં પદ્મસુમરામિ તં મણે ॥૭॥

(૭) ॐ હ્રીં શ્રીં જનું ધ્યાનપૂર્વક
સ્મરણ કરવાથી મન પ્રકુલિલત થાય છે.

ॐ હ્રીં શ્રીં ડનકો મનમેં સ્મરણ કરતા
હૈં ॥૭॥

ॐ હ્રીં શ્રીં ન હોઈ વાહી ન કિંપિ દુહં ॥૮॥

(૮) ॐ હ્રીં શ્રીં જનું સ્મરણ કર-
વાથી કાઈ પણ પ્રકારની વ્યાધિ કે દુઃખ
ઉત્પન્ન થતાં નથી.

ॐ ह्रीं श्रीं न कोई व्याधि होती है और न कोई दुःखी होता है ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं न होइ जल जलण भयं तह सप्पसिंहभयं ॥९॥

(८) ॐ ह्रीं श्रीं जेतुं स्मरण करवाथी जल, अग्नि, साप तथा सिंहेनो भय होता नथी.

ॐ ह्रीं श्रीं न जलका भय होता है, न अग्निका भय होता है, न सर्पका भय होता है और न सिंहका भय होता है ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं न होइ चोरारिसंभवं भयं ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं चोर और शत्रुसे होने वाला भय नहीं होता है ॥१०॥

ૐ હ્રીં શ્રીં પયડં ન હૃથ સંદેહો ॥૧૧॥

ૐ હ્રીં શ્રીં પાર્શ્વનાથ પ્રભુ કા યહ
પૂર્વોક્ત પ્રભાવ પ્રકટ હૈ, યહાં કોઈ સન્દેહ
નહીં હૈ ॥૧૧॥

ૐ હ્રીં શ્રીં નામંવિ જસ્સ હુ મંતસમ ૧૨

(૧૨) ૐ હ્રીં શ્રીં ને નામ યશસ્વ
છે, મંત્ર સમાન છે.

ૐ હ્રીં શ્રીં નામ મી જિનકા મન્ત્રકે સમાન
હૈ ॥૧૨॥

ૐ હ્રીં શ્રીં જો સુમરહ પાસનાહપદું ॥૧૬॥

(૧૩) ૐ હ્રીં શ્રીં એવા પાર્શ્વનાથ
પ્રભુનું ને સ્મરણ કરે છે.

ॐ ह्रीं श्रीं जो पार्श्वनाथ प्रभुका
स्मरण करता है ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पहवइ
न कयावि कोवितस्स ॥१४॥

(१४) ॐ ह्रीं श्रीं इलीं जनाथी
थार अने शत्रुना लय नाश पाभे छे, तेभां
जरा पणु संदेड राखशे नहि.

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कभीं भी कोई भी
उसके उपर प्रभुत्व नहीं कर पाता ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं श्रीं सव्वसुहं
पावइ इह लोगट्टी परलोगट्टी ॥१५॥

(१५) ॐ ह्रीं श्रीं इलीं श्रीं

શ્રીં તે આ લોક તેમજ પરલોકમાં સર્વ પ્રકારનું સુખ પ્રાપ્ત કરે છે.

ૐ હ્રીં શ્રીં ક્લીં શ્રીં શ્રીં इह-
લોકાર્થીં और परलोकार्થીं अपने २ अभिलषित
सभी प्रकारके सुखोंको प्राप्त करते हैं ॥१५॥

ૐ હ્રીં શ્રીં જો સરહ પાસનાહં સોમુચ્છદ
सर्व दुःखाओ ॥ १६ ॥

(૧૬) ૐ હ્રીં શ્રીં જ પાર્શ્વનાથ
પ્રભુનું સ્મરણ કરે છે, તે સર્વ દુઃખોથી
મુક્ત થાય છે.

ૐ હ્રીં શ્રીં જો પાર્શ્વનાથ પ્રમુકો સ્મરણ
કરતે હૈં વે સમી પ્રકારકે દુઃખોસે મુક્ત હો
जाते हैं ॥१६॥

ૐ હ્રીં શ્રીં હ્રૂં હ્રૌં ગાં ગીં ગઃ,

તહ સિઙ્ગદ્વિષ્ણં ॥૧૭॥

(૧૭) ૐ હ્રીં શ્રીં હ્રૌં ગાં ગીં ગઃ

પાર્શ્વનાથ પ્રભુનું સ્મરણ કરવાવાળાનાં સર્વ
કાર્ય જલદીથી સિદ્ધ થઈ જાય છે.

ૐ હ્રીં શ્રીં હ્રીં હ્રૌં ગાં ગીં ગઃ શીઘ્ર

સકલ કાર્યસિદ્ધ હોતે હૈં ॥૧૭॥

ૐ હ્રીં શ્રીં હ્રીનાઽ સરેઽ ભગવંતં ॥૧૮॥

(૧૮) ૐ હ્રીં શ્રીં હ્રૂં હ્રૌં ગાં

ગીં ગઃ એમ સમજીને શ્રી પાર્શ્વનાથ
ભગવાનનું સ્મરણ કરવું જોઈએ.

ૐ હ્રીં શ્રીં હ્રીં હ્રૌં ગાં ગીં ગઃ એસા

સમજીકર ભગવાનકા સ્મરણ કરનાં ચાહિયે ॥૧૮॥

ૐ હ્રીં શ્રીં સવસત્તિ સપન્નધરણિદ

પોમાવડ દેવિ સવ્વત્થવિજયં કુરુ કુરુ સવ્વકિત્તિ-
જસોબલં, દેહિ દેહિ સવ્વ સૌમગ્ગં કુરુ કુરુ
સવ્વમંગલં સાધય સાધય સવ્વ મનોરથં પૂરય.પૂરય
ૐ હ્રીં શ્રીં નમઃ સિદ્ધં ॥૧૯॥

(૧૯)ૐ હ્રીં શ્રીં સર્વ સુખસંપત્તિ
આપનાર ધરણેન્દ્ર તથા પદ્માવતી દેવી
જેની સેવા કરે છે, એવા પાર્શ્વનાથ પ્રભુ !
મારો સર્વ પ્રકારે વિજય કરો ! વિજય
કરો ! સર્વ પ્રકારની કીર્તિ, યશ, બળ
આપો ! સર્વ સૌભાગ્ય કરો ! સર્વ
પ્રકારનાં મંગલ સાધી આપો ! મારા સર્વ
મનોરથ પૂર્ણ કરો ! ૐ હ્રીં શ્રીં
સિદ્ધગતિને પામેલા એવા પાર્શ્વનાથ પ્રભુ !
આપને મારા નમસ્કાર હજી.

विजयस्मरण सभा

ॐ ह्रीं श्रीं हे सर्वशक्ति सम्पन्न धर-
णेन्द्र और पद्मावती देवी ! सर्वत्र विजय करो,
सभी प्रकारकी कीर्ति, यश और बल मुझे दो,
सभी प्रकारका सौभाग्य दो, सभी प्रकारके
मङ्गलको सिद्ध करो, मेरे सभी मनोरथोंको
पूर्ण करो, ॐ ह्रीं श्रीं नमः सिद्धं ॥८॥

॥ इति विजयस्मरण संपूर्ण ॥८॥

॥ ९ शान्तिस्मरण ॥

शान्तिस्मरण मात्रेण शान्तिः सर्वत्र जायते ।
तदहं संप्रवक्ष्यामि, सर्वकल्याणकारकम् ॥९॥

६ भुं शान्तिस्मरण

(१) शान्तिस्मरणेन स्वाध्याय ऊर-

वाथी सर्व स्थणे शान्ति शान्ति थाय छे.
 तेथी हवे हुं आपनी समक्ष दरेक प्रकारे
 कल्याण करनारा जेवा शान्तिस्मरणना
 भडिमानुं वर्णन करुं छुं.

९ अथ शान्तिस्मरण ॥

शान्तिस्मरण मात्रसे सर्वत्र शान्ति होती
 है. इसलिये मैं सर्वकल्याणकारक उस शान्ति
 स्मरणको कहूंगा ॥ ९ ॥

शान्तिनाथं प्रभुं वन्दे, मातृगर्भं गतोऽपि यः ।
 मारीभये समुत्पन्ने, लोकानां शान्तिकारकः ॥२॥

(२) हे शान्तिनाथ प्रभु ! आप
 माताना गर्भमां आवतां न, आपना
 पिताना राज्यमां झेलाई रहेलो, महाभारी—

मरडीनो रोग शमी गये। अने प्रज्जन्मोमां
शांतिञ्च शांति वरताई। अेवा हे शांति-
नाथ प्रभु ! आपने हुं वंदन करुं छुं.

मैं शान्तिनाथ प्रभुकी वन्दना करता हूँ,
अपनी माताके गर्म में रहे हुए भी जो मर-
कीका भय उत्पन्न होने पर लोगोंके लिये
शान्तिकारक हुए ॥२॥

यस्मिन् जाते च लोकेषु,

प्रकाशः समजायत ।

शान्तिः सर्वत्र लोकानां

मङ्गलं च गृहे गृहे ॥६॥

(३) हे शांतिनाथ प्रभु ! आपने
जन्म यथां च लोकने विशे प्रकाश व्यापी

गयो. लोकमां सर्व स्थणे शांतिञ्च शांति
व्यापी गच्छ. धेरे धेर भंगण वरताई रद्युं.

जिनके उत्पन्न होने पर तीनों लोकमें
प्रकाश हो गया, सर्वत्र लोगोंको शान्ति हुई
और घर घरमें मङ्गल हुआ ॥६॥

विश्वसेनो नृपश्चासीत् , सुन्दरे हस्तिनापुरे ।
अचिराख्या महादेवी सुव्रता शीलशालिनी ॥४॥

(४) सुंदर अथवा हस्तिनापुर नग-
रने विषे आपना पिता विश्वसेन नामे
राज्य राज्य करता होता. अने अथला-
देवी (अथीरा) नामे व्रत-नियमानुं
पालन करना, पतिव्रता अने शीलवन्ता

येवां भटाराणी आपना माता हतां.

अति सुन्दर हस्तिनापुर नगरमें विश्वसेन नामका राजा थे, उनकी रानीका नाम अचिरा देवी था, जो परम पतिव्रता थी और शीलसे सुशोभित थी ॥ ४ ॥

तस्या गर्भे समायातः शान्तिनाथजिनः प्रभुः ।

त्रिलोकवन्द्यः सर्वेषां शोकसन्तापहारकः ॥५॥

(५) त्रिणे लोकने विषे वंदनीय,
सर्व प्राणीमात्रना शोक—संतापना हरनार
येवा शांतिनाथ भगवान्, आवां यस्त्रि-
शील अयलादेवी मातानी कूपे गर्भमां
उत्पन्न थया.

उस रानीके गर्भमें, त्रिलोकवन्द्य, सभीके

શોક—સન્તાપ હરનેવાલે, પ્રભુ શાન્તિનાથ જિન
અવતરિત હુણે ॥ ૫ ॥

તદા કૂટસંનિવેશે, હસ્તિનાપુરસંનિધૌ ।

શાન્તિ પ્રાપ્તા જનાઃ સર્વે સંકટે સમુપસ્થિતે ॥૬॥

(૬) એ એક સમય હતો. હસ્તિના-
પુર નગરની નજીકમાં કુટ નામના સંનિ-
વેશ(નાનું પરુ)ને વિશે પ્રજાજનો સંકટ-
અસ્ત બન્યા હતા. તેવે સમયે શાંતિનાથ
પ્રભુ માતાના ગર્ભે આવ્યા હતા અને
સર્વ પ્રજાજનોમાં શાંતિ છવાઈ.

ઉસ સમય હસ્તિનાપુરકે પાસ કૂટનામક
સન્નિવેશમેં ઉપસ્થિત બહુત સંકટસે સમી લોગોંકો
શાન્તિ મિલી ॥૬॥

कश्चिद्देवस्तदा तत्र, पूर्ववैमनुस्मरन् ।

स्वकीयशक्त्या पाषाण—वर्षणं कृतवान् परम् ॥७॥

(७) तेवे समये ड्वाई अेक देवने पोताना
पूर्वखवना वेरतुं स्मरण थयुं. अने पोतानी
देवी अने मायावी अेवी वैक्रिय शक्तिथी
भोटी शिला अने पथथरोना वरसाद गाम
अने नगर उपर वरसाववा भांडयो.

उस समय उस कूट सन्निवेशमें कोई देवने,
अपने पूर्व भवके वैरका स्मरण करते हुए
अपनी वैक्रिय शक्तिसे उस गाम पर अत्यधिक
पत्थरोंकी वृष्टि की ॥७॥

प्रचण्ड पवनस्तत्र, प्रादुर्भूतो भयंकरः ।

दावानलसमश्चाग्निरुद्भूताः सर्पवृश्चिकाः ॥८॥

(૮) તે દેવને એકલા પથ્થરોના વરસાદથી વેરની તૃપ્તિ ન થઈ, પણ તેથીય આગળ વધીને પોતાની ગૈકિય શક્તિના બળે કરીને પવનની આંધિ અને વાવા-ઝોડાનું ભયંકર તાંડવ મચાવ્યું. ચારે તરફ દાવાનળનાં તાંડવ રચાયાં. ધરતી ઉપર આગ ઝોકવા માંડી. ચારે તરફ સર્પ અને વીંછીઓ ઉત્પન્ન કર્યાં. અને ધરેધર સર્પ અને વીંછીનો ભયંકર ભય વ્યાપી રહ્યો.

फिर वहाँ पर प्रचण्ड पवन बहने लगी दावानलकी सदृश भयङ्कर आग चारों तरफ लगने लगी, और जहरीले सर्प और वृश्चिक

(વિંછ) ઉત્પન્ન હુણ ॥ ૮ ॥

વજ્રપાતસમો નાદઃ સર્વજન્તુભયાનકઃ ।

નદ્યાઃ પૂરઃ પ્રાદુરાસીદ વિષધૂમસ્તથૈવ ચ ॥ ૯ ॥

(૯) આટઆટલું કરવા છતાં પણ એ દેવને વેરની તૃપ્તિ ન થઈ. હજીયે બાકી હોય તેમ, પ્રાણી માત્ર જેના ભયથી ધ્રૂજી મરે તેવા ભયાનક જાણે-વજ્રપાત થતો હોય તેવા વીજળીના કાટકા કરવા માંડ્યો. નદીઓમાં પ્રલયનાં પૂર ઉભરાવ્યાં, નદીઓએ ચારે તરફ પ્રલય તાંડવના ખેલ ખેલવા માંડ્યા. ઝેરી ગેસના ધુમાડાના ગોટગોટા ઉત્પન્ન કર્યા, તોયે તેના આત્માને શાંતિ ન વળી.

સમી પ્રાણિયોંકો ભય દેનેવાલા વ્રજ-
પાતસદૃશ ગર્જન હોને લગા, નદિયોંમેં પ્રચળ
વાદ આને લગી, ઔર વિષકા ધૂમ ફેલને
લગા ॥ ૯ ॥

ધિદ્યુત્પાતસ્તથા વ્યાધિરુપાધિશ્ચ સહસ્રશઃ ।

ભૂકમ્પસ્તમસાચ્છન્નં, નમઃ પક્ષિસ્તૈર્યુતમ્ ॥૧૦॥

(૧૦) આટલું તો હજી અધૂરું હોય
તેમ લપકારા લેતી વીજળીઓ આરે તરફ
પડવા માંડી, જાણે લાવ લશ્કર લઈને
આવી હોય, તેમ હજારો આધિ, વ્યાધિ
અને ઉપાધિઓ ખડકાવા માંડી, આરે
ખાજી ધરતીકંપ થવા માંડ્યો, ગગનચુંબી
ઇમારત ધરણીશાયી થવા માંડી. આકાશ-

मां धनधोर अंधकार व्यापी रह्यो. यारे
तरई विनाशनां तांडव भेलावा मांडयां.
पंणीडांओ। अयत्रस्त दशांमां कलरव करवा
मांडयां.

हजारों विद्युत्पात, व्याधि, उपाधि और
भूकम्प वहां होने लगे, आकाश अन्धकार से
व्याप्त हो गया और उड़ते पक्षिगण भर्त्ता
शब्द करने लगे ॥१०॥

शिलावृष्ट्याहताः केचित् ,

केचिद् वायुरयाऽऽहताः ।

पतन्ति व्याकुलाः केचित् ,

शुष्ककण्ठाः पिपासवः ॥ ११ ॥

(११) आवा प्रलयना तांडवमां लाग्य-

શાળી હશે તે જ બચ્યો હશે. બાકી તો
 કેટલાંએ પશુ, પક્ષી અને માનવ સમુદાય
 શિલાવૃષ્ટિથી ધવાયા, કેટલાંએ પ્રચંડ આંધિ-
 ના તુફાનથી ધવાયા, કેટલાંયના ભયતરત
 દશામાં પાણીના અભાવે કંઠ શોષાવા
 માંડ્યા, પ્રાણી માત્ર આ તાંડવનો ભોગ
 બન્યાં.

કિતનેક શિલાવૃષ્ટિસે આહત હોકર ગિરતે
 થે, કિતનેક વાયુકે પ્રચળ્ડવેગસે આહત હોકર
 ગિરતે થે, કિતનેક પ્યાસકે મારે શુષ્કકળ્ઠ
 હો વ્યાકુલ હોકર ગિરતે થે ॥ ૧૧ ॥

સમન્તાજ્જ્વલતિગ્રામે

હાહાકારયુતા નરાઃ ।

શબ્દાધાતેન બધિરાઃ,

દૃષ્ટાઃ સર્પાદિભિસ્તથા ॥ ૧૨ ॥

(૧૨) જાણે સારાંચે નગરે અગન-
પિછોડી આઢી હોય તેવો દેખાવ થઈ રહ્યો
હતો. આગથી ભડભડ બળતા આ નગરના
પ્રજાજનોમાં હાહાકાર વરતાઈ રહ્યો હતો.
જાણે આકાશ તૂટી પડ્યું હોય તેવા ગગન-
ભેદી અવાજોથી કેટલાય માનવોના કાનના
પડદા તૂટી ગયા—બહેરા બન્યા. કેટલાએ
માનવીઓ પર વિષધર ભુજંગો—સર્પો તૂટી
પડ્યા અને મોતનાં તાડવ ખેલાયાં.

વે કૂટસન્નિવેશ ચારોં તરફસે જલને લગા,
ઝનકે નિવાસીલોગ હાહાકાર કરને લગે, કિત-

નેક લોગ વઙ્ગ જૈસે શબ્દોંકે આઘાતસે બધિર
હો ગયે થે ઔર કિતનેક લોગોંકો સર્પોંને
હસ લિયા થા ॥ ૧૨ ॥

નદ્યાઃ પૂરં સમાયાન્તં, દૃષ્ટ્વા ધાવન્તિ સર્વતઃ ।
વિષધૂમાદ્દૃષ્ટિહીના વિદ્યુત્પાતહતા અપિ ॥૧૩॥

(૧૩) પાણીનાં પૂર ચઢવાથી ગાંડા-
તૂર બની અને કટલાએ માનવીઓને પોતાની
ગોદમાં સમાવી લીધા. ધરતીએ જ્યાં જ્યાં
ભાગ આપ્યો ત્યાં ત્યાં પાણીની ધૂમરીઓ
લેતી ગાંડાતૂર બની દોડવા માંડી. માન-
વીઓના જીવ તાળવે ચોંટયા અને જીવ
બચાવવા આમ તેમ દોડવા માંડયા. ઝેરી
ગેસ—વાયુના કારણે કટલાએ જીવોએ પોતાની

આંખનાં રતન ગુમાવ્યાં. અંધાપો મેળવ્યો,
કાળજાં ફાડી નાખે તેવા કાટકા સાથે
વીજળીઓ પડતાં ફેટલાયે જીવોનો ધાણ
વળી ગયો. મોતના મોંમાં ધકકેલાયા.

નદીકે બાઢકો આતે દેશ્વ, મનુષ્ય ચારોં
ઔર માગતે થે, વિષધૂમસે કિતનેક મનુષ્ય
દષ્ટિહીન (અન્ધે) હો ગયે થે, કિતનેક બિજલી
ગિરનેસે મૂર્છિત હો ગયે થે ॥ ૧૩ ॥

પતન્તિ યત્ર તત્રાપિ જ્ઞાવાતહતા ગૃહઃ

મૂકમ્પચલિતાશ્ચૈવ જના ઉદ્વિગ્નમાનસાઃ ॥૧૪॥

(૧૪) ભયંકર આંધિ વાવાઝોડાને
કારણે ગગનચુંબી ઇમારતો ધરાશાયી-જમીન-

દોસ્ત થવા માંડી. ધરતી કંપને કારણે
ધરતી પગ નીચેથી સરવા માંડી. જાણે કે
ધરતી હિલોળે ચઢી. જન બચાવવા શું
કરીએ ? ક્યાં જઈએ ? માનવીઓનાં મન
ઉદ્વેગના હિલોળે હીંચવા માંડ્યાં.

સંજ્ઞાવાત (આંધી) સે કિતનેક ઘર જહીં
તહીં ગિર ગયે થે, કિતનેક ઘર મૂકમ્પસે ‘અવ
ગિરે તવ ગિરે’ એસે હો ગયે થે, સમી મનુ-
ષ્યોંકા ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન હો ગયા થા ॥ ૧૪ ॥

तमःप्रच्छन्नदेहाश्च

न पश्यन्ति परस्परम् ।

संजाता भयभीताश्च

जनाः कल्पान्तशङ्कया ॥ १५ ॥

(૧૫) ચારે તરફ ઘોર અંધકાર વ્યાપી રહ્યો છે. કોઈ કોઈનાં મોઢાં જોઈ શકાતાં નથી. માનવીઓનાં હૈયાં ભયથી ફફડી રહ્યાં છે. આ શું થવા જોઈ છે ? પ્રલય કાળનાં તાંડવ તો નહિ હોય ! પ્રલયની શંકાથી માનવીઓના જીવ તાળવે ચોંટ્યા. મોત હથેળીમાં દેખાવા માંડ્યું.

અંધકાર इतना बढ़ गया कि लोग एक दूसरेको परस्पर नहीं देख पाते थे । सभी मनुष्य कल्पान्त(प्रलय)की आशङ्कासे भयभीत हो गये थे ॥ १५ ॥

कश्चिदेको जनस्तत्र,

भीत्याऽऽयातो नृपान्तिके ।

उवाच करुणासिन्धो !

त्रायस्व शरणागतम् ॥ १६ ॥

(१६) डूँधतो तरणुं पकडे तेम
ज्यारै ज्यवानो डाई उपाय न रह्यो, तेवे
समये डाई जेऊ नगरजन लयलीत स्वइपे
विश्वसेन महाराज पासे आवीने करगरवा
मांडयो, “ हे कुरुणाना सागर ! आपने
शरणे आव्यो छुं.आ तांडवमांथी ज्यारो.”
जेम कही आंभोमां जोधार आंसु साथे
वीतेली कुरुण धटनाओ महाराज समक्ष
रजू करी.

उस कूट सन्निवेशका भयभीत कोई
एक मनुष्य, राजाके समीप आया, और बोला

હે કરુણાસિન્ધુ ! શરણાગતકી રક્ષા કરો એતા
કહ કર સબ વૃત્તાંત સુનાયા ॥ ૧૬ ॥

દેશવાર્તાહરાસ્ત્ર તદૈવ સમુપાગતાઃ ।

ઊચુર્નૃપાન્તિકે સર્વે દેશવિપ્લવદુર્દશામ્ ॥ ૧૭ ॥

સર્વત્ર ચ મહામારી મહાદુષ્ટા પિશાચિની ।

નિપાત્ય દુઃસ્વર્ગર્થે ચ જનાન્ ભક્ષતિ સર્વતઃ ॥ ૧૮ ॥

(૧૭—૧૮) ચારે તરફ જ્યારે પ્રલ-
યનાં તાંડવથી અંધાધૂંધી વ્યાપી ગઈ
હતી, તેવે સમયે દેશ દેશના રાજદૂતો
એકી શ્વાસે મહારાજ વિશ્વસેન સમક્ષ
દોડી આવ્યા. અને રાજાને દેશવ્યાપી
વિપ્લવની દુર્દશાની કહાણીને તાદશ
ચિતાર આપવા માંડ્યો: “ હે મહારાજ !

ચારે તરફ આ પ્રલયનાં તાંડવ તો મચી રહ્યાં છે, તે હજી ઓછું હોય તેમ પિશાચિની સ્વરૂપ, મહા દુષ્ટા એવી મહામારી—મરકીનો રોગચાળો ચારે તરફ ફેલાઈ રહ્યો છે. પ્રજાજનો દુઃખની ઊંડી ખીણમાં ધકકેલાઈ રહ્યા છે. મરકીએ સાક્ષાત્ કાળ-દેવ—રાક્ષસ સ્વરૂપ ધારણ કર્યું છે, અને માનવીઓનો કાળિયો કરી રહી છે. મરકી આજે માનવભક્ષી બની ચૂકી છે. ”

उसी समय देशवार्ताहर (राज्यकी परि-स्थितिका समाचार लानेवाले दूत) भी वहां आये, और उन लोगोंने भी, देशमें जो विप्लव और दुर्दशाका साम्राज्य छाया हुआ

था उसका यथार्थ वर्णन किया । फिर उन दूतोंने राजासे कहा हे महाराज ! देशमें सर्वत्र महादुष्टा महामारी पिशाचिनी लोगोंको दुःखके गर्त(खडे) में डाल कर चारों तरफ से खा रही है, अतः इसका प्रतीकार आवश्यक है ॥ १७, १८ ॥

एतन्निशम्य वचनं भूपतिर्जनवत्सलः ।

विश्वसेनः कृपासिन्धुः प्रतिज्ञामकरोत्तदा ॥ १९ ॥

सर्वथानैव शान्तिः स्याद् यावत्काले प्रजासु च ।

चतुर्विधाशनं त्याज्यं

तावत्काले मया ध्रुवम् । २० ।

(१९) प्रञ्ज्जनोने पोताना प्राणु
सम वडाता गणुता जेवा, उरुणाना

સાગર વિશ્વસેન રાજાનું હૈયું આ સર્વ
હકીકત સાંભળતાં દ્રવી ગયું, કાળજી
કંપી ઊઠ્યું, અને તે જ વખતે તેમણે
પ્રતિજ્ઞા કરી.

(૨૦) “જ્યાં સુધી મારા પ્રજા-
જનોની અશાન્તિ દૂર ન થાય ત્યાં સુધી
મારે ચારેય પ્રકારનાં અન્નપાણીનો ત્યાગ!
—આ છે મારી અચળ પ્રતિજ્ઞા !”

દૂતોંકા यह वचन सुनकर प्रजावत्सल,
करुणाके सागर राजा विश्वसेनने यह प्रतिज्ञा
की कि जबतक प्रजामें सर्वथा शान्ति नहीं
होगी तबतकके लिये मैं चारों प्रकारके आहा-
रका परित्याग करता हूँ ॥ १९, २० ॥

आगतस्तत्र देवेन्द्रस्तदैव चलितासनः ।

उवाच नृपतिं राजन् ! कष्टं किं तव विद्यते ॥ २१

(२१) जयां महाराज्ये प्रतिज्ञा
करी, डे तुरत ज धेन्द्रनुं धन्द्रासन यलाय-
मान थयुं. ते ज वप्पते धेन्द्र, राज समक्ष
पधार्या अने पूछ्युं, “ हे राजन् ! आपने
अंवु ते शुं दुःख आवी पड्युं छे डे
आपने अनशन करवुं पड्युं ? ”

राजाकी इस प्रतिज्ञा से देवेन्द्रका आसन
चलित हो गया और वे राजाके समीप आये
और कहने लगे—हे राजन् ! आपका क्या कष्ट
है जो आपने चारों प्रकारके आहारका परि-
त्याग किया ? ॥ २१ ॥

વિશ્વસેન નૃપઃ સર્વ દેવેન્દ્રં વૃત્તમબ્રવીત્ ।

દુઃસ્વવાર્તા સમાકર્ણ્ય, સુરેન્દ્રઃ પ્રાહ ભૂપતિમ્ ॥૨૨॥

વૃથા કિં સ્વિદ્યસે રાજન્ ! સન્નિધિર્યસ્ય સંનિધૌ ।

ચિન્તામણિઃ સુરતરુઃ કામધેનુશ્ચ વર્તતે ॥ ૨૩ ॥

સર્વશક્તિયુતો દેવઃ સર્વશાન્તિકરઃ પ્રભુઃ ।

જનન્યા ઉદરે રાજન્ ! વર્તતે ભવને તવ ॥૨૪॥

(૨૨) વિશ્વસેન રાજાએ ઇન્દ્રને
પોતાના પ્રજાજનોને માથે ખેલાઈ રહેલા
તાંડવનો ચિતાર કહી બતાવ્યો. આ દુઃખનો
ચિતાર સાંભળી ઇન્દ્રે વિશ્વસેન મહારાજાને
જણાવ્યું કે.....

(૨૩) “ હે રાજન્ ! વૃથા ખિન્ન
શા માટે થાવ છો ? જની પાસે ભંડાર

છે, ચિંતામણિ છે, કટપવૃક્ષ છે અને
કામધેનુ વર્તે છે, તેને ચિન્તા કરવાની
શી જરૂર છે ? ”

(૨૪) “ સર્વશક્તિમાન દેવ, સર્વત્ર
શાંતિ જ શાંતિના કારક, એવા શાંતિનાથ
પ્રભુ, તો તમારા રાજમહેલમાં તમારી
રાણીના કૂખે ગર્ભમાં બિરાજે છે. પછી
હે રાજન્ ! તમારે વૃથા ચિંતા શા માટે
કરવી. ? ”

દેવેન્દ્રકા યહ વચન સુનકર વિશ્વસેન
રાજાને ડનકો દેશકી દુર્દશાકા સબ સમાચાર
સુનાયા । દુઃસ્વવાર્તા સુનકર દેવેન્દ્રને રાજાસે
હસ પ્રકાર કહા—

हे राजन् ! जिसके पास चिन्तामणि,
कल्पवृक्ष और कामधेनु है, ऐसे आप व्यर्थ
ही क्यों खिन्न होते हैं ? क्योंकि हे राजन् ।
आपके भवनके अंदर अचिरारानी के कुक्षिमें
सर्वशक्तिसम्पन्न, सभीको शान्ति देनेवाले प्रभु
विराज रहे हैं ॥ २२-२३-२४ ॥

इत्युक्त्वा तत्र देवेन्द्रो मातृगर्भं गतं जिनम् ।
भावेन स्तोतुमारेभे, सर्वशान्ति प्रकाम्यया ॥२५॥

(२५) देवाधिदेव ईन्द्र आ प्रभाणु
ऊहीने पछी सर्वत्र शांति स्थपाय ते
सारु माताना गर्भमां रहेला जनेश्वर
शांतिनाथ भगवाननी स्तुति करवा लाग्या,

इस प्रकार राजाको आश्वासन देकर
 देवेन्द्रने सभी लोगों में शान्ति हो, इस काम-
 नासे मातृगर्भ स्थित जिन भगवानकी मान-
 पूर्वक स्तुति प्रारम्भ की ॥ २५ ॥

कर्पूरं शीतलं लोके, तस्मादपि च चन्दनम् ।
 ततश्चाप्यधिकश्चन्द्रस्तस्मादप्यधिको भवान् ॥ २६ ॥

लोकोत्तमो लोकनाथो, लोकप्रद्योतकारकः ।
 चक्षुर्दो मार्गदश्चापि धर्मदः शुद्धबोधिदः ॥ २७ ॥

अवधिज्ञानसंपन्नो भव्याब्जोद्बोध भास्करः ।
 जनानन्दकरः सर्व-शुद्ध धर्मप्रकाशकः ॥ २८ ॥
 चन्द्रमाश्रयते हर्तुमाकाशः स्वगतं तमः ।

તથા દુઃસ્વત્તમો હર્તુ

પ્રભો ! ત્વામાશ્રયે ધ્રુવમ્ ॥૨૯॥

સર્વસિદ્ધિપ્રદઃ સર્વ—સિદ્ધૌષધિ સમઃ પ્રભુઃ ।

સ્મૃતમાત્રો ભવાનત્ર

સર્વથા શાન્તિકારકઃ ॥ ૩૦ ॥

અજ્ઞાનતિમિરધ્વંસ—માનુમન્ કરુણાર્ણવ ।

આહ્લાદને શરચ્ચન્દ્ર !

સાઽન્દ્રશાન્તિકરો ભવ ॥ ૩૧ ॥

(૨૬) “ હે શાંતિજીનેશ્વર ! આ લોકને વિશે કપૂર શીતલ છે. તેનાથી પણ અધિક શીતળતા ચંદનમાં છે. તેનાથી પણ અધિક શીતળતા ચંદ્રમાં છે. અને

ચંદ્રથી પણ અધિક શીતળતા, હે પ્રભુ !
આપનામાં છે. ”

(૨૭) “ હે પ્રભુ ! આપ લોકને
વિશે ઉત્તમ છો. આપ લોકના નાથ છો.
આપ લોકને વિશે પ્રકાશના કરનાર
છો. આપ જ્ઞાન ચક્ષુના દેનાર છો. આપ
પથદર્શક છો. આપ ધર્મ દેનાર છો.
શુદ્ધ બોધબીજ સમક્ષિતા આપનાર છો. ”

(૨૮) “ હે પ્રભુ ! આપ અવધિ જ્ઞાન-
વાળા છો. કમળને વિકસિત કરનાર સૂર્ય
સમાન આપ, ભવ્ય જીવોના આત્માને બોધ-
દારા. વિકસિત કરનાર ભારકર—સૂર્ય સમાન
છો. સર્વ મનુષ્યોને આનંદકારક છો. આપ

શુદ્ધ ધર્મનો પ્રકાશ રેલાવનારા છો. ”

(૨૯) “ ચારે તરફ જ્યારે અંધકાર-
નું સામ્રાજ્ય વ્યાપ્યું હોય ત્યારે આકાશ
પોતાના અંધકારને મટાડવા માટે ચંદ્રનો
આશ્રય લે છે, તેવી રીતે જ્યારે અમારા
ઉપર દુઃખનો ઘોર અંધકાર છાઈ રહ્યો છે,
તેવે સમયે હે પ્રભુ ! અમે નિશ્ચિત મને
આપનો આશ્રય લઈએ છીએ. ”

(૩૦) “ હે પ્રભુ ! આપનું સ્મરણ
માત્ર, સર્વ પ્રકારની સિદ્ધિનું દાતા છે, સર્વ
પ્રકારની સિદ્ધિ ઔષધિ સમાન છે. તેમજ
સર્વથા શાંતિ ઉપજવનાર છે. ”

(૩૧) “ હે શાંતિ જીનેશ્વર ! અજ્ઞા-

नना अंधकारने तोडनार आप सूर्य समान
छो. शरदपूणिमाना चंद्रनी भाईक आप
मनने प्रकुदिलत करनार छो. हे कण्ठाना
सागर ! आप भडेर करे अने सर्व
जिवोने शाता उपजवो. ”

देवेन्द्रने जो स्तुतिकी वह इस प्रकार है
लोकमें कपूर शीतल है, उससे भी शीतल
चन्दन है, चन्दनकी अपेक्षा अधिक शीतल
चन्द्र हैं, और चन्द्रसे भी शीतल आप हैं ।
हे भगवन् ! आप लोकोत्तम (लोकमें सर्वश्रेष्ठ)
हैं, लोकनाथ है, लोकको प्रकाशित करने-
वाले हैं, ज्ञानचक्षु देनेवाले हैं मार्ग देनेवाले
हैं, धर्म देनेवाले हैं, और शुद्ध बोधि देनेवाले

हैं । हे भगवन् ! आप अवधिज्ञानसे युक्त हैं, भव्यरूपी कमलोंको विकसित करनेमें आप भास्कर हैं, सभी मनुष्योंको आनन्द देनेवाले हैं, सर्वविशुद्ध धर्मके प्रकाशक हैं. हे प्रभो ! जैसे स्वगत अन्धकारको दूर करनेके लिये आकाश चन्द्रमाका आश्रयण करता है उसी प्रकार दुःखरूपी अन्धकारको दूर करनेके लिये हम आपका आश्रयण करते हैं । हे भगवन् ! आप सभी सिद्धियोंके दाता हैं, आप समस्त सिद्धौषधिके समान हैं, आप तीनों लोकके प्रभु हैं, हे भगवन् ! आप स्मरणमात्रसे इस संसारमें लोगोंके लिये सभी प्रकारसे शान्तिकारक हैं । हे भगवन् ! आप अज्ञानरूपी

अन्धकारके नाश करनेमें सूर्यरूप है, आप
करुणाके समुद्र है, आप प्रजाओंको आह्लादित
करने में शरच्चन्द्ररूप हैं, ऐसे आप हे भग-
वन् ! लोकमें पूर्ण शान्तिकारक होवे ॥ २६
२७-२८-२९-३०-३१ ॥

एवं स्तुत्वा जिनं शक्रस्तन्मातरमवोचत ।

स्मरणात्मकमिदं स्तोत्रं

ब्रूहि मातः स्वयं शुभम् ॥ ३२ ॥

(३२) आ प्रभाणि छ श्लोकाथी शान्ति-
जनैश्वरनी स्तुति करीने छन्द मङ्गलराज
लगवानना माता समक्ष आग्या. आ
स्तोत्रनुं स्मरण करीने कह्युं के, " हे माता,
आ शुभ स्तोत्र आपना स्वमुখে बोलो,

नथी साराये लोकभां शांति न शांति प्रवर्ते.”

इस षट्श्लोकी प्रकार जिनेन्द्र भगवान्की स्तुति करके देवेन्द्रने जिनेन्द्रकी माता अचिरा-
देवी से कहा—हे माता ! इस स्मरणरूप
स्तोत्रको आप स्वयं पढ़ें ॥ ३२ ॥

इन्द्रस्य वचनाद्देवी प्रासादमभिरुह्य सा
स्तोत्रं पठति भावेन

विलोक्य परितस्तदा ॥ ३३ ॥

सकृत्पठनमात्रेण, शान्तिर्जाता च सर्वथा

सर्वत्र सर्वलोकेषु,

ऋद्धिः सिद्धिश्च संपदः ॥ ३४ ॥

(३३) आ. प्रमाणे छन्द भट्टाराज्जनां
वयने सांख्यतां, भगवाननां माता राणी

અચલા દેવી મહેલ પર ચઢ્યા અને પ્રજા-
જનોનાં દુઃખ પરિતાપ દૂર કરવા શુદ્ધ
ભાવથી આ સ્તોત્રની આરાધના કરવા
માંડયાં.

(૩૪) જ્યાં રાજમાતાએ આ સ્તોત્ર
ભણવા માંડયું કે મહામારી-મરફી, આગ,
શિલાવૃષ્ટિ, ભૂકંપ, સર્પવૃષ્ટિ, વૃશ્ચિકવૃષ્ટિ,
નદીઓના પ્રલયનાં તાંડવ જગાવતાં પૂર,
આંધિનાં તોફાન, ઝેરી વાયુ, વજ્રપાત, વિજ-
પાત, વીજળીના ભયંકર કાટકા, આ સર્વ
ઉપદ્રવો એક પછી એક પલાયમાન થઈ
ગયા. સર્વત્ર ત્રણે લોકમાં શાંતિનું સામ્રાજ્ય
સ્થપાયું અને રિક્કિસિક્કિ અને સંપત્તિ-
નો પ્રાદુર્ભાવ થયો.

इन्द्रका वचन सुनकर अचिरा देवीने,
राजभवनके ऊपर चढ़कर चारों तरफ देखकर,
भावपूर्वक इस स्तोत्रको पढ़ा । इस स्तोत्रके
मात्र एकबार पढ़नेसे आधि, व्याधि, उपाधि
मिट कर सर्वत्र पूर्ण शान्ति हो गयी, सभी
लोग ऋद्धि, सिद्धि और सम्पत्ति से युक्त हो
गये ॥ ३३, ३४ ॥

यदापुनर्जिनेन्द्रस्य जन्मकालः समागतः ।
तदा समस्तलोके च

स्वयं शान्तिरुपागता ॥ ३५ ॥

(३५) ते पछी इरीथी ज्यारे प्रभु
शांतिनाथनो जन्मकाण आये, तयारे
समस्त लोकांमां यारे तरई शांति ज शांति

છવાઈ રહી. જાણે કે પ્રભુ પોતે જ શાંતિના
રૂપમાં પધાર્યા છે.

ફિર જબ ભગવાન્ જિનેન્દ્રકા જન્મકાલ
આયા, ઉસ સમય સકલ જગતમે સ્વયમેવ
શાન્તિ છા ગયી ॥ ૩૫ ॥

પ્રસન્નાશ્ચ જનાઃ સર્વે

મજ્જલં ચ ગૃહે ગૃહે ।

જાતે શાન્તિકરે શાન્તિ—

નામકે ષોડશે જિને ॥ ૩૬ ॥

(૩૬) ભગવાનનો જન્મ થતાં જ માનવ
માત્રમાં પ્રસન્નતા વ્યાપી ગઈ. ઘેર ઘેર
મંગળ વરતાઈ રહ્યું. જન્મ થતાં જ ચારેકાર
શાંતિનું સામ્રાજ્ય સ્થપાયું. તેથી કરીને

ॐ सोऽणमा ज्ञानवरतुं नाम शान्तिनाथ
राज्यवाभां आव्युं.

शान्ति करनेवाले शान्तिनामक सोल-
हवें जिनेन्द्रके जन्म लेने पर तो सभी मनुष्य
प्रसन्न हो गये, घर घरमें मङ्गल छा गया
॥ ३६ ॥

शान्तिस्मरण पाठेन सर्वत्र शुभ भावतः ।
ऋद्धिः सिद्धिः सुखं संप-

ज्जायते सर्वमङ्गलम् ॥ ३७ ॥

(३७) ॐ कोटि लवीजन शुभ आवथी
आ शान्तिदायक शान्ति स्मरण स्तोत्रतुं
पठनअध्यन करशे तेने रिद्धि, सिद्धि, सुख
संपत्ति तेमज सर्व भांगदयनी प्राप्ति थशे.

श्री शान्तिस्मरण समाप्त
 श्री अद्भुत नवस्मरण संपूर्ण

शुभ भावनासे इस शान्तिस्मरणका
 करनेसे मनुष्यको सर्वत्र ऋद्धि, सिद्धि,
 संपत्ति और सभी प्रकारके मङ्गल प्राप्त
 हैं ॥ ३७ ॥

॥ इति शान्तिस्मरणसंपूर्ण ॥ ९ ॥
 ॥ इति श्री अद्भुत नवस्मरणसंपूर्ण ॥

ૐશ્રી

પદ્મ પ્રભુના નિત્ય, ગુણ ગાયા કરો,
 આપના તન મન, જનને નમાયા કરો...પદ્મ૦ ટેક..
 સર્વને સંસારમાં, એક ધર્મનો આધાર છે,
 થાય બેડાપાર જનના, જપથી નિર્ધાર છે,
 એવું જાણીને દિલમાં, વસાયા કરો...પદ્મ૦ ટેક
 પદ્મની સુવાસના, ચારે તરફ છાઈ રહી,
 ગુણ પારાવાર છે, જનતા સહુ ગાઈ રહી,
 નિજનંદ જનંદ, વધાયા કરો...પદ્મ૦ ૨
 માત સુષમા તાત, શ્રીધર કમલ ચિહ્ન વિશાલ છે
 ગૈવેગથી આવ્યા વ્યવી, પ્રભુવર્ણ સુંદરલાલ છે,
 ભાવી ભવ્યોનાં ભાગ્ય, સવાયા કરો...પદ્મ૦ ૩
 લાખ પૂરવ ત્રીસ આયુ સાર્ધ દ્વિશત કાય છે.
 આદિગધર જ્ઞાતિ સુવ્રત કૌશંબીધામ સુહાય છે.
 દયા કરી જીવેને બચાયા કરો...પદ્મ૦ ૪
 જ્ઞાનચક્ષુ આપનારા, પૂજ્ય ઘાસીલાલ છે,
 શાંત જૈનાચાર્યનો સુનમ્ર નાનો બાળ છે,
 કરુણાસિંધુના હૈયે, રમાયા કરો...પદ્મ૦ ૫

ધન્ય વીરમગામ, હર્ષાનંદનો ભંડાર છે,
સહસ્ર દો છ સાલ, માંહિ ધર્મનો જયકાર છે,
મુનિ કહે કનૈયા, જીન ધ્યાયા કરો...પદ્મ ૬

—પ્રભાતિ સ્તવન—

ઉઠો ઉઠો મન જગો જગો, અવસર આછો આયો રે,
જગમગ જોત જગી અપને ઘર, કૈસો આનંદ છાયો રે,
કાયા મેરુ જિન નંદનવન, ગુણ સુરતરુ કી છાયા રે,
સિદ્ધ સુખોંકી અનન્ત લહર, જહાં મોક્ષપુરી સિધાયા રે,
આત્મસ્વરૂપી માન સરોવર, ગુણ કમલ વિકસાયા રે,
ચેતન હંસો કરે કિલોલા, રોમ રોમ હુલસાયા રે,
મીઠેપનમેં મિસરી મીઠી, તિણ સું અમૃત સુહાયા રે,
મિસરી, અમૃત દોંતોં સે ભી, નામ જિણન્દ સવાયા રે,
શુભ ઘડી શુભ વેલા શુભ પલ, જીન શુભ ધ્યાન લગાયા રે,
શુભ ભાવના શુભ શ્રેણી ચઢ, શુભ કેવલ પદ પાયા રે,
લાખ આનંદ મેરે નરભવ ઉત્તમ, કોડ આનંદ જીનરાય,
અનંતઆનંદમેરે જીનસ્વરૂપલખ, તનમનમુજહર્ષાયા રે,

લાખમંગલમેરેજિનલક્ષકરકે, કોડ મંગલ જિન ધાયા રે,
અનંતમંગલમેરેરોમરોમમેં, જિનગુણસુખ પ્રગટાયા રે ૬
અક્ષય સ્વરૂપી મેરી આત્મા, અક્ષય લવનમેં ગાયા રે. ૭

—વિદ્નહર પાર્શ્વપ્રભુની સ્તુતિ—

(પદ્મ પ્રભુના નિત્ય ગુણ ગાયા કરો) એ રાગ.
પાર્શ્વ પ્રભુનું ધ્યાન લગાયા કરો.
પ્રભુલક્ષિતમાં ચિત્ત જમાયા કરો. [૨] ટેક.
પાર્શ્વના પ્રસંગથી, જિમ લોહ કંચન થાય છે,
પરમ પદના ધ્યાનથી, નિજ આત્મજ્યોત જગાય છે,
અહિ ચિહ્ન જિનેશ્વર ધ્યાયા કરો ... ૧
નાગ બળતો દેખીને, શરણો દિયો નવકારનો,
પદ પામિયો ધરણેન્દ્રનો, તે દેવના અવતારનો,
અજદિનંદ ગણી ગુણ ગાયા કરો... ૨
પાર્શ્વ જિનના જપથી, સૌ પાપપૂંજ વિલાય છે,
કલ્પતરુ સમ ઇષ્ટ વસ્તુ, સહેજમાં પ્રગટાય છે,
એવા જિનવર હૈયે વસાયા કરો... ૩

દેશ કાશી વર્ષ શત ૧૦૦ બાણારસી સુહાય છે,
અશ્વસેન નૃપ માત વામા નલિણી કાય છે

દશમા સ્વર્ગથી આવી નિહાલ કરો...૪
પૂજ્ય ધાસીલાલ ગુરુનો, છત્ર શિર ત્રિકાળ છે,
નામ જપતાં હરધડીયે, વરતે મંગળમાળ છે,
સાની ગુરુને શીશ, નમાયા કરો...૫
સહસ્ર દો છ સાલની, દિવાળી મંગળવાર છે,
સંઘ ધોરાળુ કર્યો, જિન ધર્મનો જયકાર છે,
કહે કાન, (કન્હૈયા) અમી રસ પાયા કરો.

વાસુપૂજ્ય—પ્રભુની સ્તુતિ

(તર્જ-પદ્મ પ્રભુના નિત્ય ગુણ ગાયા કરો)

વાસુપૂજ્ય હૃદય નિત્ય વાસ કરો

રટી નામ જીણુંદ ભવપાર તરો.

અજળ રસમય નામ તારું, લેત મન હર્ષાય છે.

અમર પદ પામે ખરું આનન્દ રંગ વર્ષાય છે.

પ્રભો જન્મ મરણનાં દુઃખ હરો...૧

ધ્યાન ધરવા માતથી, નિજ આત્મનિર્મળ થાય છે,
સૂર્યનાં કિરણો પડ્યે, અંધકાર નાસી જાય છે.

મહિષ ચિહ્ન જિન'દ મન ધ્યાન ધરો...૨
તાત છે વસુરાય તવ, માતા જયાના લાલ છે
ચંપાપુરી નગરી મનોહર, સમદશી ધનુખાલ છે,
નિજ જાણી સેવક ખેડા પાર કરો...૩

પામી કેવલ જ્ઞાન દર્શન, આપ જિન જિનવર બન્યા
ભવ્યને ઉપદેશ આપી, સર્વના તારક બન્યા,
તરણુતારણ બિરદને આપ ધરો...૪

બાલપણમાં માર્ગ આપી, જ્ઞાનદાતા આપ છો,
પંચદશ ભાષા ભણ્યા, ગુણખાણ રત્ન અમાપ છો,
ઘાસીલાલ ગુરુને વધાયા કરો...૫

જેતપુર શ્રી સંધને, જિનરાજનો આધાર છે,
ૐશ્રી જિન નામ સાથે જપતાં જય જયકાર છે.
મુનિ કહે કનહૈયા, જિન ધ્યાયા કરો...૬

શાંતિ પ્રભુની પ્રાર્થના

શાંતિ જીણુંદ જપતે જપ, લીલા લહેર કરાવે,
 મુજ ઘર મંગલાચાર, મારું મન હર્ષાવે . ટેક
 ઉઠી પ્રભાતે જીનવરદેવ, જપતે જો મન ભાવે,
 જપતે હિ આનંદ હોય, જ્યોં અમૃત રસ પાવે
 માન સરૌવર જીનવરનામ, જીનગુણ કમળ કુલાવે,
 અક્ષય સુખકી મહેક,^૧ મુજ મન મોદ^૨ નમાવે
 શાંતિ નામ મુજ આંગણેમેં આનંદ છાવે,
 પગ પગ પ્રગટે નિધાન, મેરી ચિંતા જાવે,
 શાંતિ જીણુંદ ધર ધ્યાન, શિવપુર નગર સીધાવે,
 અખંડ સુખોંકી લહેર, જ્યોતિરૂપ સોહાવે...શાંતિ.
 દેશ દેશકે ભૂપ અગતે, પાખી પલાવે,
દામનગર ઘાસીલાલ, દિવાળી દિન ગાવે...શાંતિ.

૧. મહેક—સુગંધ, ૨. મોદ—આનંદ.



પ્રભાતિ સ્તવન

સભી છોડ મન જીનવર લજ લે,
 પ્રાતઃ સમય સુખકારી. ॥૧૮૬॥
 કામ તુઝે હૈ પ્રભુ ધ્યાન કા,
 ઔર કામ દે ટારી.
 ધીરજ ધર, મત કર વિષયોસે,
 ખડા રહે પ્રભુ દ્વારી. ॥ ૨ ॥

કુમુદરૂપ તું વિકસિતહો જા,
 જિનેન્દ્ર ચંદ્ર હૈ ભારી,
 આત્મ સ્વરૂપ સુગંધી પ્રગટે,
 મહિમા અપરંપારી. ॥ ૨ ॥

ક્રોધી ભુજંગ ચંડકોશિક ભી,
 અતિ વિપ્રમ વિષધારી,
 પ્રભુ સંગતસે સુરપદ જાયા,
 હુંવા એકા ભવતારી ॥ ૩ ॥

મિદ્ધિ પુષ્પકી સંગતિ પાકર,
 હોય સુગંધી ધારી,
 યદ્યપિ દોષી તું હૈ ધ્યાનબલ,
 હોજી વિગત વિકારી. ॥ ૪ ॥
 જીવ સમુદ્ર બુદ્ધિ સીપ સમ,
 ભાવ સ્વાતિ હિતકારી.
 ધ્યાનવૃષ્ટિ નિજ ગુણ મુક્તાક્ષી,
 નિપજે અનંત અપારી ॥ ૫ ॥
 બ્રમર ધ્યાનસે કીટ કીટપન
 કરતા દૂર નિવારી.
 વૈસે ધ્યાનસે પ્રભુપદ પાકર,
 પહુંચે મોક્ષ મોઝારી. ॥ ૬ ॥
 પૂજ્ય હમારે શ્રી લાલજી
 ગુણિગણ રત્ન ભંડારી.
 ધાસીલાલ અબ, શરણે આવ્યા,
 ભજવલ સે દો તારી. ॥ ૭ ॥

ગુજરાતી સાહિત્યનાં ઐતિહાસિક પ્રકાશનો

વીરની વાતો ૧ થી ૫ તા. પો. અડાલજી	૧૦૫-૦૦
વીરાંગનાની વાતો ૧-૨	૨૪-૨૫
ખાંડાના ખેલ	૧૧-૫૦
નરખંડા	૧૦-૦૦
વીર જગદેવ	૬-૦૦
કાઠિયાવાડની દંતકથાઓ	૧૧-૦૦
દંભી દુનિયા	૨૦-૦૦
પ્રેમપ્રભાવ	૯-૫૦
સૌરાષ્ટ્રની પ્રેમકથાઓ	૧૫-૦૦
યુગપુરુષ પતંજલિ જેઠાલાલ ત્રિવેદી	૨૨-૦૦
ગ્રીક રાજકન્યા	૧૪-૨૫
ભગવાન પતંજલિ	૧૪-૦૦
પુણ્યમિત્ર કલકી	૧૪-૦૦
અવંતીપતિ વિક્રમ	૧૪-૦૦

મહારાજ ચક્રપાલિત નૌતમકાન્ત સા. વિ.	૧૩-૦૧
સેનાપતિ ભટ્ટાર્ક ૧-૨	૨૪-૫૮
સમ્રાટ શાલિવાહન	૧૫-૫૦
રા' ગજરાજ ધનશંકર ત્રિપાઠી	૧૦ ૦૦
જય ચિતોડ હરિલાલ ઉપાધ્યાય	૧૫-૦૦
ચિતોડની રણગજના	૧૫-૦૦
મેવાડનો કેસરી	૧૬-૫૦
મેવાડના મહારથી	૧૬-૦૦
શાર્યપ્રતાપી મહારાણા પ્રતાપ	૧૨-૦૦
દેશગૌરવ ભામાશાહ	૧૪-૨૫
મેવાડની તેજછાયા	૨૦-૦૦

શ્રી લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર,
ગાંધીમાર્ગ, અમદાવાદ.

શ્રી ગુજરાતી સાહિત્યનાં ઉત્તમ પ્રકાશન

જીવનનો ઝંકાર	શ્રી પુષ્કર મુનિજી	૯-૦૦
પુષ્કરપ્રસાદી કથા' ૧૭૧ શ્રેણી ૧-૫,,		૭૫-૦૦
સફળ જીવન	,,	૭-૫૦
ભગવાન મહાવીરકાર	શ્રી 'પુષ્કર' ૧૭૧, ૪૦-૦૦	
એક અનુસાદી કથા' ૧૭૧ શ્રેણી ૧-૫,,		
ધર્મ અને		-૦૦
ચિંતનની	,,	
મહાવીરકાર	શ્રી 'પુષ્કર' ૧૭૧, ૪૦-૦૦	
બુદ્ધિનો ચર	૧૭૧ શ્રેણી ૧-૫,,	
ખેલતાં ચિત્રો		-૦૦
વિચાર રેખા	શ્રી 'પુષ્કર' ૧૭૧, ૪૦-૦૦-૫૦	
આદર્શ ગૃહસ્થાશ્રમ	મુનિશ્રી સંતબાલજી	૧૦-૫૦
જીવનમાં સ્વર્ગ અને નરક	મુનિ નેમીચંદ્ર	૪૦-૦૦
જગદંબાના પત્રો ૧-૨	,,	૨-૦૦
બીન માંગે મોતી મીઠે	શ્રીમન્નારાયણજી	૫-૫૦
ભગવાન મહાવીર	ધીરજલાલ ગજજર	૩-૦૦
વધુ માટે વિસ્તૃત સૂચીપત્ર મંગાવો.		

શ્રી લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર, ગાંધીમાર્ગ, અમદાવાદ.